फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 100 प्रभात जयपुर, सोमवार 11 नवम्बर, 2024 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

Are our Women Doctors Safe?

She was on the brink of informing the people and media about all this. Was she, therefore, a victim of preplanned murder?

For a happy life, don't forget hedonism

The pursuit of hedonic and long-term goals needn't be in conflict with one another.

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने दौसा विधानसभा उपचुनाव में भाजपा प्रत्याशी जगमोहन मीणा के समर्थन में रोड शो किया।

उपचुनाव : भाजपा फायदे में रहेगी, कांग्रेस निर्दलीयों में फंसी

चार सीटों के त्रिकोणीय संघर्ष से कांग्रेस झटका खाती नजर आ रही है

- देवली-उनियारा में निर्दलीय नरेश मीणा के रोड शो ने सबको अचम्भित कर दिया।
- दौसा में जबदस्त जातिगत लामबंदी है। झुंझुनूं में गुढ़ा को मिलने वाले मुस्लिम व अनुसूचित जाति के वोट, निर्णय को प्रभावित करेंगे।
- खींवसर में हनुमान बेनीवाल व आर.एल.पी. भारी परेशानी में। रामगढ़ में सीधा संघर्ष। चौरासी, में बी.बी.ए.सी. भारी लगती है, सलुम्बर में सहानुभूति का लाभ मिलेगा भाजपा को।

जयपुर 10 नवंबर। राजस्थान में सात विधानसभा सीटों पर होने जा रहे उपचुनाव में आज प्रचार का शोर थम जाएगा, लेकिन प्रचार समाप्त होने से पहले सातों विधानसभा सीटों पर क्या समीकरण बन रहे हैं, इसकी हल्की झलक देखने को मिल रही है। यदि अंतिम समय में बहुत कुछ नहीं बदला, तो परिणाम भी इसके इर्द-गिर्द ही रहने वाले हैं। ऐसे में एक बात तो बिल्कुल तय है कि सात विधानसभा सीटों में भाजपा फायदे में रहने वाली है और कांग्रेस को नुकसान होना बिल्कुल तय है, क्योंकि चार सीटों पर त्रिकोणीय संघर्ष ने कांग्रेस के लिए नुकसान का सौदा तय कर दिया है। दो सीटों पर जहां निर्दलीयों ने कांग्रेस को बड़ा नुकसान कर दिया है, वहीं, दो सीटों पर कांग्रेस मुकाबले में बने रहने के लिए संघर्ष करती नजर आ रही है।

इस समय राजस्थान में सभी नजरें देवली - उनियारा और दौसा सीटों पर टिकी हुई हैं। इन दोनों सीटों पर सबसे दिलचस्प मुकाबले हो रहे हैं। देवली - उनियारा में शुरुआती तौर पर निर्दलीय नरेश मीणा को कांग्रेस ज्यादा भाव नहीं दे रही थी, लेकिन मीणा समर्थकों की युवा टीम ने जबरदस्त चुनाव प्रबंधन किया और चुनाव प्रचार समाप्त होने के एक दिन पहले बड़ा रोड शो किया। देवली - उनियारा की जनता के लिए अपने आप में यह पहला अनुभव था कि क्या कोई निर्दलीय इस तरह से चुनाव को बेहद रोचक बना देता है। यहां मुख्य मुकाबला नरेश मीणा और भाजपा के राजेंद्र गुर्जर में होगा या कांग्रेस के के.सी. मीणा और भाजपा में होगा, यह मीणा मतदाता तय करेंगे। मीणा मतदाता ज्यादा संख्या में जिसके साथ जाएंगे, वही मुख्य मुकाबले में रहेगा। जिस तरह का माहौल नरेश मीणा के लिए देखा जा रहा है, अगर वह वोटों में तब्दील हुआ, तो कांग्रेस बड़ी परेशानी का सामना कर सकती है। यहां कांग्रेस के लिए सचिन पायलट, गोविंद सिंह डोटासरा और अशोक गहलोत सहित कई नेता प्रचार कर चुके हैं। वहीं, भाजपा के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ के अलावा मंत्री कन्हैयालाल चौधरी, हीरालाल नागर प्रचार में पूरी ताकत लगा चुके हैं।

दौसा की बात करें, तो यहां सीधा-सीधा मुकाबला वैसे तो कांग्रेस के डी.डी. बैरवा और भाजपा के जगमोहन मीणा के बीच है, लेकिन चुनाव में सचिन पायलट और डॉ. किरोड़ी लाल मीणा की प्रतिष्ठा दांव पर लगी है। यही कारण है कि किरोड़ी लाल मीणा एक एक मतदाता तक स्वयं पहुंच रहे हैं। सचिन पायलट ने भी यहां दो बार में 18 जनसभाएं और नुक्कड़ सभाएं की हैं। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने यहां रोड शो किया है। यहां जातिगत लामबंदी जबरदस्त देखी जा रही है और माना जा रहा है कि सामान्य वर्ग जिस के साथ में जाएगा, वही पार्टी जीत दर्ज करेगी।

झुंझुनू विधानसभा सीट उपचुनाव में राजेंद्र गुढ़ा ने दोनों पार्टियों के समीकरण बिगाड़ दिए हैं। राजेंद्र गुढ़ा राजपूत वोट अपने साथ ले जाकर भाजपा के राजेंद्र भामू के लिए परेशानी खड़ी कर रहे हैं, वहीं, मुस्लिम और अनुसूचित जाति के वोटों में गहरी पैठ बनाकर गुढ़ा ने कांग्रेस के अमित ओला के लिए बड़ी परेशानी खड़ी कर दी है। यदि भीड़ के अनुरूप मुस्लिम युवाओं का वोट राजेंद्र गुढ़ा के पक्ष में गया, तो यहां इतिहास बदलना तय है।

खींवसर में हनुमान बेनीवाल और आर.एल.पी. को पहली बार इतनी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। इसका कारण यह है कि यहां त्रिकोणीय संघर्ष में राजपूत उम्मीदवार नहीं है और यह बात भाजपा के पक्ष में जा रही है। अब यदि हनुमान बेनीवाल के वोटों में जरा सी भी सेंध लगती है, तो विधानसभा में आर.एल.पी. शून्य पर चली जाएगी और भाजपा के रेवंत राम इतिहास रच देंगे। हालांकि कांग्रेस ने भी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भजनलाल ने दौसा में रोड शो, रामगढ़ में जनसभा की

उन्होंने कहा, ई.आर.सी.पी. में अलवर का नाम जोड़ दिया, यहां की धरती सोना उगलेगी

- भाजपा अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि जनता के उत्साह और अपार स्नेह को देखते हुए सातों सीट भाजपा जीतेगी।

जयपुर, 10 नवंबर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने रविवार को दौसा तथा रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी के समर्थन में प्रचार-प्रसार किया। दौसा में भाजपा प्रत्याशी जगमोहन मीणा के समर्थन में बरकत स्टैच्यू से गांधी तिराहे तक आयोजित शानदार रोड शो में भजनलाल शामिल हुए, वहीं रामगढ़ विधानसभा के बदौडा मेव क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी सुखवंत सिंह के समर्थन में मुख्यमंत्री ने विशाल जनसभा को संबोधित किया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि रामगढ विधानसभा का नाम भी अगर कोई दिन में 5-10 बार लेगा तो वो भी तर जाएगा। भाजपा ने ई.आर.सी.पी. में अलवर का नाम जोड़ दिया, जल्द ही अलवर की धरती भी सोना उगलेगी। भाजपा ने जनता से जो वादे किए उनको पूरा करने की दिशा में लगातार कार्य कर रही है। भाजपा सरकार ने किसानों को सम्मान निधि बढ़ाकर दी, किसानों के लिए ई.आर.सी.पी. और यमुना जल समझौता किया। सन् 2027 तक बिजली के क्षेत्र में राजस्थान को आत्मनिर्भर बनाया जाएगा और किसानों को दिन में बिजली देने का काम भी किया जाएगा।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि कांग्रेस पार्टी की सोच हमेशा दलित विरोधी रही है। कांग्रेस ने बाबा साहब को भारत रत्न से वंचित किया, जबकि भाजपा सरकार ने भारत रत्न देने के साथ ही बाबा साहब के पंच तीर्थ विकसित किए। पूर्ववर्ती कांग्रेस के कार्यकाल में रामगढ़ अलवर सहित प्रदेशभर में दलितों के साथ अत्याचार किए गए। दलित युवकों की हत्या कर दी गई और आरोपियों को बचाने का प्रयास कांग्रेस सरकार ने किया। वहीं अलवर में साइबर क्राइम, दलित महिला के साथ रेप और गो-तस्करी जैसी घटनाओं को कांग्रेस ने बढ़ावा दिया।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि कांग्रेस राज में अपराधी पड़ोसी राज्यों से भागकर राजस्थान

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पूर्व महाराणा महेन्द्र सिंह का निधन

- महेन्द्र सिंह चितौड़ से सांसद रह चुके हैं। उनके पुत्र विश्वराज नाथद्वारा से विधायक और पुत्रवधु महिमा कुमारी राजसमंद से सांसद हैं।

उदयपुर, 10 नवंबर। मेवाड़ के पूर्व राजघराने के सदस्य महाराणा महेन्द्र सिंह मेवाड़ का रविवार को निधन हो गया। वे 84 वर्ष के थे। उनके निधन से मेवाड़ में शोक की लहर छा गई। पिछले कुछ समय से वे अस्वस्थ चल रहे थे और बीते सप्ताह स्वास्थ्य में लगातार गिरावट के चलते उन्हें निजी हॉस्पीटल में भर्ती कराया गया था, जहां रविवार दोपहर 1 बजकर 45 मिनट पर उन्होंने अंतिम सांस ली।

महाराणा मेवाड़ की अंतिम यात्रा सोमवार प्रातः 11 बजे समोर बाग से प्रारंभ होगी जो जगदीश चौक, घंटाघर, बड़ाबाजार, भड़भुजा घाटी, देहलीगेट, शास्त्री सर्कल होते हुए आयड़ स्थित महासतिया पहुंचेगी। इससे पूर्व प्रातः 8

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में एक जवान शहीद, 3 घायल

किश्तवाड़ जिले के केशवान वन में सुबह 11 बजे मुठभेड़ शुरु हुई थी

- अधिकारियों के अनुसार गुरुवार शाम से कुंतवाड़ा व केशवान के जंगलों में आतंकरोधी अभियान चल रहा है।

श्रीनगर, 10 नवंबर। जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ में एक जवान शहीद हो गया और तीन घायल हो गए। किश्तवाड़ के केशवान में 3-4 आतंकवादियों के घिरे होने की संभावना है। माना जा रहा है कि यह आतंकियों का वही समूह है, जिसने 7 नवंबर को कुंतवाड़ा के एक गांव के 2 वीडीजी सदस्यों की हत्या की थी।

अधिकारियों के अनुसार, रविवार को किश्तवाड़ जिले के सुदूर वन क्षेत्र में आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ में सेना के चार जवान घायल हो गये थे। इनमें से नायब सब-इंस्पेक्टर राकेश कुमार की इलाज के दौरान मौत हो गई। सब-इंस्पेक्टर राकेश 9 नवंबर को किश्तवाड़ के भारत रिज के सामान्य क्षेत्र में शुरू किए गए संयुक्त सी आई ऑपरेशन का हिस्सा थे।

अधिकारियों ने बताया कि हाल ही में दो ग्राम रक्षा गार्ड (वीडीजी) की हत्या के बाद आतंकवादियों की तलाश तेज कर दी गई है। अधिकारियों ने बताया कि केशवान के जंगलों में पूर्वाह्न करीब 11 बजे उस समय मुठभेड़ शुरू हो गई जब सेना और पुलिस के संयुक्त तलाशी दलों ने छिपे हुए आतंकवादियों की केशवान वन में घेराबंदी की। उन्होंने बताया कि मुठभेड़ स्थल उस स्थान से कुछ किलोमीटर दूर है, जहां पर वीडीजी नजीर अहमद और कुलदीप कुमार के गोलियों से छलनी शव मिले थे।

अधिकारियों ने कहा कि दो ग्राम रक्षा रक्षकों की हत्या के बाद कुंतवाड़ा और केशवान के जंगलों में गुरुवार शाम से आतंकवाद रोधी अभियान जारी है। सेना की जम्मू स्थित वाइट नाइट कोर ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर जारी एक पोस्ट में कहा, "आतंकवादियों की उपस्थिति के बारे में विशेष खुफिया जानकारी के आधार पर, किश्तवाड़ के भारत रिज क्षेत्र में सुरक्षा बलों द्वारा एक संयुक्त अभियान शुरू किया गया था। यह वही समूह है जिसने दो निर्दोष ग्रामीणों (ग्राम रक्षा रक्षकों) का अपहरण कर उनकी हत्या कर दी थी। उन्हें चुनौती दी गई और गोलीबारी शुरू हो गई।"

अधिकारियों ने बताया कि शुरुआती गोलीबारी में सेना के चार जवान घायल हो गए और उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां तीन की हालत 'गंभीर' बताई गई। इनमें से एक की मौत हो चुकी है। अधिकारी ने बताया, कि इलाके में तीन या चार आतंकवादी घिरे होने की संभावना है। अधिकारियों ने कहा कि दोनों पक्षों के बीच भारी गोलीबारी जारी है तथा अधिक जानकारी की प्रतीक्षा है।

कुकी उग्रवादियों के हमले में जवान घायल

इम्फाल, 10 नवंबर। मणिपुर के इम्फाल ईस्ट के सानासाबी लंपाक में रविवार को कुकी उग्रवादियों ने महिला किसानों पर हमला किया जिसमें महार रेजिमेंट का एक जवान घायल हो गया। उग्रवादियों ने महिला किसानों पर शक्तिशाली बमों से हमला किया। महिलाएं वहां से हट गईं और मणिपुर पुलिस और महार रेजिमेंट की संयुक्त टीम ने वहां पहुंचकर उग्रवादियों का सामना किया। इस दौरान के एक जवान को बाएं हाथ में गोली लगी।

मणिपुर में मैतेई और कुकी समुदायों के बीच करीब 17 महीनों से चल रहे साम्प्रदायिक हिंसा के बाद, जिसमें 230 से अधिक लोगों की मौत हुई है, एक और हमला हुआ है। शनिवार को बिष्णुपुर जिले के सैतोन इलाके में संदिग्ध उग्रवादियों ने किसानों पर गोली चलाई, जिसमें एक महिला की मौत हो गई। यह हिंसा दोनों समुदायों के बीच लंबे समय से चल रहे तनाव का परिणाम है, जिसका कारण जमीन और संसाधनों पर नियंत्रण की लड़ाई है।

मैतेई समुदाय के लोग कुकी समुदाय पर अवैध आव्रजन और आतंकवाद का समर्थन करने का आरोप लगाते हैं, जबकि कुकी समुदाय मैतेई समुदाय पर भूमि और संसाधनों पर कब्जा करने की कोशिश करने का आरोप लगाते हैं। इस हिंसा में कई लोग

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- मणिपुर के सानासाबी संपाक में कुकी उग्रवादियों ने महिला किसानों पर शक्तिशाली बमों से हमला किया था। महिलायें वहां से हट गयीं व पुलिस टीम ने उग्रवादियों का मुकाबला किया।

सिद्दीकी हत्याकांड का शूटर गिरफ्तार

शूटर शिवकुमार को शरण देने व भागने में मदद देने वाले चार व्यक्ति भी गिरफ्तार

- एस.टी.एफ. उत्तर प्रदेश तथा मुंबई क्राइम ब्रांच की संयुक्त टीम ने नेपाल भागने का प्रयास करते शूटर शिवकुमार को नानपारा बहराइच से गिरफ्तार किया।

बहराइच, 10 नवंबर। उत्तर प्रदेश एस.टी.एफ. और मुंबई पुलिस की अपराध शाखा की संयुक्त टीम ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के नेता बाबा सिद्दीकी की हत्या के मामले में एक आरोपी और उसे पनाह देने वाले चार लोगों को बहराइच जिले से गिरफ्तार किया है। इससे पहले इस मामले में कुल 15 लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

बाबा सिद्दीकी मर्डर केस मुंबई से संबंधित शूटर शिवकुमार को एस.टी.एफ. उत्तर प्रदेश व मुंबई क्राइम ब्रांच की संयुक्त कार्यवाही में आज नानपारा बहराइच से गिरफ्तार किया गया है। बताया जा रहा है कि शिवकुमार नेपाल भागने की फिराक में था। एस.टी.एफ. की टीम का नेतृत्व प्रमेश कुमार शुक्ल और जावेद आलम सिद्दीकी द्वारा किया गया। शिवकुमार को शरण देने व नेपाल भागने में मदद करने के अपराध में अनुराग कश्यप, ज्ञान

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्रसिद्ध पोलो खिलाड़ी बिली सोढी का निधन

वे जयपुर की 61 वीं कैवेलरी के कमाण्डेन्ट थे तथा अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित थे

- उनका अन्तिम संस्कार रविवार की दोपहर दिल्ली छावनी के मोक्षधाम में पूरे सैनिक सम्मान से किया गया।

-प्रकाश भण्डारी-

जयपुर, 10 नवम्बर। दिग्गज पोलो खिलाड़ी और जयपुर की 61वीं कैवेलरी तथा राष्ट्रपति अंगरक्षक प्रेसिडेन्ट बॉडीगार्ड के कमाण्डेन्ट कर्नल एच.एस. बिली सोढी का शनिवार की रात दिल्ली में निधन हो गया। अर्जुन पुरस्कार विजेता कर्नल बिली सोढी का रविवार दोपहर दिल्ली छावनी स्थित सेना के मोक्षधाम में पूरे सैनिक सम्मान के साथ दाह संस्कार किया गया। 86 वर्षीय बिली सोढी अपने पीछे पत्नि रोशन और दो पुत्रियाँ रूखसाना और अनीषा तथा भाई, पोलो खिलाड़ी और अर्जुन पुरस्कार विजेता कर्नल रविन्दर सिंह "पिकल्स" सोढी छोड़ गए। उल्लेखनीय है कि, बिली और उनके भाई पिकल्स दोनों ही 61वीं कैनेलरी के कमाण्डेन्ट पद पर रहे। उनकी पत्नि रोशन, भारत के पूर्व सेनाध्यक्ष स्वर्गीय जनरल पी.पी. कुमारमंगलम की पुत्री हैं।

कर्नल हरविन्दर सिंह पोलो जगत में बिली के नाम से मशहूर थे। उनके पिता अजितसिंह भी ब्रिगेडियर थे और सैनिक वातावरण में बिली का जन्म रावलपिण्डी में हुआ था। विभाजन के पूर्व उनके पिता भारतीय सेना में थे और विभाजन के बाद परिवार भारत आ गया। रावलपिण्डी में ब्रिगेडियर अजित सिंह सोढी के घर में घोड़े थे और बिली को घुड़सवारी का शौक बचपन से लग गया। छोटे भाई पिकल्स के साथ वह रावलपिण्डी में अपने खेत में घुड़सवारी करते थे।

विभाजन के बाद परिवार भारत आ गया और बिली सोढी के पिता ने अपने पुत्रों को हिमाचल के कसौली स्थित लारेन्स स्कूल सनावर में भर्ती करा दिया जहाँ घुड़सवारी की सुविधा थी। उल्लेखनीय है कि इसी स्कूल में स्वर्गीय कर्नल वी.पी. सिंह, कर्नल राज कलान और टेन्ट पैगिंग में दिल्ली के एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक विजेता कर्नल रूपी बरार भी पढ़े थे और सभी आगे चलकर योग्य पोलो खिलाड़ी बने। इसके बाद बिली पुणे स्थित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन.डी.ए.) के लिए चुने गये जहाँ घुड़सवारी और पोलो के

कर्नल एच.एस. बिली सोढी

उनके प्रेम को बढावा मिला। एन.डी.ए. में प्रशिक्षण के बाद सेना में जब उन्हें कमिशन मिला, तो अपने घुड़सवारी और पोलो प्रेम के कारण बिली ने 61वीं कैवैलरी चुनी ताकि वह पोलो खेलते रहें।

बिली, जब 60 के दशक के आरंभ में जयपुर की 61वीं कैवेलरी से जुड़े तो पोलो के कारण जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह और रावराजा हनूत सिंह के सम्पर्क में वह आए और पोलो की बारीकियां सीखीं। हनूत सिंह को बिली अपना गुरू मानते थे और उन्हीं के कारण उन्हें इंग्लैण्ड में पोलो खेलने का अवसर मिला। जयपुर में जब 1961 में ब्रिटेन की महारानी आईं तो बिली को उनके सम्मान में हुए मैच में खेलने का अवसर मिला। इसके बाद प्रिन्स फिलिप और अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन कैनेडी की पत्नी जैकलीन कैनेडी के सम्मान में रामबाग पोलो मैदान में भी वह खेले।

1970 में महाराजा सवाई मानसिंह की लन्दन में मृत्यु के बाद जयपुर में पोलो अल्प समय के लिए बन्द हो गया। लेकिन 61वीं कैवेलरी और उसके खिलाड़ियों की मदद से 1972 में पुनः जयपुर में पोलो पुनर्जीवित हुआ और इसको पुनर्जीवित करने का श्रेय बिली को जाता है। बिली ने सेना में पोलो के विकास में भी पूरी मदद की और भारत में यदि उस समय पोलो जिन्दा रहा तो वह सेना के कारण ही था।

जयपुर का पोलो सत्र दिल्ली के बाद फरवरी में हुआ करता था और तब बिली पिकल्स, वी.पी.सिंह, कुलदीप गर्चा, रूपीबरार, प्रदीप मेहरा, राज कलान, सूरत सिंह, महाराजा भवानी सिंह, कुंवर विजय सिंह, महाराज जयसिंह, रामसिंह, स्वर्गीय इन्दरजीत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

रुस के उपप्रधानमंत्री सोमवार को भारत में

नयी दिल्ली, 10 नवंबर। रूस के प्रथम उप प्रधानमंत्री डेनिस मंतुरोव सोमवार को भारत-रूस अंतरसरकारी आयोग की बैठक में भाग लेने के लिए दो दिन की यात्रा पर यहां आएंगे।

रूस के राजदूतावास ने आज यहां यह जानकारी देते हुए कहा कि मंतुरोव भारत की दो दिन की कामकाजी यात्रा पर सोमवार को मुंबई में रूसी-भारतीय बिजनेस फोरम के पूर्ण सत्र में भाग लेंगे।

- वे अन्तरसरकारी आयोग की बैठक में तथा रुसी-भारतीय बिजनेस फोरम के सत्र में भाग लेंगे।

रूसी राजदूतावास की विज्ञिप्त के अनुसार इस आयोजन का उद्देश्य दोनों देशों के उद्यिमयों के बीच सहयोग संबंधों का विस्तार करना है। फोरम में औद्योगिक सहयोग, परिवहन और रसद, वित्त, डिजिटल प्रौद्योगिकियों और अंतरक्षेत्रीय संबंधों सहित बातचीत

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

संग्रहालय हमारे जीवन का मूल है, जो हमें गति प्रदान करता है। -अज्ञात

ज़रूरत बहुत सारे संग्रहालयों की है!

जब हम देश से बाहर जाते हैं और वहां कुछ भी अच्छा देखते हैं तो हमारे मन में पहला विचार यही आता है कि ऐसा हमारे देश में क्यों नहीं है, या ऐसा हमारे देश में कैसे हो सकता है! और इसी तरह जब हम अपने शहर से बाहर किसी और शहर में जाते हैं और वहां कुछ अच्छा देखते हैं तो अपने शहर में भी वैसा ही होने का सपना देखने लगते हैं। यह बहुत स्वाभाविक प्रतिक्रिया है और मैं कह सकता हूं कि हरेक की ऐसी ही प्रतिक्रिया होती है। अपनी विदेश यात्राओं में मैंने बार-बार ऐसा महसूस किया है और कालांतर में जब अपने देश में उन चीज़ों या सुविधाओं को साकार देखा है तो मन खुशी से भर गया है। इधर पारिवारिक कारणों से हमारा कर्नाटक की राजधानी बेंगलुरु आना बढ़ गया है और यहां की बहुत सारी चीज़ों को देखकर मैं वैसी ही चीज़ों की अपने शहर में होने की भी कल्पना और कामना करने लगता हूं। वैसे हर जगह कुछ ऐसा होता है जिसकी आप कामना करते हैं और कुछ ऐसा भी होता है जिसके लिए आप यह कामना करते हैं कि वैसा आपके यहां कभी भी न हो। आज मैं बेंगलुरु की एक ऐसी बात की चर्चा करना चाह रहा हूं जिसका अपने शहर में होने का सपना मैं देखता हूं।

लगभग दो बरस पहले जब यहां आया था तो अनायास ही मैं यहां एक अद्भुत संग्रहालय में चला गया था. संग्रहालय था - इण्डियन म्यूज़िक एक्सपीरिएंस म्यूज़ियम। हिंदी में कहूं तो भारतीय संगीत अनुभव संग्रहालय। वैसे तो बरसों पहले अपनी सिएटल (अमरीका) यात्रा के दौरान इसी तरह का और इससे बहुत ज़्यादा बड़ा एक संग्रहालय देखा था - ईएमपी (EMP) अर्थात एक्सपीरिएंस म्यूज़िक प्रोजेक्ट। (अब इसका नाम बदल कर म्यूज़ियम ऑफ पॉप कल्चर कर दिया गया है)। जीवन में पहली दफा एक ऐसा संग्रहालय देखा तो चमत्कृत होना स्वाभाविक ही था, लेकिन क्योंकि यह संग्रहालय पूरी तरह पाश्चात्य संगीत पर केंद्रित था, इसे देखकर अपने यहां ऐसा ही कुछ हो- यह विचार मन में नहीं आया था। लेकिन जब दो बरस पहले बेंगलुरु में यह संग्रहालय देखा तो मैं न केवल चमत्कृत हुआ, थोड़ा उदास भी हुआ कि ऐसा ही संग्रहालय मेरे अपने शहर में क्यों नहीं है! जहां तक सांगीतिक विरासत की बात है, हम भला किससे उन्नीस हैं? हमारा लोक संगीत कितना समृद्ध है! शास्त्रीय संगीत में भी हमारे घराने अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। चाहे बात कथक की हो या खयाल गायकी की, जयपुर की धाक हर जगह है। हमारे तो कण-कण में संगीत व्याप्त है, फिर ऐसा संग्रहालय हमारे यहां क्यों नहीं है?

यह विचार मन में चल ही रहा था कि इस बार की बेंगलुरु यात्रा में फिर एक और संग्रहालय देखने का संयोग अचानक ही बन गया। इस बार जो संग्रहालय देखा उसका नाम है एमएपी (MAP) अर्थात म्यूज़ियम ऑफ आर्ट एण्ड फ़ोटोग्राफ़ी। शहर के बीचों बीच एक छह मंज़िला सुरुचिपूर्ण इमारत में अवस्थित इस संग्रहालय में दसवीं शताब्दी से लगाकर आज तक की पेण्टिंग्स, स्थापत्य, टेक्स्टाइल्स, छायाचित्रों और लोकप्रिय संस्कृति के विविध रूपों का अत्यंत समृद्ध और आकर्षक संग्रह है और यह संग्रह लगातार बढ़ता जा रहा है। इस संग्रहालय में कला दीर्घाएं, चित्र वीथियां, डिजिटल अनुभव केंद्र, पुस्तकालय, उपहार केंद्र, जलपान गृह आदि सब कुछ है और यहां का बहुत विनम्र और कुशल स्टाफ़ आपके लिए हर संभव सहायता प्रदान करने को तत्पर रहता है। इस बार मैंने यहां तीन अलग-अलग मंज़िलों पर तीन अलग-अलग प्रदर्शनियां देखीं। एक तल पर कृष्णा रेड्डी की कला की 'राइमअनब्रोकन' शीर्षक प्रदर्शनी थी तो दूसरे तल पर जेराम पटेल और तारिक करीमभाय की 'पेंटिंग विद फायर' थी। तीसरे तल पर स्त्री के जीवन के विविध आयामों को समेटने वाली शानदार प्रदर्शनी 'विज़िबल/इनविज़िबल' थी। संग्रहालय में प्रवेश करते हुए चंडीगढ़ रॉक गार्डन के लिए बहु प्रशंसित नेकचंद सैनी की कला के कुछ नमूने मुग्ध कर देते है। बहुत तसल्ली से तो नहीं देखा, फिर भी इस संग्रहालय में कोई चार घण्टे बिताए और लौटते हुए स्वयं को कलात्मक रूप से समृद्ध महसूस किया। इस संग्रहालय में यह उपलब्धि भरा समय बिताने से लगभग एक सप्ताह पहले इसी शहर में नेशनल गैलेरी ऑफ मॉडर्न आर्ट में कला आचार्य नंद लाल बसु के ख़ास चित्रों की एक शानदार प्रदर्शनी 'हरिपुरा पैनल्स' देखने का सौभाग्य मिला। दर असल इस बेंगलुरु शहर में एक पूरी सड़क पर संग्रहालय ही संग्रहालय हैं। मैंने पड़ताल की तो पाया कि यहां संग्रहालयों की जैसे एक शृंखला ही बना दी गई है। कुछ नाम देखें:- विश्वेश्वरैया औद्योगिक एवं तकनीकी संग्रहालय, द हेरिटेज सेंटर एण्ड एयरोस्पेस म्यूज़ियम, कर्नाटक चित्रकला परिषद, जवाहर लाल नेहरु प्लेनिटेरियम, क्यूरियस सिटी साइंस सेंटर, किंकिणी आर्ट, वेंकटप्पा आर्ट गैलेरीएंड गवर्नमेंट म्यूज़ियम, इंडियन कार्टून गैलेरी, बेर्नम्यूज़ियम, नेशनल मिलिट्री मेमोरियल, बैंगलोर क्रिएटिव सर्कस, द परम साइंस एक्सपरिमेण्ट सेंटर, रंगोली मेट्रो आर्ट सेंटर, स्वस्ति कंटेंपरेरी आर्ट गैलेरी, संदेश-म्यूज़ियम ऑफ कम्यूनिकेशन। यह पूरी सूची नहीं है। और भी अनेक संग्रहालय और वीथियां यहां हैं। ये सब सरकार द्वारा संचालित नहीं हैं।

बहुत सारे संग्रहालयों को देख चुकने के बाद मेरी यह राय बनी है कि ये शिक्षा के बेहतरीन साधन हैं. एक संग्रहालय में जाकर आप जितना जानते और सीखते हैं उतना औपचारिक शिक्षा संस्थानों में शायद नहीं सीख सकते हैं. इसलिए इनकी उपादेयता असंदिग्ध है. यहीं संग्रहालयों की एक सर्वमान्य परिभाषा को याद कर लेना उपयुक्त होगा। इस परिभाषा से संग्रहालयों की प्रवृत्तियों और उनके अवदान का अनुमान लगाया जा सकता है।

बहुत सारे संग्रहालयों को देख चुकने के बाद मेरी यह राय बनी है कि ये शिक्षा के बेहतरीन साधन हैं। एक संग्रहालय में जाकर आप जितना जानते और सीखते हैं उतना औपचारिक शिक्षा संस्थानों में शायद नहीं सीख सकते हैं, इसलिए इनकी उपादेयता असंदिग्ध है। यहीं संग्रहालयों की एक सर्वमान्य परिभाषा को याद कर लेना उपयुक्त होगा। इस परिभाषा से संग्रहालयों की प्रवृत्तियों और उनके अवदान का अनुमान लगाया जा सकता है। परिभाषा यह है:- "संग्रहालय समाज की सेवा करने वाले ऐसे अलाभकारी स्थायी संस्थान है जो मूर्त्त एवं अमूर्त विरासत का शोध, संग्रहण, संरक्षण, व्याख्या और प्रदर्शन करते हैं। संग्रहालय आम जन के लिए खुले रहकर, समावेशी और सुलभ रहते हुए विविधता और संधारणीयता का पोषण करते हैं। संग्रहालयों का परिचालन और संप्रेषण नैतिक, पेशेवराना तरह से और समुदायों की सहभागिता से होता है और ये शिक्षा, मनोरंजन, चिंतन और ज्ञान के सहभाजन के लिए विविध प्रकार के अनुभव प्रदान करते हैं." विदेशों में मैंने देखा है कि शैक्षणिक संस्थान अपने बहुत छोटे विद्यार्थियों को भी ऐसे संग्रहालयों में ले जाते हैं, हमारे यहां प्राय: ऐसा नहीं होता।

यह सारी चर्चा मैंने अपने राज्य और विशेष रूप से राज्य की राजधानी जयपुर के संदर्भ में की है। हमारे पास संग्रहणीय, संरक्षणीय और प्रदर्शनीय इतना कुछ है लेकिन हम उसके प्रति पूरी तरह उदासीन हैं। याद करने की कोशिश करें कि हमारे राज्य में कितने संग्रहालय हैं, और उनमें से कितनों को हमने देखा है! बेशक राज्य में बहुत सारे राजकीय संग्रहालय हैं, लेकिन क्योंकि वे राजकीय हैं, उनका काम करने का तौर तरीका वैसा ही है जैसा राजकीय उपक्रमों का होता है. इसका एक अपवाद है राजस्थान की राजधानी जयपुर में स्थित अल्बर्ट हॉल राजकीय संग्रहालय, जो न केवल अपने संग्रह के लिए उल्लेखनीय है, अपनी व्यवस्थाओं के लिए भी सराहनीय है। एकअन्य संग्रहालय जिसकी मैं सराहना करना चाहता हूं वह है उदयपुर में स्थित भारतीय लोक कला मण्डल का संग्रहालय। निश्चय ही प्रांत में अन्य कुछ बेहतरीन संग्रहालय भी होंगे जिनका उल्लेख मैं अपनी अल्प जानकारी के कारण नहीं कर पा रहा हूं, लेकिन इसके बावज़ूद यह एक तथ्य है कि अभी हमारे यहां बहुत सारे संग्रहालयों की ज़रूरत और सम्भावनाएं हैं। जयपुर में ही संगीत और लोक कलाओं का एक संग्रहालय होना चाहिए, एक संग्रहालय राजस्थान की सांगीतिक विरासत का होना चाहिए, साहित्यिक वैभव का भी एक संग्रहालय होना चाहिए, हमारे खान-पान की परंपराओं और उनके वैभव का भी एक संग्रहालय हो, वेश विन्यास, ऐतिहासिक विरासत, भाषा-बोलियां, ये सब संग्रहालयों के विषय हैं और इन पर गंभीरता से काम होना चाहिए। बहुत सारे लोगों के निजी संग्रह हैं। स्वर्गीय विजय वर्मा जी के पास लोक वैभव और संगीत का अद्भुत संग्रह था। उनके परिजनों के लिए भी यह हर्ष और गौरव की बात होगी कि उनका संग्रह आम जन के लिए सुलभ हो। ऐसे अन्य बहुत सारे संग्राहक हमारे यहां रहे हैं। उनके संग्रह अगर संग्रहित और व्यवस्थित किए जाकर आम जन के लिए सुलभ कराए जाएं तो यह बहुत उपयोगी काम होगा। उन पर स्वामित्व भले ही मूल संग्राहक के परिजनों का रहे, सरकार अथवा निजी क्षेत्र उनका बेहतर प्रबंधन कर उनकी उपादेयता को कई गुना बढ़ा सकता है।

ज़रूरी नहीं कि यह सारा काम सरकार ही करे। सरकार से हटकर निजी क्षेत्र भी इन संग्राहालयों की स्थापना का ज़रूरी काम कर सकते हैं। दुनिया भर में ऐसा होता है। बेंगलुरु के जिस संग्रहालय के ज़िक्र से मैंने अपनी बात शुरु की है वह भी निजी क्षेत्र द्वारा ही निर्मित और प्रबंधित है और बहुत अच्छी तरह प्रबंधित है। लेकिन इसके लिए पहल राज्य सरकार कर सकती है। वह योजना बनाकर उसकी क्रियान्विति के लिए निजी क्षेत्र का सहयोग मांग सकती है। इस बात की बहुत बड़ी ज़रूरत है कि जयपुर में भी, जो पूरी दुनिया से पर्यटकों को आकर्षित करता है, एक पूरा क्षेत्र केवल संग्रहालयों को समर्पित हो और वहां अनेक विशिष्ट संग्रहालय बनें। जयपुर में, और राज्य के अन्य अनेक नगरों में भी काफी कुछ नया और अच्छा हो रहा है। इस सूची में संग्रहालयों को भी जोड़ा जाना चाहिए। (बेंगलुरु प्रवास से)

-अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

उच्च शिक्षा - दशा एवं दिशा

प्रो. अशोक कुमार

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। कहते हैं यदि जीवन में शिक्षक न हों, तो शिक्षा संभव नहीं है। शिक्षक ही वह पथ प्रदर्शक होता है, जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाता है। शिक्षक ज्ञान प्रदाता होता है, उसकी शिक्षाएँ समाज के लिए अनुकरणीय होती हैं। सवाल यह है कि हम समाज की नींव रखने वाले इस व्यक्तित्व (अध्यापक) की नींव को यदि कमजोर करेंगे तो नि:संदेह यह हमारे देश और समाज के लिए घातक सिद्ध होगा।

पूरे विश्व में जो शैक्षणिक व्यवस्था है, उसके तीन घटक हैं- छात्र, अध्यापक और अभिभावक। इन तीनों के समन्वय के बगैर शैक्षणिक त्रिभुज के निर्माण की परिकल्पना ही बेमानी है। शिक्षा के बगैर विकसित मानव की कल्पना नहीं की जा सकती और इसके बिना सभ्य एवं शिक्षित समाज की भी कल्पना नहीं की जा सकती। जीवन की आधारभूत जरुरतों- रोटी, कपड़ा और मकान के बाद मानव को मानव कहलाने की जिस चीज की जरुरत शायद सबसे ज्यादा होती है वह है शिक्षा। यह शिक्षा ही है, जिसकी मदद से हम किताबी आदर्शों का तारतम्य जीवन की सच्चाइयों से स्थापित कर पाते हैं। विचारों को एक रचनात्मक केन्द्र देते हैं, सही-गलत में भेद कर पाते हैं और सबसे अधिक राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अपना योगदान दे पाते हैं। बालक का बचपन एक कोरे कागज के समान होता है। शिक्षकों के द्वारा शिक्षा के माध्यम से शुरूआत के वर्षो में दिये गये संस्कार एवं गुण उनके सम्पूर्ण जीवन को सुन्दर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं! परन्तु प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था का सच भी जगजाहिर है।

जॉन एडम्स ने कहा है कि "अध्यापक ही व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का निर्माणक एवं विकास का प्रमुख आधार है। बिना शिक्षक की सक्रिय सहभागिता के किसी राष्ट्र का वर्तमान एवं भविष्य का निर्माण एवं विकास सम्भव नहीं है।" इसी बात को भारतीय मनीषियों ने, "**गरुरू ब्रह्मा, गुरु रू विष्णु, गुरु रू देवो महेश्वर:**" के रूप में कहा। यह परम्परा एवं अध्यापक के प्रति सम्मान सनातन से चल आ रहा है, किन्तु जब अध्यापक की दशा एवं दिशा को वर्तमान परिप्रेक्ष में देखने का प्रयास करता हूँ तो उसका स्वरूप परिवर्तित दिखायी पड़ता है, जिसमें विगत दशक शिक्षक समाज के लिए बहुत ही असन्तोषजनक रहा उसमें अध्यापक शिक्षा के गुणवत्ता पर एक प्रकार से प्रश्नचिन्ह लगता दिखायी पड़ता है।

जब पूरी दुनिया ने विद्यालय की कल्पना नहीं की थी, उस समय हमारे यहाँ विश्वविद्यालय हुआ करते थे। विश्वस्तरीय नालंदा विश्वविद्यालय, तक्षशिला विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय इसके उदाहरण हैं। पर शिक्षा-व्यवस्था की विसंगतियाँ कहीं-न-कहीं बहुत कचोटती हैं। शिक्षा में जब सियासत की गैरजरूरी दखलंदाजी बढ़ती है, तो बेवजह शिक्षा जगत को शर्मसार होना पड़ता है। इतना ही नहीं, जब राज्यों में सरकारें बदलती हैं, तो विभिन्न पार्टियाँ अपने एजेंडे के अनुसार विभिन्न पाठ्यक्रम भी बदलते हैं! किसी भी राज्य में जब एक खास दल की सरकार आती है, तो वहाँ इतिहास के पाठ्यक्रम में दो पन्ने जोड़ दिये जाते हैं और जब दूसरी पार्टी सत्ता संभालती है, तो उन दो पृष्ठों को फाड़कर हटा दिया जाता है। यह हमारे ऐतिहासिक तथ्यों के प्रस्तुतीकरण का दुर्भाग्यपूर्ण मौजूदा सच है। संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में राजनीति प्रवेश कर चुकी है और जबसे शिक्षा व्यवस्था में राजनीति का अनुचित प्रवेश हुआ, तब से शिक्षा व्यवस्था पैसे कमाने का धंधा बन चुकी है। नीति नियामक संस्थाओं की नीतियों एवं कार्यस्वरूप के बीच एक भारी अन्तर दिखायी पड़ रहा है! उच्च शिक्षा की स्थिति बेहतर बनाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का गठन हुआ तो जरूर, पर आज विश्वविद्यालय जैसी स्वायत्त संस्था की विश्वसनीयता संदेहास्पद होती चली जा रही है। कुछ वर्ष पूर्व अमेरिकी तर्ज पर दिल्ली वि.वि. में चार साल के स्नातक पाठ्यक्रम की शुरुआत हुई, जिसकी चौतरफा आलोचनाएँ हुयीं! और आज एक बार फिर चार साल के स्नातक पाठ्यक्रम शुरू कर दी गई है! जिनके पास नीति बनाने की निपुणता नहीं है वे ही देश की नीति बना रहे हैं और जो शिक्षण संस्थाओं में एक भी पाठ नहीं पढ़ाये हैं वे पाठ्यक्रम निर्धारित करते हैं! यह हमारे शिक्षा व्यवस्था का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

समूचे देश के अंदर छात्र - शिक्षक अनुपात इतना असंतुलित है कि सोचकर ही स्थिति भयावह लगती है आई.आई.टी. जैसे संस्थानों में 15-20 शिक्षकों की कमी है। आज देश का सम्पूर्ण शिक्षा क्षेत्र योग्य अध्यापकों की कमी से जूझ रहा है! विकसित देश में शिक्षा का भविष्य अस्थायी शिक्षकों के सहारे पर निर्भर है जिनको विभिन्न नाम से जाना जाता है : अस्थायी, एडहॉक, संविदा, पार्टटाइमर, अतिथि, मानद, विजिटिंग, आवश्यकता आधारित, एमओयू प्रोफेसर, शोध विद्वान, ऑनलाइन अतिथि संकाय, स्व अध्ययन। विदेश में: प्रतिस्थापन, सत्रीय, सहायक शिक्षक। ज्ञान आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार यदि देश को 'नालिज सोसाइटी' में बदलना है तो आने वाले सालों में देश में करीब 1500 विश्वविद्यालय खालने होंगे। शिक्षा का विकास सिर्फ कॉलेज खोलने से नहीं होता! कई राज्य स्तरीय विश्वविद्यालय तो ऐसे हैं, जहाँ कई कॉलेजों में कई विभागों में एक भी शिक्षक नहीं है इससे बड़ी विडम्बना और क्या होगी कि प्रदेश के बहुत से शिक्षक ऐसे हैं जो कई महाविद्यालयों में अनुमोदन करायें हैं और वास्तव में कहीं पढ़ा रहे हैं या नहीं यह भी स्पष्ट नहीं है ऐसी शिक्षा व्यवस्था से यह देश को गंभीर खतरे की ओर जा रहा है।

वर्तमान में शिक्षा को सेवा की जगह व्यापार की कोटि में रखा जा रहा है! आज बाजार की मांग के अनुरूप पाठ्यक्रम और पूंजीपतियों के अत्यधिक व्यवसायिक लाभ के लिए महाविद्यालयों एवं तकनीकी संस्थाओं की मान्यता दी जा रही है। निजी कॉलेज क्यों तेजी से बढ़ रहे हैं, क्योंकि उन्हें तेजी से बढ़ने दिया गया है। ऐसे अधिकांश संस्थान वास्तव में शैक्षणिक संस्थानों की आड़ में रियल एस्टेट रैकेट हैं। उनमें से अधिकांश राजनेताओं और बिल्डरों द्वारा नियंत्रित हैं। किसी बड़े शहर में विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए भूमि की आवश्यकता नए खिलाड़ियों के लिए एक बड़ी बाधा की तरह लगती है, जिनके पास बहुत अधिक धन या राजनीतिक संबंध नहीं होते। यह निजी शिक्षा क्षेत्र पर पर्याप्त संसाधनों वाले व्यक्तियों, अक्सर राजनेताओं द्वारा एकाधिकार करने में योगदान देता है। भूमंडलीकरण के इस दौर में हम अपनी ही पहचान खोते जा रहे हैं शिक्षण संस्थाओं में भौतिक संसाधन एक प्रकार से औपचारिकता तथा निरीक्षण की वस्तु बनकर रह गयी है शिक्षक अपने को मानदेय पर काम करने वाले एक श्रमिक के रूप में देख रहा है, जिसमें कुण्ठा, निराशा एवं हताशा का होना स्वाभाविक है! गुरु-शिष्य संबंध का घनत्व घट रहा है। आज शिक्षा पर सकल घरेलू उत्पाद का जितना प्रतिशत खर्च होना चाहिए, वो नहीं हो पा रहा है। रक्षा और अन्य मंत्रालयों का बजट लम्बा-चौड़ा होता है, पर शिक्षा की अनदेखी होती है। समय पर प्राध्यापकों को वेतन नहीं मिलता, फलत: हड़ताली संस्कृति विकसित होती चली जा रही है, जिसका खामियाजा अन्तत: छात्रों को भुगतना पड़ता है। अब बदलती व्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में हमारी नैतिकतापूर्ण, गुणवत्तापूर्ण व व्यक्तित्व-निर्माण केंद्रित शिक्षा-पद्धित कहाँ तक अपनी अस्मिता को अक्षुण्ण बनाये रखने में समर्थ होगी, यह गंभीर विचारणीय प्रश्न है।

शिक्षा संस्थानों में अनुसंधान और उसकी गुणवत्ता पर ध्यान नहीं दिया जाता। वाकई एक अच्छा शोध ऐसे परिवेश की माँग करता है, जहाँ शिक्षकों का स्तर अनुसंधान और अन्वेषण को ईमानदार सोच के साथ बढ़ावा देने वाला हो, छात्र निरंतर विषय को आगे बढ़ाने, उसका विस्तार करने और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में नये आयाम जोड़ने के प्रयास में लगे हों और नीति-नियंताओं की नीयत साफ हो। शोध के लिए जरूरी इस अन्वेषणपरक बुनियादी प्रवृत्ति का अभाव-सा नजर आता है।

आज भारतीय शिक्षा में शिक्षकों के हालात, विशेष तौर पर सेल्फ फाइनेंस संस्थानों में शिक्षकों की स्थिति काफी दयनीय है, इतने खराब हैं कि व्यवसायिक दृष्टि रखने वाले शिक्षण संस्थायें अपनी जिम्मेदारियां और उत्तरदायित्व से विमुख होते जा रहे हैं। इसके लिए समाज, सरकार, शिक्षा जगत् और शिक्षण संस्था के संचालक खुद भी जिम्मेदार है। शिक्षा व्यवस्था के व्यावसायिक रूप से अध्यापकों का शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण भी हो रहा है, अत: वे अपनी सेवा ठीक ढंग से निभाने में अक्षम रहता है। यह स्थिति भारत देश के भविष्य के लिए कतई अच्छी नहीं है और ऐसे ही रहा तो बच्चों का भावी भविष्य अराजकता की ओर जाना तय है। इन सबके लिए सरकार और नई शिक्षा नीतियां जिम्मेदार मानी जा सकती है! अत: देश की सरकारों को हर स्तर पर शिक्षा की दशा एवं दिशा पर गंभीरता से मंथन करते हुए शिक्षा के बाजारीकरण को रोकना होगा तथा ऐसी शिक्षा नीति एवं व्यवस्था देनी होगी जिससे देश और समाज के युवा पीढ़ी अच्छे, कुशल और जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

प्रो. अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय

स्मॉग से 75 प्रतिशत तक कम हुई विजिबिलिटी

श्रीगंगानगर। हवा में स्मॉग के असर से रविवार को विजिबिलिटी 75 प्रतिशत तक कम रही। इससे अल सुबह सड़कों पर निकले लोगों को परेशानी हुई।दोपहर बाद तीन बजे तक भी हालात ऐसे ही बने रहे। हालांकि यह कोहरे से कुछ अलग था लेकिन हवा में ठहरे डस्ट पार्टिकल और पराली का धुआं विजिबिलिटी पर असर डाल रहा था। ज्यादा परेशानी अल सुबह शहर से बाहर की तरफ निकले लोगों को हुई। दूध

- **दिन भर रहा वातावरण में धुएं जैसा एहसास, अल सुबह ज्यादा परेशान हुए लोग**

विक्रेता सतपाल बिश्नोई ने बताया कि वह करीब 45 किलोमीटर बाइक चलाकर श्रीगंगानगर पहुंचा। उसे विजिबिलिटी कम होने से समान्य दिनों से तीस से चालीस मिनट का अतिरिक्त समय लगा। मौसम एक्सपर्ट बताते हैं कि इन दिनों हवा में कुछ नमी है। इसके साथ ही पड़ोसी राज्य पंजाब में चावल के अवशेष यानी पराली जलाई जा रही है। नमी के कारण पैदा हुआ यह कोहरा और इसके साथ धुआं मिलकर विजिबिलिटी कम करते हैं। फोग और स्मोक से मिलकर पैदा हुए हालात को स्मॉग नाम दिया गया है। स्मॉग से विजिबिलिटी पर 75 प्रतिशत तक असर पड़ा है। एक्सपर्ट्स के अनुसार करीब दस दिन तक ऐसे ही हालात रहेंगे। अगर इस दौरान तेज हवा चले या हलकी बरसात हो तो यह स्मॉग कम हो सकता है उसके बाद केवल कोहरे के हालात रहेंगे। मौसम विज्ञान केंद्र के रिटायर्ड इंचार्ज एमएल रणवां बताते हैं कि डस्ट पार्टिकल और चावल के कचरे को जलाने से पैदा हुआ पराली का धुआं इन दिनों नमी के कारण हवा में अटका है। इससे विजिबिलिटी घटी है। इसी से स्मॉग बढ़ा है।

30 किमी. गरोठ जाकर नेत्रदान लिया

कोटा, (निसं)। सुबह, कॉलेज रोड, गरोठ, मध्यप्रदेश निवासी, सेवानिवृत शिक्षक रामगोपाल तिवारी का आकस्मिक निधन हुआ, जीवनभर विद्यार्थियों को ज्ञान की रोशनी देने के बाद शिक्षक रामगोपाल तिवारी मरणोपरांत भी दो लोगों को ज्योति की रोशनी दे गए। भारत विकास परिषद के प्रांतीय 'भारत को जानो' प्रतियोगिता प्रभारी प्रभारी नरेंद्र कुमार चौधरी ने बताया कि, सेवानिवृत शिक्षक रामगोपाल तिवारी के आकस्मिक निधन के पश्चात उन्होंने पुत्र मुकेश तिवारी से नेत्रदान की चर्चा की, शिक्षित परिवार होने के कारण तुरंत नेत्रदान के प्रति सहमति हो गयी। परंतु एक समस्या थी कि, नेत्र उत्सर्जन करने वाले शामगढ़ के टेक्नीशियन छुट्टी पर थे, ऐसे में नेत्र उत्सर्जन का कार्य कैसे संभव हो?

पुष्कर मेला परवान पर : पूरब-पश्चिम की संस्कृति का हो रहा संगम

पुष्कर मेले में काफी संख्या में देशी व विदेशी पर्यटकों का आना जारी है।

पुष्कर 10 नवंबर। पुष्कर के सालाना मेले में राजस्थान सहित देश के विभिन्न राज्यों से श्रद्धालु पहुंच रहे हैं वहीं सात समुन्दर पार से विदेशी मेहमानों के आने से ब्रह्माजी की पावन नगरी पूर्व पश्चिम संस्कृति की स्थली में तब्दील हो गई हैं। सैलानियों को मेले में आ रहे ठाामीण महिला पुरुष श्रद्धालुओं के साथ ऊंट व घोड़े घोडियों करतब लुभा रहे हैं। पशुओं की मंडी में पशुपालक खरीद फरोख्त में मशगूल है।

- **साधु संतों की आध्यात्मिक यात्रा 12 को**
- **आकर्षण का केंद्र 23 करोड़ का भैसा व 2 करोड़ का घोड़ा**

संतो का डेरा जमने लगा

पुष्कर सरोवर में बैकुंठ चतुर्दशी को शाही स्नान करने व आध्यात्मिक पद यात्रा में भाग लेने के लिए विभिन्न अखाड़ों के संत महात्माओं ने पुष्कर में डेरा जमाना शुरू कर दिया हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों के आश्रमों मठों मंदिरों से मंडलेश्वर महंत मठाधीश व अखाड़ों के संत महात्मा 12 नवंबर को आध्यात्मिक पद यात्रा में शिरकत करेंगे व 14 नवंबर को पवित्र सरोवर में शाही स्नान कर पुण्य कमाएंगे। सरोवर में धार्मिक स्नान कर पुण्य कमाने के लिए श्रद्धालुओं की आवक बढ ने लगी हैं हजारों श्रद्धालु प्रतिदिन सरोवर में स्नान कर ब्रह्मा मंदिर में दर्शन कर पुण्य कमा रहे हैं। चार दिवसीय पंचतीर्थ स्नान के साथ ओर अधिक बढ़े गी।

23 करोड़ का भैसा:

पुष्कर मेले में भैंसे, घोड़े व पुंगनूर प्रजाति की गाय आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। माथे पर लाल रिबन लगे इस भैंसे का नाम अनमोल है। यह अपने नाम के अनुरूप ही मालिक पलविंदर के लिए अनमोल बना हुआ है। हरियाणा के सिरसा के रहने वाले पलविंदर का दावा है कि उनके भैंसे की कीमत 23 करोड़ लग चुकी है, लेकिन उन्होंने ऊंची कीमत मिलने पर भी इसे बेचा नहीं। अनमोलए पलविंदर के परिवार के लिए अहम सदस्य की भूमिका में है। भाई की तरह है।

2 करोड़ का घोड़ा भी आकर्षण का केन्द्र:

पुष्कर मेले में एक घोड़ा सभी के आकर्षण का केंद्र बन गया है। घोड़े का नाम है शिवनादश् पंचकल्याण। इस घोड़े की कीमत करीब कीमत 2 करोड़ रुपए बताई जा रही है। घोड़े के मलिक ने जब घोड़े की डाइट का खर्च बताया तो सब दंग रह गए।

पुंगनूर प्रजाति की गाय आकर्षण का केंद्र:

पुष्कर पशु मेले में विलुप्त होती पुंगनूर प्रजाति की गाय आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। जयपुर से आए अभिराम ब्रीडिंग फार्म के अभिनव तिवारी ने बताया कि पुंगनूर प्रजाति की गाय की हाइट 28 से 36 इंच होती है। एक गाय प्रतिदिन 3 किलो चारा खाती है और तीन से पांच लीटर प्रतिदिन दूध देती है। तिवारी ने यह भी बताया कि पुष्कर के अंतरराष्ट्रीय पशु मेले में इन गायों को बेचने के मकसद से नहीं बल्कि उनकी प्रजाति के संरक्षण के लिए उनकी प्रदर्शनी लगाई गई है।

सतोलिया का पारंपरिक मैच खेला गया

मेला मैदान में देशी विदेशी पुरुषों के बीच राजस्थान का पारंपरिक सतोलिया मैच खेला गया। मैच शुरू करने से पहले राजस्थानी खेल से अनभिज्ञ मेहमान प्रतियोगियों को आयोजकों ने खेल के नियम की जानकारी दी। रोचक मुकाबले को देखने दर्शक उमड़ पड़े।

गीली डंडा का आयोजन

सतोलिया मैच के बाद विदेशी व देशी पर्यटकों के बीच गीली डंडा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें दस दस प्रतिभागियों की दो टीम बनाई गई।

लंगड़ी रेस में दौड़ी देशी व विदेशी युवतियां

मेले के दूसरे दिन रविवार को मेले मैदान में देशी विदेशी युवतियों के बीच लंगड़ी टांग प्रतियोगिता आयोजित की गई। रेतीले धोरों में एक टांग पर दौड की रोचक प्रतियोगिता में कुल 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

ऊंट नृत्य प्रतियोगिता को देखने विदेशी सैलानी उमड़े

पुष्कर मेले मैदान में पशुपालन विभाग द्वारा रविवार को आयोजित ऊंट नृत्य व श्रृंगार प्रतियोगिता में देशी पर्यटकों के साथ साथ विदेशी सैलानियों ने जमकर लुफ्त उठाया। आकषर्क श्रृंगार से सजे धजे ऊंटों के नृत्य को कैमरे में कैद करने देशी विदेशी सैलानियों का हुजूम उमड़ पड़ा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 11 नवम्बर, 2024

कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2081, शतभिक्षा नक्षत्र प्रात: 9:40 तक, व्याघात योग रात्रि 10:36 तक, तैतिल करण प्रात: 7:54 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 2:22 से मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-तुला, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-धनु, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। कुमार योग प्रात: 9:40 से आरम्भ होगा। आज से भीष्म पंचक व्रत आरम्भ होंगे। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघडिया: अमृत सूर्योदय से 8:08 तक, शुभ 9:24 से 10:50 तक, चर 1:32 से 2:52 तक, लाभ-अमृत 2:52 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल: 7:30 से 9:00 तक, सूर्योदय-6:48, सूर्यास्त-5:34

मेष
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

कर्क
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। नवीन कार्यों में परेशानी हो सकती है।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभव-प्रभुत्व बढ़ेगा। महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

कन्या
स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। महत्वपूर्ण परामर्श मिलेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक-आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्य से संबंधित यात्रा सफल रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे।

मकर
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। व्यावसयिक सुविधाएं बढ़ेगी। परिवर में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

नाला निर्माण के 48 करोड़ रु. के टैंडर को लेकर जयपुर विकास प्राधिकरण के दो इंजीनियर्स में भारी टकराव

200 फीट बाईपास से मूंडियारामसर तक नाला निर्माण के इस प्रोजेक्ट में करीब 35 करोड़ की लागत से 9 किलोमीटर दूरी में जोन-12 द्वारा कार्य कराया जाना है, जबकि 13 करोड़ की लागत से 4 कि.मी. क्षेत्र में जोन-7 करवायेगा काम

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । जयपुर विकास प्राधिकरण में 48 करोड़ रु. की लागत से नाला निर्माण प्रोजेक्ट को लेकर दो अधिशाषी अभिंताओं (एक्सईएन) के बीच भारी टकराव हो रहा है। इसके लिए बाकायदा डायरेक्टर इंजीनियरिंग को पत्र भी लिखा गया है।

दरअसल बरसात के दौरान 200 फीट अजमेर रोड बाइपास पर भारी जलभराव होता है, इस समस्या को दूर करने के लिए जे.डी.ए. द्वारा 48 करोड़ की लागत से नाला निर्माण कराया जाना है। इसमें से करीब 35 करोड़ रु. लागत से करीब 9 किलोमीटर दूरी में जोन-12 द्वारा काम करवाया जाना है, जबकि शेष 13 करोड़ की लागत से जोन-7 द्वारा 4 किलोमीटर दूरी में कार्य कराया जायेगा।

सूत्रों की मानें तो जोन-7 के अधिशाषी अभियंता तरूण सिंघल 48 करोड़ रु. के इस पूरे प्रोजेक्ट पर खुद काम करना चाहते हैं, जबकि उनके द्वारा अजमेर रोड पर पुलिस कमिश्नरेट के सामने बनाई गई डामर रोड और सोडाला में मैस्टिक डामर के सैंपल महज 1 सप्ताह में ही फेल हो गए थे। इसके बावजूद जे.डी.ए. के उच्चाधिकारियों ने इस प्रोजेक्ट का नोडल ऑफिसर जोन-7 को बना रखा है। जबकि इस प्रोजेक्ट का 74 प्रतिशत कार्य जोन-12 द्वारा कराया जाना है और शेष 26 प्रतिशत काम ही जोन-7 में होगा।

सूत्रों की मानें तो बरसात के दौरान अजमेर रोड 200 फीट बाईपास पर पानी भरता है, जिससे लोगों का निकलना दूभर हो जाता है। खासकर यहां से गुजरने वाले अंडरपास तो पानी से भर जाते है, जिससे लोग निकल नहीं पाते। आमजन की इस समस्या को देखते हुए उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी और उद्योग मंत्री राज्यवर्धन सिंह ने जे.डी.ए. में 48 करोड़ रुपए में नाला निर्माण करने के लिए मंजूरी दिलाई थी।

इस प्रोजेक्ट में 200 फीट बाईपास से मुंडियारामसर तक नाला निर्माण कार्य दो फेज में होना है। इसके लिए जेडीए ने जोन-7 को ही नोडल अधिकारी बना दिया, हालांकि जोन-7 में सिर्फ 13 करोड़ का ही काम होना है। बाकी 35 करोड़ रुपए का काम दूसरे फेज में जोन 12 के इलाके में होना है।

मजेदार बात यह है कि जोन-7 के एक्सईएन तरूण सिंघल द्वारा बनाई गई अजमेर रोड सड़क के सैंपल दीपावली पर ही फेल हो चुके हैं। इसके बावजूद जेडीए कमिश्नर आनंदी और अभियांत्रिकी निदेशक अजय गर्ग ने उन पर कोई कार्रवाई नहीं की। ऐसे में सवाल उठता है कि आखिर जेडीए प्रशासन घटिया सड़क निर्माण उजागर होने के बाद भी अधिशाषी अभियंता को क्यों बचा रहे हैं।

सूत्रों की मानें तो इस प्रोजेक्ट को लेकर जोन-12 के अधिशाषी अभियंता मनोज कुमार दुबे ने डायरेक्टर इंजीनियरिंग को पत्र लिखकर यह प्रोजेक्ट जोन-7 को देने का विरोध जताया है। उनका कहना है कि, नाला कैसे बनना है किस तरफ से जाएगा, इसका लेवल कितना रखा जाएगा, कहां नीचा और दिशा किस तरफ रखनी है इसकी सारी जानकारी जोन-12 को ही है। खासतौर पर लेवल गड़बड़ हो गया तो पानी आगे जाने की बजाय वापस पीछे की तरफ आएगा और जे.डी.ए. के करोड़ों रुपये बर्बाद हो जाएंगे। ऐसे में सारी जिम्मेदारी जोन-12 के अधीक्षण अभियंता, अधिशाषी अभियंता, सहायक व कनिष्ठ अभियंता के माथे पर रहेगी। यहां तक कि स्थानीय जनता भी जोन-12 के इंजीनियर्स को ही पकड़ेगी। ऐसे में अपने जोन-12 में काम कराने की जिम्मेदारी भी हमें ही मिलनी चाहिए।

जोन-12 के एक्सईएन मनोज दुबे ने नाला निर्माण का काम अपनी देखरेख में करवाने के लिए कहा है, ताकि काम में कोई कमी नहीं रह जाए। इसका कारण यह है कि जोन-7 के कामों के सेम्पल फेल होने और क्वालिटी खराब होने के कारण अब जोन-12 के इंजीनियर्स कोई भी रिस्क लेने को तैयार नहीं है। उनका कहना है कि किसी तरह काम में कोई कमी रह गई तो जनता तो उन्हें ही पकड़ेगी।

वहीं दूसरी ओर जोन 7 के एक्सईएन तरूण सिंघल ने भी निदेशक इंजीनियरिंग को पत्र लिख कर ड्रेनेज निकासी का काम अपनी देखरेख में कराने के लिए पत्र लिखा है। उन्होंने अजीब सी दलील दी है कि, दूसरे जोन के इंजीनियर्स को लेवल का पता ही नहीं है, फिर काम कैसे होगा।

- हैरानी की बात है कि इस 48 करोड़ के प्रोजेक्ट में जोन-7 का क्षेत्र कम होने के बावजूद अधिशाषी अभियंता तरूण सिंघल विशेष रुचि दिखा रहे हैं, जबकि उनके द्वारा पिछले दिनों अजमेर रोड और सोडाला में बनाई गई सड़क के सैंपल तक फेल हो चुके हैं।
- उधर जोन-12 के अधिशाषी अभियंता मनोज कुमार दुबे ने भी डायरेक्टर इंजीनियरिंग को पत्र लिखकर साफ कहा है कि, नाला कैसे और किस तरफ जायेगा, कहां नीचा और दिशा किस तरफ रखनी है इसकी सारी जानकारी जोन 12 को ही है। अगर प्रोजेक्ट में गड़बड़ी होगी तो उसकी जिम्मेदारी भी जोन-12 के इंजीनियर्स की होगी, फिर जोन-7 को यह पूरा प्रोजेक्ट क्यों सौंपा जाये।
- सवाल यह उठता है कि जब 48 करोड़ के इस प्रोजेक्ट का 74 प्रतिशत लागत कार्य जोन-12 द्वारा किया जाना है तो फिर जे.डी.ए. के उच्चाधिकारी आखिर क्यों जोन-7 के अधिशाषी अभियंता को नोडल ऑफिसर बनाने पर तुले हुए हैं?
- दीपावली से पूर्व जोन-7 द्वारा पुलिस कमिश्नरेट के सामने बनाई गई सड़क के सैंपल फेल होने के बावजूद आज तक दोषी फर्म और इंजीनियर्स पर कार्रवाई नहीं किये जाने के कारण भी जे.डी.ए. प्रशासन की कार्यशैली पर कई सवाल खड़े कर रहा है।

सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा रद्द करने की मांग को लेकर पानी की टंकी पर चढ़े दो युवक

पानी की टंकी पर चढ़े दो बेरोजगारों को सुरक्षित उतारने की कवायद में जुटे आपदा प्रबंधन के कर्मचारी।

जयपुर। सब इंस्पेक्टर भर्ती रद्द करने की मांग को लेकर रविवार को दो बेरोजगार युवा पानी की टंकी पर चढ़ गए। बेरोजगारों ने मंत्री केके बिश्नोई और आईएएस अधिकारी शिखर अग्रवाल पर इस भर्ती को रद्द न करने के लिए मुख्यमंत्री पर दबाव बनाने का आरोप लगाया है। साथ ही जब तक उनकी मुलाकात मुख्यमंत्री से नहीं होती, तब तक पानी की टंकी से नहीं उतरने और दबाव बनाने पर जान जोखिम में डालने की चेतावनी दी है।

प्रदेश में पेपर लिखकर खुलासा होने के बावजूद भी सब इंस्पेक्टर भर्ती परीक्षा को रद्द नहीं करने से आहत दो युवा बेरोजगार विकास बिधूड़ी और लादूराम गोदारा रविवार को पानी की टंकी पर चढ़ गए। जयपुर के ओटीएस चौराहे के पास हिम्मतनगर स्थित पानी की टंकी पर चढ़े युवा बेरोजगारों से करीब 8 घंटे बाद भी कोई भी प्रशासनिक अधिकारी वार्ता के लिए नहीं पहुंचा। एसआई भर्ती रद्द करने की मांग कर रहे विकास बिधूड़ी ने बताया कि सब इंस्पेक्टर भर्ती रद्द करने की मांग को लेकर सरकार लीपापोती कर रही है। उसी के विरोध में और भर्ती परीक्षा को रद्द करने की मांग को लेकर वो पानी की टंकी पर चढ़े हैं। बावजूद इसके सरकार और प्रशासन सोया हुआ है। कोई भी उन्हें मुख्यमंत्री से मिलाना नहीं चाहता।

उन्होंने मंत्री केके विश्नोई और आईएएस शिखर अग्रवाल पर भी आरोप लगाते हुए कहा कि वो नहीं चाहते कि भर्ती परीक्षा रद्द हो क्योंकि उनके कई चाहने वाले इस भर्ती में लगे हैं। मुख्यमंत्री भी उन्हीं के दबाव में हैं। जबकि बीजेपी को वोट इसीलिए दिया था ताकि वो भर्ती परीक्षा को रद्द करे। कई एजेंसियां भी भर्ती परीक्षा को रद्द करने के पक्ष में है लेकिन सरकार अभी भी हाथ पर हाथ धरे बैठी है। सरकार एक मंत्री और एक अधिकारी के दबाव में झुकी हुई है।

उन्होंने कहा कि जब तक उनकी सुनवाई नहीं होती, वे इसी तरह टंकी पर चढ़े रहेंगे। उन पर किसी भी तरह का दबाव बनाने की कोशिश की, तो उनकी जान की जोखिम की जिम्मेदारी प्रशासन और सरकार की होगी। वहीं पानी की टंकी पर चढ़े लादूराम ने कहा कि प्रशासन उन्हें बहलाने फुसलाने की कोशिश कर रहा है लेकिन उनका निवेदन सिर्फ इतना सा है कि उनकी मुलाकात मुख्यमंत्री से कराई जाए या फिर मुख्यमंत्री इस भर्ती परीक्षा को रद्द करने को लेकर एक डेट जारी करें।

गलताजी में सात दिवसीय ब्रह्मोत्सव में दूसरे दिन हुआ ध्वाजारोहण, मूलमंत्र हवन और अष्टोत्तरशत अर्चन

जयपुर। उत्तर भारत की प्रमुख श्री वैष्णव पीठ उत्तर तोदाद्रि मठ श्री गलताजी में मनाए जा रहे ब्रह्मोत्सव के दूसरे दिन विभिन्न दिव्य आयोजन हुए। श्री वैष्णव मण्डल के अध्यक्ष डॉ. लीला पुरुषोत्तम ने बताया कि प्रातः शांति पाठ, द्वारा तोरण पूजन किया गया। इसके पश्चात चतुःस्थान अर्चन, मूलमंत्र व मूर्तिमंत्र हवन किया गया। इसके पश्चात पंचसूक्त से हवन की पूर्णाहुति की गई। इसके पश्चात ध्वाजारोहण किया गया।

मध्याह्न पश्चात भगवान श्रीनिवास के साथ श्री देवी व भूदेवी के साथ दिव्य तिरूमंजन किया गया। तिरूमंजन सर्व औषधि, पंचामृत, मेवे, फलों, फलों के रस, हरिद्रा, कुमकुम, शंख-चक्र, सहस्त्रधारा आदि के साथ किया गया। तत्पश्चात भगवान नारायण एवं महालक्ष्मी जी का अष्टोत्तरशत से पुष्प अर्चन किया गया । इसके पश्चात अष्टिदकपाल बलिहरण किया गया। इसके पश्चात तीर्थ प्रसाद गोष्ठी आदि का वितरण किया गया।

दक्षिण भारत से विद्वान पधारेंगे व वैदिक विधी से पूजा-पाठ, हवन, अनुष्ठान आदि सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त दक्षिण भारतीय पाक-शास्त्री भगवान् को लगने वाले गोष्ठी व अन्य भोग प्रसादी आदि बनायेंगे। दक्षिण भारत से ही भगवान् की माला आदि नित्य मंगाए जायेंगे। दक्षिण भारतीय वाद्यम से सम्पूर्ण श्री गलता तीर्थ गुंजायमान रहेगा। भगवान् को दक्षिण भारत में विशेष रूप से तैयार किये गये आभूषण, वस्त्र आदि धारण कराये जायेंगे एवं दक्षिण भारतीय पात्रों से भगवान् की पूजन, अभिषेक आदि किये जायेंगे। रत्न जडित मुथांगी भगवान् को धारण करायी जायेगी ।

उत्तर भारत की प्रमुख श्री वैष्णव पीठ उत्तर तोदाद्रि मठ श्री गलताजी में ब्रह्मोत्सव के दूसरे दिन विभिन्न दिव्य आयोजन हुए। प्रातः शांति पाठ, द्वारा तोरण पूजन, चतुःस्थान अर्चन, मूलमंत्र व मूर्तिमंत्र हवन किया गया। इसके बाद पंचसूक्त से हवन की पूर्णाहुति की गई।

लाखों की संख्या में श्रद्धालु दर्शन

इस भव्य महोत्सव में नगर, प्रदेश व देश के अनेकों विशिष्ट जनों के साथ-साथ देशभर से श्रद्धालुजन दर्शनार्थ पधारेंगे एवं भगवान् की विशेष कृपा के पात्र बनेंगे। अनेकों विभिन्न उत्सव व आयोजित किये जायेंगे ।

7 दिवसीय महोत्सव में नित्य के भोग, तिरूमंजन, हवन, गोष्ठी आदि के लिए सैकड़ों किलो फल, सब्जियां, दूध, दही, घी, अन्न, मेवे, तिल, फूल, माला, पुष्प आदि उपयोग में लिए जाएंगे।

खुशी व्यास के सिर सजा मिस इटर्नल इंडिया 2024 का ताज

जयपुर। रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगाते रैंप पर हाइवोल्टेज म्यूजिक की धुनों के बीच अपना टैलेंट दर्शाती 30 मॉडल्स में से सबसे बेहतरीन परफॉर्मेंस देकर उड़ीसा की खुशी व्यास ने मिस इटर्नल इंडिया 2024 का खिताब अपने नाम कर लिया। अजमेर रोड़ स्थित द राजबाग रिसॉर्ट में नवीन कुमावत और दीपिका नरूका की अगुवाई में हुए नेशनल लेवल ब्यूटी पेजेंट मिस इटर्नल इंडिया 2024 का ग्रांड फिनाले संपन्न हुआ, जिसमें ज्यूरी मेंबर्स ने साक्षी परमार को फर्स्ट रनर अप, मरीन राणा को सैकंड रनर अप घोषित किया।

जे.के.के. में पंजाबी सूफी नाइट 14 को

जयपुर। जवाहर कला केन्द्र की ओर से 14 नवंबर को पंजाबी सूफी नाइट का आयोजन किया जा रहा है। मध्यवर्ती में शाम 6:30 बजे से होने वाले कार्यक्रम में पंजाबी गीत व सूफी नगमे गूंजेंगे। इसमें प्रसिद्ध गायक जीती जगजीत अपनी सुरीली आवाज के साथ फिजा में मधुरता घोलेंगे।

गौरतलब है कि जीती जगजीत हिंदी, पंजाबी, हरियाणवी, बॉलीवुड सॉन्ग्स, गजल और सूफी संगीत की महफिल का मशहूर नाम है। उन्हें जयपुर रत्न और 20219 में यूथ आइकन अवॉर्ड से नवाजा जा चुका है। जगजीत ने गीत अथरू, पहली वारी और वालियां से श्रोताओं के दिलों में जगह बनाई है।

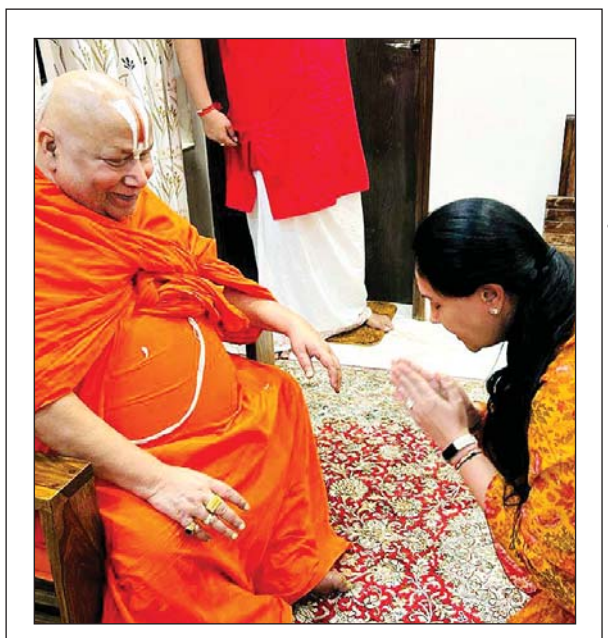

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने रविवार को जयपुर में तुलसी पीठ के संस्थापक और सनातन संस्कृति के ध्वजवाहक, परम पूज्य जगद्गुरु रामभद्राचार्य महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया।

3127 मतदाताओं ने की होम वोटिंग

जयपुर। राजस्थान में उपचुनाव के लिए 7 विधानसभा क्षेत्रों में 85 वर्ष से अधिक आयु के और 40 फीसदी से अधिक दिव्यांगता वाले 3,193 मतदाताओं को होम वोटिंग के लिए निर्धारित प्रारूप 12डी में आवेदन किया था। इनमें से 3,127 मतदाताओं ने अपने मताधिकार उपयोग किया है। इस दौरान 37 मतदाताओं की मृत्यु हो गई और 29 मतदाता निर्धारित समय पर घर पर अनुपस्थित मिले। मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवीन महाजन ने बताया कि होम वोटिंग के लिए 4 नवम्बर से मतदान की प्रक्रिया शुरू हुई थी। यह प्रक्रिया दो चरणों में पूरी हुई है। पहले चरण में मतदान नहीं कर सकने वाले मतदाताओं के लिए मतदान दल दूसरे चरण में उनके घरों पर निर्धारित समय पर वोटिंग के लिए गए। महाजन के अनुसार, होम वोटिंग के लिए आवेदन करने वाले 2,365 वरिष्ठजनों में से 2,306 ने मतदान किया है। इस दौरान 35 बुजुर्गों की मृत्यु हो गई और 24 मतदाता निर्धारित समय पर घर पर नहीं मिले। इसी प्रकार, घर से मतदान का विकल्प चुनने वाले कुल 828 दिव्यांगों में से 821 ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया है। इस दौरान 2 मतदाताओं की मृत्यु हो गई और 5 दिव्यांग निर्धारित समय पर घर पर नहीं मिले।

महेंद्र सिंह मेवाड़ के निधन पर संवेदनाएं जताईं

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने पूर्व सांसद और मेवाड़ के पूर्व राजपरिवार के सदस्य महेंद्र सिंह मेवाड़ के निधन पर गहरी संवेदनाएं व्यक्त की। राठौड़ ने कहा कि ईश्वर दिवंगत आत्मा को श्रीचरणों में स्थान दें और शोक संतप्त परिजनों को यह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करें। महेंद्र सिंह मेवाड़ का निधन प्रदेश के लिए अपूरणीय क्षति है। वहीं भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और चित्तौडगढ़ सांसद सीपी जोशी ने भी पूर्व सांसद एवं महाराणा प्रताप के वंशज महाराणा महेंद्र सिंह मेवाड़ के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

साहित्यकार डॉ. प्रभात कुमार सिंघल जबलपुर में सम्मानित

जयपुर। कोटा के जाने माने लेखक और वरिष्ठ पत्रकार डॉ.प्रभात कुमार सिंघल को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर क्रियाशील संस्था कादंबरी द्वारा जबलपुर में आयोजित अखिल भारतीय साहित्यकार एवं पत्रकार अलंकार सम्मान समारोह में पांच हजार रुपए के स्व. सिद्धार्थ भट्ट सम्मान से सम्मानित किया गया। संस्था अध्यक्ष आचार्य भगवत दुबे, मुख्य अथिति कुलाधिपति भोपाल डॉ.संतोष चौबे और सम्मान प्रदाता श्रीमती मीना पुरुषोत्तम भट्ट ने वैजयंती माला पहनाकर, साल ओढ़ाकर, सम्मान पत्र और राशि प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया। इस अवसर पर देश के विभिन्न अंचलों से आए 118 साहित्यकारों और पत्रकारों को सम्मानित किया गया। संस्था के महासचिव राजेश पाठक प्रवीण ने बताया कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. सिंघल को यह सम्मान इतिहास, पुरातत्व,कला, संस्कृति, पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में समग्र लेखन के लिए प्रदान किया गए। उन्होंने अब तक 51 पुस्तकों का लेखन और संपादन किया है। अपनी 46 वर्ष की पत्रकार यात्रा के दौरान 10 हजार से अधिक आलेख, फीचर, रिपोर्ताज, स्तंभ और संपादकीय, यात्रा संस्मरण, बाल साहित्य, साक्षात्कार आदि विधाओं में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्र - पत्रिकाओं में लिखा है। संस्था की स्मारिका के लोकार्पण में भी इन्हें शामिल किया गया।

युवक के हाथ से मोबाइल छीना

जयपुर । प्रतापनगर थाना इलाके में बाइक सवार दो बदमाश एक युवक के हाथ पर झपट्टा मार कर मोबाइल छीनकर ले गए। पुलिस के अनुसार प्रताप नगर सेक्टर 26 निवासी राकेश ने मामला दर्ज करवाया कि वह बाजार जा रहा था। इसी दौरान बिजली पावर हाउस के पास 26 सेक्टर में बाइक सवार दो बदमाश पीछे से आए और उसके हाथ पर झपट्टा मार कर मोबाइल छीनकर ले गए। इस पर पीड़ित ने थाने पहुंच कर मामला दर्ज करवाया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी। पुलिस इस मामले में घटना स्थल और उसके आस-पास के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है।

नम्बर मिलाइए
9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

वक्फ संशोधन बिल के खिलाफ जोरदार विरोध प्रदर्शन

जयपुर। ज्वाइंट कमेटी तहफ़्फ़ुज़े औक़ाफ़, राजस्थान के संयोजक मुहम्मद नाज़िमुद्दीन ने बताया कि कुछ समय पूर्व भारत सरकार द्वारा वक़्फ़ संशोधन बिल 2024 पार्लियामेन्ट में प्रस्तुत किया गया जो कि वर्तमान में ज्वाइन्ट पार्लियामेन्ट्री कमेटी (जेपीसी) में विचाराधीन है। इस बिल का पूरे देश में विरोध हो रहा है। यह बिल औक़ाफ़ की स्वायत्ता को समाप्त करने और वक़्फ़ जायदादों के संचालन व प्रबन्धन की आज़ादी को समाप्त करने तथा मुसलमानों को वक़्फ़ जायदादों से बेदख़ल करने की सज़िश है तथा संविधान की धारा 25 व 26 में दी गई धार्मिक स्वतन्त्रता की गारन्टी के ख़िलाफ़ है। ज्वाइंट कमेटी तहफ़्फ़ुज़े औक़ाफ़, राजस्थान की ओर से इस बिल के विरोध और वक़्फ़ से सम्बंधित जन जागृति लाने के उद्देश्य से आज तहफ़्फ़ुज़े औक़ाफ कॉन्फ्रेन्स का आयोजन मोती डूंगरी रोड पर किया गया। इस कॉन्फ्रेन्स को विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी, उलैमा व नेताओं ने सम्बोधित किया।

जयपुर में हुई तहफ़्फ़ुज़े औक़ाफ़ कॉन्फ्रेन्स में रविवार को विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी, उलैमा व सांसदों ने सम्बोधित किया।

कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए मलिक मुअतसिम ख़ान (उपाध्यक्ष, जमाअते इस्लामी हिन्द) ने कहा कि आज जयपुर की जनता इतनी बड़ी संख्या में यहां इसलिए आई है कि यह वक्फ बिल लागू ना हो। सरकार को चाहिए कि वो इस बिल को संसद में पेश करने से अपने कदम पीछे हटाए। आज़ादी के पहले से अब तक पिछले सौ सालों में वक्फ बिल में जो भी सुधार हुए हैं यह बिल उन सब सुधारों पर पानी फेरने वाला बिल है। इसलिए इस बिल का विरोध है। वक्फ एक्ट 1995 के सेक्शन 40 में राज्यों के वक्फ बोर्ड के के कामकाज में बारे में बताया गया है लेकिन इस नए बिल में उसको हटा दिया गया है जो कि उसकी रूह था।

कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए मौलाना सैयद तहज़िबुल हसन रिज़वी (इमाम, शिया जामा मस्जिद, रांची, झारखंड) ने कहा कि वक्फ की प्रॉपर्टी ईश्वर प्रॉपर्टी कहलाती है। हमारे पीएम का नारा सबका साथ सबका विकास है उसके खिलाफ वक्फ एक्ट के साथ छेड़छाड़ कर भेदभाव की राजनीति पैदा करना, यह देश के लिए नुकसानदेह है। हम चाहते हैं कि वक्फ ट्रिब्यून को जो दर्जा प्राप्त है वो बाकी रहना चाहिए। यह देश सद्भावना का देश है। सद्भावना से ही हमारे देश का भला हो सकता है।

कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए डॉक्टर क़ासिम रसूल इलियास (स्पोक्स पर्सन, ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड) ने कहा कि मौजूदा हुकूमत मुसलमानों पर लगातार हमले कर रही है। बुल्डोजर, मोबलिंचिंग आदि घटनाएं लगातार हो रही हैं। इसके साथ ही यूसीसी की शुरुआत उत्तराखंड से हो गई है जिसको अब पूरे देश में लागू करने की तैयारी है। मदरसों को भी लगातार टारगेट किया जा रहा है। हमारे लिए वक्फ बिल जिंदगी और मौत का मसला है अगर सरकार ने इस बिल को वापस नहीं लिया तो हम सड़के, विधानसभा, लोकसभा जाम कर देंगे, विरोध के सभी संवैधानिक रास्ते अपनाएंगे लेकिन इस बिल को लागू नहीं होने देंगे।

खोया पाया

श्री दिनेश कुमार गोयल पुत्र श्री मदन लाल गोयल भूखण्ड संख्या-ए-340, "सैग्विंन आफिसर्स केम्पस" का मूल लीजडीड (पट्टा विलेख) साइट प्लान, स्टाम्प खो गये। मिलने पर सूचित करें। मो. 9783393027

प्ररूप-10 नियम 6 (7) देखिए

प्राधिकृत अधिकारी का कार्यालय नगर परिषद झुंझुनू

क्रमांक-9150 **लोक सूचना** दिनांक-08.11.2024

श्री रामेश्वरलाल वर्मा/कजोड़मल, अमित वर्मा, आदित्य वर्मा/रामेश्वरलाल वर्मा निवासी विज्ञान नगर गुढा रोड झुंझुंनू ने इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का गैर-कृषिक आवासीय प्रयोजन के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है-अर्थात

जिले सहित तहसील का नाम	ग्राम का नाम	खसरा सं.	क्षेत्र
झुंझुंनू	झुंझुंनू	2467	कुल रकबा 6.27 है. में से 15014.00 व.मी.

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षर के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ अपने आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा।

यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज 08.11.2024 को जारी की गयी।

अधिशाषी अधिकारी, नगर परिषद झुंझुंनू

काम किए होते तो सीएम को दो-दो बार रामगढ़ नहीं आना पड़ता : सचिन पायलट

रामगढ़ में कांग्रेस प्रत्याशी के समर्थन में सभा कर वोट मांगने पहुंचे पायलट, भंवर जितेंद्र सिंह, टीकाराम जूली, संजना जाटव सहित कांग्रेस नेता

अलवर। रामगढ़ में कांग्रेस प्रत्याशी आर्यन खान के पक्ष में सभा करने पहुंचे कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता सचिन पायलट ने कहा कि आगामी 13 नवंबर को कांग्रेस पार्टी के पक्ष में भारी मतदान कर यहां की जनता कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी जुबेर आर्यन खान को विधानसभा में भेजने का काम करेगी। पायलट ने भाजपा की डबल इंजन की सरकार पर कटाक्ष किया और कहा जब डबल इंजन की सरकार है बहुत काम किए हैं तो क्या जरूरत है मुख्यमंत्री को दो दो बार आने की उनके नाम पर वोट पड़ने चाहिए।

सचिन पायलट ने कहा उपचुनाव हो रहे हैं इस चुनाव से सरकार बदलेगी ऐसा नहीं है। जनता कामों पर निगाहें रखती है। तराजू बराबर होनी चाहिए। राजस्थान में सरकार को बने 11 से 12 महीने हो चुके बेहतर काम करने की बजाएं सरकार को चला नहीं पा रहे हैं। उन्होंने कहा अयोध्या में चुनाव हुए वहां समाजवादी पार्टी का प्रत्याशी चुनाव जीता। उन्होंने कहा कि रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र में दिवंगत जुबेर खान ने अपने काम के दम पर जो पहचान बनाई है जनता इस चुनाव में उन्हें श्रद्धांजलि के रूप में उनके बेटे आर्यन खान को जिताकर चुकाएगी।

पूर्व केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने कहा सत्ताधारी पार्टी के खिलाफ एक मजबूत आवाज के रूप में रामगढ़ की जनता आगामी 13 नवंबर को कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी को जिताने के लिए संकल्पबद्ध है। उन्होंने कहा कि इस उप चुनाव में कांग्रेस का प्रत्येक कार्यकर्ता एक उत्साही अभियान की तरह उपचुनाव की लड़ाई लड़ रहा है। उन्होंने नफरत की राजनीति करने वाली भारतीय जनता पार्टी कि कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि कांग्रेस सरकार के समय की जनकल्याणकारी योजनाओं को बंद करने के सिवा इस सरकार के पास कोई काम ही नहीं है। उन्होंने कहा कि रामगढ़ की जनता को दिवंगत और लोकप्रिय नेता जुबेर खान की कर्मठ छवि आर्यन जुबेर खान में नजर आ रही है।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि चुनाव के तीन दिन शेष बचे हैं ऐसे में कांग्रेस पार्टी का प्रत्येक कार्यकर्ता गांव गांव ढाणी ढाणी जाकर बूथ को मजबूत करने का काम करेगा। उन्होंने कहा कि ऐसा लग रहा है कि राजस्थान के सात सीट नहीं बल्कि रामगढ़ में ही उपचुनाव हो रहा है यहां कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी से घबराई भारतीय जनता पार्टी ने अपनी पूरी फौज लगा दी है। उन्होंने कहा कि रामगढ़ की जनता ने 5 साल के लिए दिवंगत जुबेर खान को यहां से चुना और यह सीट उनकी ही रहेगी ऐसा कांग्रेस की सभा में उमड़ रही भीड़ का स्पष्ट संकेत है। उन्होंने कहा कि संविधान को कमजोर करने वाले भारतीय जनता पार्टी के नेता आज दलित उत्थान की बात कर रहे हैं इस उप चुनाव में उन्हें सबक सिखाना है और आगामी दो दिन में बीजेपी के नेताओं की यहां एंट्री बंद करनी है।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा पर कटाक्ष करते हुए स्वर्गीय राजीव गांधी के लिए उनके द्वारा की गई टिप्पणी पर उन्हें नसीहत देते हुए कहा कि देश को खून पसीने से सींचने वाले और अपनी जान की कुर्बानी देने वाले स्वर्गीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी पर की गई टिप्पणी निंदनीय है।

इस अवसर पर सांसद संजना जाटव, भजनलाल जाटव,पूर्व मंत्री शकुंतला रावत, रघु शर्मा,जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा, विधायक रोहित बोहरा, रूपेंद्र सिंह कुन्नर,दानिश अबरार, ललित यादव, मांगीलाल मीणा, कांति मीणा,घनश्याम मेहर, पूर्व विधायक अमर सिंह जाटव, संजय यादव, संदीप यादव, शिवलाल गुर्जर, विश्राम गुर्जर, ओमप्रकाश गोलियां, हीरालाल कसाना, निहाल गुर्जर, बीड़दा राम,पूरण गुर्जर, मूलचंद गुर्जर, सतीश पटेल, बीपी सुमन सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस के पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

रामगढ़ में कांग्रेस प्रत्याशी आर्यन खान के पक्ष में आयोजित सभा में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सचिन पायलट, नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली आदि ने सभा को संबोधित किया।

कामां में मामी-भांजे का शव कुंडे से लटका मिला

एक रस्सी से लटक कर की खुदकुशी

कामां में मामी-भांजे ने खुदकुशी करने के बाद लोगों की भीड़ एकत्रित हो गई।

कामां (निस)। डीग जिले के कामां थाना इलाके में मामी भांजे का शव पंखे के कुंडे से लटका मिला। जब लोगों को घटना का पता लगा तो, उन्होंने पुलिस को सूचना दी। जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को नीचे उतारा। वहीं एफएसएल की टीम ने तथ्य जुटाए। उसके बाद शवों को पोस्टमार्टम के लिए ले जाया गया।

घटना कामां के अगमा मोहल्ले की है। जहां सीमा (29) अपने पति लाला राम के साथ किराए पर कमरा लेकर रहती थी। सीमा का पति ड्राइवरी का काम करता है। वह घर पर नहीं था। सीमा का भांजा आकाश निवासी सेउ थाना खोह जिला डीग कल अपने घर से निकल आया। जिसके बाद वह अपनी मामी के पास पहुंचा। आकाश के मामा लाला राम

■ पडोसियों ने देखा तो पुलिस को सूचना दी

काम पर गए हुए थे। आज करीब 11 बजे दोनों के शव पंखे के एक ही कुंडे से लटके हुए थे। जब मकान मालिक और आसपास के लोगों ने दोनों के शवों को लटका देखा तो, उन्होंने पुलिस को घटना की सूचना दी। जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंची। दोनों के शवों को नीचे उतार लिया गया है। शवों को पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी पर ले जाया गया। सीमा और लाला राम के दो बच्चे हैं जिसमें 1 लड़का और 1 लडकी है। वहीं आकाश भी शादीशुदा है। उसके पास भी 1 लड़का है। पुलिस ने दोनों मृतकों के परिजनों को घटना की सूचना दे दी है।

घटना का कैसे लगा पता :- सीमा का पति लाला राम पानीपत में ट्रक ड्राइवरी का काम करता है। वह सुबह से अपनी पत्नी सीमा को फोन कर रहा था लेकिन, सीमा फोन नहीं उठा रही थी। इसलिए उसने अपने मकान मालिक को फोन किया। जब मकान मालिक सीमा के कमरे पर गया तो, उसने सीमा और आकाश का शव एक पंखे वे कुंडे और एक ही रस्सी से लटका हुआ देखा जिसके बाद उसने पुलिस को घटना की सूचना दी।

सीमा के बच्चे कल ही अपने मामा के घर गए थे :- सीमा के बच्चों ने बताया कि वह कल ही उन्हें उनके मामा के छोडकर आई थी। सीमा के दो बच्चे हैं। जिसमें बडा वीरेंद्र (12) साल जो 7 वीं में पढता है। बेटी सीता (8) जो 5 वीं में पढती है। उनके मामा कामां थाना इलाके के गांव वार्ड में रहते हैं।

साइबर फ्रॉड मास्टर माइंड प्रशांत सोनी गिरफ्तार

श्रीगंगानगर। साइबर ठगी के मामले में वांछित आरोपी गुरुनगर निवासी 19 वर्षीय प्रशांत सोनी को पुरानी आबादी पुलिस ने गिरफ्तार कर रिमांड पर लिया है। प्रारंभिक तौर पर सामने आया है कि उसने लोगों के 100 से अधिक बैंक खातों का साइबर फ्रॉड की रकम डलवाकर निकलवाने में इस्तेमाल किया है। आरोपी से पूरे मामले की विस्तृत पूछताछ जारी है।

एसएचओ अजयकुमार ने बताया कि आरोपी प्रशांत सोनी तथा उसका भाई मनीष सोनी मिलकर साइबर फ्रॉड का धंधा करते हैं। इन्होंने आगे से आगे टीम बना रखी है जो इनके काम में मदद करती है। अभी प्रशांत सोनी से हुई पूछताछ में उसने बताया है कि उन्होंने लोगों के बैंक खातों को किराए पर लिया हुआ था। इसमें एक खाते में एक से 20 बार तक रुपए ट्रांसफर होते थे। अगर कोई जागरूक पीडित होता तो वह मुकदमा दर्ज करवा देता और पुलिस उस बैंक खाते को फ्रीज कर देती, जिसमें आरोपी रुपए ट्रांसफर करवाते थे। अगर ठगी का शिकार पुलिस तक नहीं पहुंचता था तो एक ही बैंक खाते में कई-कई बार रुपए ट्रांसफर हो जाते थे। इस संबंध में पुरानी आबादी थाना के हैड कांस्टेबल कमलेश कुमार ने 3 नवंबर की रात को आरोपी विनय बाघला पुत्र अशोक कुमार निवासी गली नंबर 7,चक 3 ई छोटी तथा हंसराज पुत्र तारानाथ जाट, निवासी नैणासर जिला चुरू, हाल किरायेदार सेतिया फार्म को गिरफ्तार किया था।

इनके पास से विभिन्न बैंकों की 5 चेक बुक, तीन एटीएम कार्ड तथा एक बैंक पासबुक जब्त की गई थी। आरोपियों ने पूछताछ में बताया कि वे प्रशांत सोनी व मनीष सोनी को बैंक खाते उपलब्ध करवाते हैं। इन खातों में आरोपी साइबर फ्रॉड की राशि डलवाते हैं। इस रकम को एटीएम कार्ड या चेक से नकद निकलवाकर प्रशांत सोनी व मनीष सोनी तक पहुंचाते हैं। आरोपियों पर मामला दर्ज किया हुआ है। आरोपियों के पास से मिली पासबुकों के बैंकों से स्टेटमेंट जुटाए गए। आरोपियों द्वारा इन खातों में अब तक लाखों रुपए जमा हो चुके हैं। मुख्य सरगना प्रशांत सोनी सोनी पुत्र प्रदीप सोनी तथा उसके भाई मनीष सोनी के खिलाफ सदर थाने में मुकदमा दर्ज है। आरोपी भाइयों ने पुलिस जीप को टक्कर मारी और पुलिस कर्मियों को कुचलकर मारने की कोशिश की थी।

अनीता चौधरी की हत्या के मुख्य आरोपी से पूछताछ

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में ब्यूटीशियन अनीता चौधरी की हत्या के मामले के मुख्य आरोपी गुलामुद्दीन से पुलिस ने कड़ाई से पूछताछ की। हालांकि दो दिन की पूछताछ में पुलिस इस पूरे मामले का खुलासा नहीं कर सकी है। गुलामुद्दीन 7 दिन के रिमांड पर हैं। तथा पुलिस अलग अलग ऐंगल से पूछताछ कर रही है। इस पूरे मामले में और भी कई किरदार शामिल थे या नहीं इनके जवाब ढूंढने अभी तक बाकी है। पुलिस इस मामले में कुछ भी बोलने से कतरा रही है।

जानकारी के अनुसार अब तक की पूछताछ में गुलामुद्दीन लूट के इरादे से हत्या करने की बात कह रहा है। अनीता को लूट के लिए गुलामुद्दीन ने नशे की ओवरडोज दे दी थी इसके चलते वह होश में नहीं आ पाई। इस पर उसने उसकी हत्या कर दी और शव के टुकड़े कर के घर के आगे गाड़ दिए।

इधर इस पूरे मामले को लेकर पुलिस अनुसंधान जारी होने की बात कह रही है। लेकिन इस पूरी हत्या के मामले में कई पहलू अभी भी अनसुलझे हुए हैं। गुलामुद्दीन के पुराने रिकॉर्ड को देखते हुए पुलिस यह मान रही है कि उसने लूट के इरादे से अनीता की हत्या की थी लेकिन पूरी जांच होने तक पुलिस गुलामुद्दीन के बयानों पर विश्वास नहीं कर रही है। बता दें कि अनीता और गुलामुद्दीन दोनों एक दूसरे से संपर्क में थे और इसीलिए गुलामुद्दीन ने अनिता को मिलने के लिए बुलाया था। अनीता रात को गुलामुद्दीन के घर पर ही रुकने वाली थी। इसके चलते गुलामुद्दीन ने अपनी पत्नी और बच्चों को उनकी बहन के घर भेज दिया था।

अंतर्राज्यीय बाइक चोर गिरोह का पर्दाफाश

कोटा, (निसं)। दादाबाड़ी थाना इलाके में पुलिस टीम ने कार्यवाही को अंजाम देते हुए अंतरराज्यीय बाइक चोर गिरोह का पर्दाफाश किया। पुलिस टीम ने कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया साथ ही दो बालकों को निरुद्ध कर पकड़े गए आरोपियों से चोरी की 9 बाईक को बरामद करने में सफलता हासिल की।

शहर पुलिस अधीक्षक अमृता दुहन ने बताया कि शहर में बढ़ रही बाइक चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए शहर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दिलीप सैनी के निर्देशन में शहर पुलिस उप अधीक्षक योगेश शर्मा के सुपरविजन में दादाबाड़ी थाना अधिकारी नरेश कुमार मीना के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। शहर एसपी ने बताया कि फरियादी राजेंद्र कुमार ने दादाबाड़ी थाने में 18 अगस्त को रिपोर्ट दर्ज रही थी कि 17 अगस्त को जब है घर से गोदावरी मंदिर में आयोजित सुंदरकांड में गया था और बाईक को मंदिर के बाहर खड़ा किया था जब वह सुंदरकांड समाप्त होने पर बाहर आया तो उसको अपनी मोटरसाईकिल कहीं नहीं प्राप्त हुई पुलिस ने फरियादी राजेंद्र कुमार की रिपोर्ट का मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी। शहर पुलिस अधीक्षक ने कहा कि पुलिस टीम ने कार्रवाई करते हुए बाईक चोरी के दो आरोपी बालूराम और भावेश को गिरफ्तार किया।

मकान गिरा, बच्ची की मौत

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर पुलिस कमिश्नरेट के मंडोर क्षेत्र में निर्माणाधीन मकान गिरने का मामला सामने आया है। इस हादसे में एक 12 साल की बच्ची की मौत होने की सूचना है। हादसे में परिवार के तीन अन्य सदस्य भी घायल हुए हैं जिनका हॉस्पिटल में इलाज किया जा रहा है। फिलहाल घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस भी मौके पर पहुंची और जानकारी ली। मंडोर क्षेत्र के दईजर मंडल नाथ में खनन के दौरान हुआ। यहां ब्लास्ट की वजह से समीप की बस्ती में हादसा हो गया। यहां पर एक मकान में निर्माण कार्य चल रहा था। जिसकी छत अचानक से गिर गई। इसके चलते नीचे मौजूद एक 12 साल की बच्ची की मौत हो गई। वहीं परिवार के तीन अन्य सदस्य भी घायल हो गए।

घने कोहरे से 4 एक्सीडेंट, एक की मौत

बीकानेर। सर्दी की दस्तक के साथ ही सीजन के पहले घने कोहरे में रविवार को महाजन थाना क्षेत्र में एक ही दिन में 4 चार सड़क दुर्घटनाएं हुई। इन हादसों में एक की मौत हो गई।

महाजन पुलिस के अनुसार रविवार सुबह घने कोहरे में भारत माला सड़क मार्ग जैतपुर टोल प्लाजा के पास आगे चल रहे एक ट्रक ने अचानक ब्रेक लगा दिया। पीछे से आ रही पिकअप गाड़ी अंदर जा घुसी और उसके पीछे आ रहे एक तेल के टैंकर भी उसके अंदर जा घुसा। एक ही स्थान पर तीन वाहनों की दुर्घटना हो गई। जिसमें पिकअप चालक को हल्की चोटें आई। वहीं उसके साथ चालक के ही भाई मोतीराम पुत्र उदयराम निवासी राजासर उर्फ करणी सर तहसील लूणकरणसर की गंभीर चोटे आई और एक की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची।

दुर्घटना देखकर सड़क मार्ग पर चलने वाले अन्य वाहनों ने भी रोक कर आवागमन सही करवाने में सहयोग किया। प्रत्यक्ष दर्शियों ने बताया कि जैतपुर से हनुमानगढ़ जाने वाले मार्ग पर मिट्टी डालकर बंद कर देने की वजह से टोल प्लाजा संचालकों से ट्रक चालकों का विवाद हो गया। इस दौरान हाथापाई तक की नौबत भी आ गई थी। पुलिस की बीच बचाव में विवाद को निपटाया गया। पिकअप चालक रामकुमार पुत्र उदयराम ने आगे चल रहे ट्रक चालक के खिलाफ मामला दर्ज करवाया। शव का पोस्टमार्टम करवा कर शव परिजनों को सुपुर्द किया। वहीं भारतमाला सड़क मार्ग पर जैतपुर से हनुमानगढ़ की तरफ दो ट्रक में दुर्घटना हो गई। आगे चल रहे ट्रक द्वारा अचानक ब्रेक लगाने से पीछे से आ रहे ट्रक उसके अंदर जा घुसा। जिसमें ट्रक में सवार पूरा राम पुत्र रेखाराम निवासी मुंडवा नागौर ,गिरधारी पुत्र छोटू राम सतेरण नागौर घायल हो गए। जिसका प्राथमिक उपचार महाजन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में करने के बाद बीकानेर रैफर किया गया।

इसके अलावा राष्ट्रीय राजमार्ग 62 पर महाजन से अरजनसर की तरफ 7 किलोमीटर पर आगे चल रहे ट्रक ने ब्रेक लगा दिया। अधिक कोहरा होने के कारण पीछे से आ रही कार के चालक को भी दिखाई नहीं दी और हादसा हो गया। उसके पीछे-पीछे एक और कार अंदर जा घुसी। इस दुर्घटना में हालांकि किसी के घायल होने जैसी स्थिति नहीं हुई। चौथी दुर्घटना समीपवर्ती गांव सुई से महाजन की तरह आगे चल रहे ऊंट गाड़े में पीछे से आ रही बोलेरो आ भिड़ी। हालांकि इस दुर्घटना में भी किसी को कोई गंभीर चोट नही आई।

युवक ने गला काट की जीवन लीला समाप्त

अजमेर, (कासं)। युवक ने स्वयं का गला काटकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। परिजन की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलि स ने घटना स्थल मृतक के कमरे का जायजा लिया और एफएसएल टीम ने साक्ष्य जुटाए। पुलिस को मौके कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। मृतक युवक किराणा की दुकान चलाता था। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सिविल लाइन थाना पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पुलिस अनुसंधान भवन के सामने स्थित मकान में रहने वाले रणजीत नामक युवक ने स्वयं का गला काटकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली है। आत्महत्या करने से पहले उसने अपनी पत्नी को गुडबॉय का मैसेज भेजा था। उपअधीक्षक रूद्रप्रताप और सिविल लाइन थाना प्रभारी छोटे लाल मय पुलिस जाप्ता मौके पर पहुंचे और परिजन से घटना की जानकारी ली। परिजन ने पुलिस को बताया कि मृतक कमरे में अकेला था।

जैसे ही उन्हें जानकारी मिली तो घर में कोराहम मच गया। परिजन का रो-रोकर बुरा हाल है। मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक के कमरे की तलाशी ली। कमरे में रखी अलमारी व अन्य समानों से हादसे से जुड़े साक्ष्य जुटाने का प्रयास किया। पुलिस ने मृतक का मोबाइल फोन अपने कब्जे में ले लिया है। फिल हाल युवक के आत्म हत्या के कारणों का खुलासा नहीं हुआ है।

ट्रैक्टर-ट्रॉली में पीछे से घुसी स्लीपर कोच, ट्रैक्टर चालक घायल

हलैना (निस)। जयपुर-आगरा नेशनल हाइवे स्थित हलैना-नसवारा के मध्य एक डीजल पम्प के पास ट्रैक्टर-ट्रॉली में पीछे से एक स्लीपर कोच घुस गई,जिस हादसे में ट्रैक्टर-ट्रॉली चालक घायल हो गया और कोच में सवार चालक-परिचालक सहित 30 यात्री बाल-बाल बच गए।

■ स्लीपर कोच में सवार 30 यात्री बाल-बाल बचे

■ गोरखपुर से झुंझुनू जा रही थी स्लीपर कोच

सूचना पर हलैना थाना के एएसआई रामू सिंह एवं हेड-कांस्टेबिल चन्दन सिंह मय जाप्ता के पहुंचे और घायल ट्रैक्टर-ट्रॉली चालक को एम्बूलेंस-108 की मदद से उसे हलैना के सरकारी अस्पताल भर्ती कराया,जहां से उसे भरतपुर के आरबीएम अस्पताल को रैफर कर दिया। कोच में सवार सभी सवारियों को यथा स्थान के लिए अन्य वाहनों में सवार कर रवाना किया और क्षितग्रस्त दोनों वाहनों को कब्जे में लेकर पुलिस थाना लाया गया।

एएसआई रामू सिंह एवं हेड-कांस्टेबिल चन्दन सिंह ने बताया कि रविवार की रात करीब ढाई बजे सूचना प्राप्त हुई कि हलैना-नसवारां मे मध्य स्थित यादव डीजल पम्प के सामने सडक हादस हो गया है। सूचना प्राप्त होते ही मय जाप्ता के घटना स्थल पहुंचे। जहां स्लीपर कोच की सवारी फोरलेन किनारे बैठी तथा ट्रैक्टर-ट्रॉली चालक घायल हालत में मिला।

पुलिस ने एम्बूलेंस-108 की मदद से घायल ट्रैक्टर-ट्रॉली चालक को हलैना के सामुदायिक चिकित्सालय में भर्ती कराया, जहां से उसे भरतपुर के आरबीएम अस्पताल को रैफर कर दिया। उन्होने बताया कि स्लीपर कोच में सवार सभी यात्रियों को अन्य वाहनों से यथा स्थान भेज दिया गया। ये स्लीपर कोच उत्तरप्रदेश प्रान्त के गोरखपुर से झुंझुनू को जा रही थी और उसमें 30 लोग सवार थे। जिला परिवहन अधिकारी अजय मृदगल ने सड़क हादसे की जानकारी दी और साथ ही दूसरी हादसे की भी जानकारी ली।

नागा बाबा बगीची के महंत सुरेश गिरी पर हमला, आरोपी गिरफ्तार

महाराज के साथ हुई घटना के बाद मंदिर के पास लगी सभी दुकानों को रखा बंद

पाली, (नि.सं.)। पाली में नागा बाबा बगेची गणेश मंदिर के 60 वर्षीय महंत सुरेश गिरी पर रविवार सुबह करीब पौने छह बजे साधु बनकर बगेची में रूके एक 32 साल के युवक ने चाकू से हमला कर दिया। बगेची में मौजूद दूसरे संत और श्रद्धालुओं ने उन्हें छुड़ाया, वरना महंत की हत्या कर देता।

घटना के बाद आरोपी नग्न हालत में बगेची से निकल गया। वहां लगे कैमरे में पूरी घटना कैद हो गई। मामले में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए एसपी ने नाकाबंदी करवाई और घटना के कुछ घंटे बाद ही आरोपी साधु को नया गांव क्षेत्र से हिरासत में लिया है। जिससे पूछताछ जारी है। जानकारी के अनुसार 32 साल का भवानीशंकर नाम का एक साधु शनिवार रात करीब साढ़े 9 बजे पाली के नागा बाबा बगेची में रूका। उसके साथ दो काले रंग के डॉग भी थे। रविवार सुबह जब मंदिर में आरती हो रही थी। इस दौरान बगेची के महंत सुरेशगिरी ने आरोपी साधु भवानी शंकर से उसका परिचय पूछा और किस आश्रम से आए इसके बारे में जानकारी लेनी चाहिए। इस पर आरोपी साधु गुस्सा हो गया। उसने काले रंग की कंबल ओढ़ रखी थी जिससे खोल दिया और चाकू से महंत सुरेश गिरी पर चाकू से हमला कर दिया लेकिन महंत सुरेश गिरी ने आरोपी का मुकाबला किया। दोनों ने एक-दूजे के बाल पकड़ लिए। हंगामा होते देख आश्रम में मौजूद दूसरे संत और श्रद्धालुओं ने महंत को छुड़ाने का प्रयास किया लेकिन कामयाब नहीं हुए। ऐसे में एक संत ने लाठी से आरोपी पर वार किए। जिससे वह महंत सुरेशगिरी को छोड़कर एक कम्बल ओढ़कर बगेची से फरार हो गया।

चाकू से किए महंत पर चार-पांच वार किए हमले में आरोपी ने महंत पर चाकू से चार-पांच वार किए। महंत के गले, सीने, पेट, हाथ पर वार हुए। उन्हें तुरंत इलाज के लिए पाली के बांगड़ हॉस्पिटल लाया गया। पुलिस की प्रारंभिक जांच में सामने आया कि आरोपी ने रंजिश के चलते महंत पर हमला किया। आरोपी से फिलहाल कोतवाली थाने में पूछताछ जारी है।

■ हॉस्पिटल में लगी भक्तों की भीड़, पूर्व विधायक, कलेक्टर एसपी भी पहुंचे

हॉस्पिटल घटना की जानकारी मिलने पर पूर्व विधायक ज्ञानचंद पारख, जिला कलेक्टर एलएन मंत्री, डी आई जी प्रदीप मोहन शर्मा,एसपी चूनाराम जाट सहित अधिकारी ओर कई भक्त बांगड़ हॉस्पिटल पहुंचे। एसपी ने मामले की गंभीरता को देखते हुए नाकाबंदी करवाई। और घटना के कुछ घंटे बाद ही आरेपी साधु को नया गांव क्षेत्र से पुलिस ने पकड़ा और कोतवाली थाने लाकर उससे पूछताछ की जा रही है। घटना की जानकारी मिलने पर कोतवाली थाने आईजी प्रदीप मोहन शर्मा भी पहुंचे। मामले की गंभीरता को देखते हुए बगेची के बाहर पुलिस जाप्ता तैनात किया गया। कोतवाल किशोरसिंह, सदर थानाप्रभारी अनिल विश्नोई, औद्योगिक थानाप्रभारी पाना चौधरी पुलिस जाप्ते के साथ इस आरोपी को पकड़ने में जुटे रहे।

सामान में जोधपुर हॉस्पिटल की पर्ची नागा बाबा बगेची में मिले आरोपी के सामान की जांच के दौरान पुलिस को जोधपुर के मथुरादास हॉस्पिटल की एक पर्ची और कुछ सामान मिला। हॉस्पिटल की पर्ची पर साधु का नाम भवानी शंकर लिखा हुआ मिला। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विपिन शर्मा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके बताया कि सवेरे नागा बाबा बगीची के संत के साथ हुई मारपीट में 300 से अधिक पुलिस के जवानों ने मिल कर के 1 घंटे के अंदर 32 वर्षीय आरोपी शंकर पुत्र: मथुरालाल निवासी नाहरगढ़ को गिरफ्तार किया। साथ ही उन्होंने बताया कि पूर्व में भी मारपीट और छेड़छाड़ के 2 मामले दर्ज हैं। जो पहले भी 10 महीने तक जेल में सजा काट चुका है। पुलिस ने बताया कि वह रामदेवरा भी 2 से 3 दिन तक यह रुका था और यह से जोधपुर आया और कल रात को पाली आया और नागा बाबा बगीची रुका। पुलिस ने बताया कि वह साथ में थे 2 कुत्ते को काला भैंरू का रूप मानता था।

महंत सुरेश गिरि पर हमला करने के आरोपी साधू को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

उद्यान ठेकेदार को डेढ़ करोड़ रु. के 3 टैंडर देने के लिए अफसरों ने बदल डाली शर्तें

मालवीय नगर, मानसरोवर और जगतपुरा-सांगानेर में खेल उपकरणों के रखरखाव के टैंडर में भारी गड़बड़झाला

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। ग्रेटर नगर निगम की उद्यान शाखा में चहेते ठेकेदार को करीब डेढ़ करोड़ रु. का टैंडर देने के लिए स्वायत्त शासन विभाग द्वारा तय की गई निविदा शर्तों से छेड़छाड़ कर और ठेकेदार द्वारा किए गए पुराने कार्यों की "सिंगल वर्क परफॉर्मेंस" बनाकर देने का मामला सामने आया है।

निगम अधिकारियों की इस मेहरबानी का नतीजा यह हुआ कि फर्म मैसर्स जसवाल एंटरप्राइजेज़ को शहर के विभिन्न सार्वजनिक पार्कों में लगे हुए खेल उपकरणों की मरम्मत और रखरखाव के करीब डेढ़ करोड़ रु. लागत के 3 टैंडर मिल गए, जबकि नियमानुसार यह फर्म निविदा की तकनीकी जांच में बाहर होनी थी। यह टैंडर मालवीय नगर क्षेत्र के लिए 54.44 लाख, मानसरोवर के 50.12 और जगतपुरा-सांगानेर के लिए 42.93 लाख रु. के थे।

सूत्रों की मानें तो ग्रेटर निगम की उद्यान शाखा ने फर्म मैसर्स जसवाल एंटरप्राइजेज को 22 अगस्त 2024 को एक "वर्क परफॉर्मेंस" बनाकर दी, जिसमें मालवीय नगर, जगतपुरा, मानसरोवर, सांगानेर, विद्याधर नगर, मुरलीपुरा और झोटवाड़ा में ठेकेदार द्वारा वर्ष 2023 में विभिन्न जिम उपकरणों की मरम्मत और

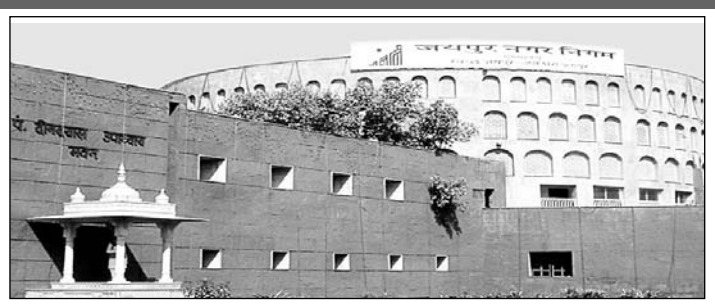

रखरखाव कार्य का 51.35 लाख रु. का एक अनुभव प्रमाण पत्र जारी किया गया।

चूंकि पिछले दिनों स्वायत्त शासन विभाग ने सभी टैंडर में भाग लेने वाले ठेकेदारों के लिए अनुभव की कुछ शर्तें तय की थी। जिसके मुताबिक टैंडर में भाग लेने वाली फर्म के पास, पिछले 3 वर्षों में निविदा की कुल राशि का 80 प्रतिशत का 1 अनुभव अथवा 50-50 प्रतिशत लागत के दो अनुभव अथवा 40-40 प्रतिशत लागत राशि के 3 अनुभव प्रमाण पत्र होने जरूरी हैं, जो कि समान प्रकृति के कार्य का होना चाहिए। यानि कि उद्यान में कार्य करने वाला ठेकेदार किसी अन्य कार्य जैसे सिविल अथवा मैकेनिकल अथवा अन्य कार्य का अनुभव पेश कर सकता।

सूत्रों का कहना है कि मैसर्स जसवाल एंटरप्राइजेज के पास पूर्व में किए गए किसी भी कार्य की लागत राशि इतनी नहीं थी कि वह 1.5 करोड़ रु. का टैंडर ले सके। इसलिए उसने अधिकारियों से सांठगांठ करके मालवीय नगर, जगतपुरा, मानसरोवर, सांगानेर, विद्याधर नगर, मुरलीपुरा और झोटवाड़ा में विभिन्न जिम उपकरणों की मरम्मत और रखरखाव कार्य के 51.35 लाख रु. का सिंगल अनुभव प्रमाण पत्र बनवा लिया। जबकि नगर निगम ने जो "सिंगल वर्क परफॉर्मेंस" जारी की है, उसमें भी लिखा है कि इस फर्म को 3 अगस्त 2023 को क्रमशः 60-63 तक चार वर्क ऑर्डर जारी किए थे।

निगम की उद्यान शाखा ने वर्ष 2023 के इन चार कार्यों का सिंगल अनुभव प्रमाण पत्र फर्म मैसर्स जसवाल एंटरप्राइजेज़ को वर्ष 2024 में हुए जिम उपकरणों के नए टैंडर से पहले बनाकर दिया, जिसे इस फर्म ने उपयोग में लेते हुए मालवीय नगर में 54.44 लाख, मानसरोवर में 50.12 लाख और जगतपुरा-सांगानेर में 42.93 लाख रु. का टैंडर ले लिया।

जबकि स्वायत्त शासन विभाग ने इस बार तमाम टैंडरों में कार्य की गुणवत्ता सुधारने के लिए अनुभव की शर्तें रखी थी। नियमानुसार कोई भी फर्म अधिकतम 40-40 प्रतिशत लागत राशि के 3 कार्यों का अनुभव जोड़कर नए टैंडर में शामिल हो सकता था, लेकिन इस फर्म ने चार कार्यादेशों का एक अनुभव बनाया।

मजेदार बात यह है कि स्वायत्त शासन विभाग के द्वारा आदेश जारी कर अनुभव की शर्तें तय करने के बाद ग्रेटर निगम प्रशासन ने भी उद्यान शाखा के टैंडरों में अनुभव लागू किया था, जिसके लिए उच्चाधिकारियों की एक कमेटी की बैठक भी हुई थी। इस बैठक में अतिरिक्त आयुक्त, वित्तीय सलाहकार, उपायुक्त मुख्यालय, उपायुक्त उद्यान, वरिष्ठ लेखाधिकारी, ए.सी.पी. और कनिष्ठ अभियंता शामिल हुए थे। उन्होंने भी अनुभव की इन शर्तों पर सहमति दी थी। इसके बावजूद भी अगस्त-2024 में उद्यान शाखा ने यह गड़बड़झाला कर दिया।

- **स्वायत्त शासन विभाग की शर्तों के मुताबिक टैंडर में भाग लेने वाली फर्म के पास, पिछले 3 वर्षों में निविदा की कुल राशि का 80 प्रतिशत का 1 अनुभव अथवा 50-50 प्रतिशत लागत के दो अनुभव अथवा 40-40 प्रतिशत लागत राशि के 3 अनुभव प्रमाण पत्र होने जरूरी हैं, जो कि समान प्रकृति के कार्य का होना चाहिए था।**
- **इसके बावजूद ग्रेटर नगर निगम प्रशासन ने फर्म मैसर्स जसवाल एंटरप्राइजेज़ ने वर्ष 2023 में मालवीय नगर, जगतपुरा, मानसरोवर, सांगानेर, विद्याधर नगर, मुरलीपुरा और झोटवाड़ा में विभिन्न जिम उपकरणों की मरम्मत और रखरखाव के चार कार्यादेशों की राशि का 51.35 लाख रु. का एक अनुभव प्रमाण पत्र बना दिया।**

50 करोड़ की लागत से होंगे जयपुर शहर में विकास कार्य

जयपुर (कासं)। जयपुर विकास आयुक्त आनन्दी की अध्यक्षता में गत बुधवार को जेडीए के मंथन सभागार में पीडब्ल्यूसी की बैठक संपन्न हुई थी। बैठक में 50 करोड़ रूपये के कार्य स्वीकृत किये गये, जिससे जयपुर शहर के विकास को गति मिलेगी।

जोन-5 में सहकार मार्ग से शिप्रा पथ वाया करतारपुरा, महेश नगर, गोपालपुरा एवं शांति नगर मुख्य सड़क तक आरआरवीपीएनएल द्वारा किए गए रोडकट की मरम्मत एवं नवीनीकरण कार्य के लिए कार्योत्तर 6.05 करोड रूपये की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति दी गई। जोन 10 में खो-नागोरियान तिराहा से दांतली आरओबी तक गोनेर रोड (डीएलपी भाग को छोड़कर) के नवीनीकरण एवं सुदृढ़ीकरण कार्य के लिए 2.87 करोड रूपये मंजूर किए गए।

जोन-9 में एयरपोर्ट रोड से हल्दी घाटी मार्ग (मौसम विभाग रोड) को जोड़ने वाली 160 फीट चौड़ी सड़क के सुदृढ़ीकरण एवं नवीनीकरण कार्य के लिए संशोधित 5.02 करोड रूपये की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति दी गई। जोन-10 में जेडीए योजना गोविंदपुरा रोपाड़ा और पहुंच मार्ग (हेरिटेज सिटी) में मिट्टी भराई कार्य एवं विभिन्न विकास कार्य हेतु 6.68 करोड रूपये मंजूर किए गए।

न्यू सांगानेर रोड मानसरोवर मेट्रो स्टेशन से सांगानेर आरओबी तक सड़क चौड़ाईकरण में आने वाली मौजूदा एचटी/एलटी लाइनों को स्थानांतरित करने और हटाने तथा स्ट्रीट लाइट लगाने के कार्य के लिए 7.74 करोड रूपये की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति दी गई।

जगतपुरा आरओबी से सीबीआई फाटक तक नवनिर्मित 160 फीट रोड पर एचटी/एलटी लाइनों, बिजली के खंभों और ट्रांसफार्मर और पी एंड एफ स्ट्रीट लाइट को स्थानांतरित करने/उखाड़ने के कार्य के लिए 3.68 करोड रूपये की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति दी गई।

जोन-6 में बृज कॉलोनी एस-1बी बालाजी नगर एस-1ए और लोहा मंडी रोड राइजिंग मेन पर पीएचईडी द्वारा किए गए रोड के मरम्मत कार्य के लिए 8.17 करोड रूपये की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति दी गई। जोन-12 की विभिन्न कॉलोनियों में जल वितरण पाइपलाइन बिछाने के लिए पीएचईडी द्वारा किए गए रोड कट के नवीनीकरण और मरम्मत कार्य के लिए 5.12 करोड रूपये की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति दी गई। जोन-11 में पालडी परसा (160 फीट) से बगरू रीको क्षेत्र तक सडक 100 फीट सडक के नवीनीकरण एवं सुदृढीकण हेतु 4.69 करोड रूपये की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति दी गई है।

विधानसभाध्यक्ष देवनानी ने किए इंडोनेशिया में मंदिरों के दर्शन

विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी रविवार को इंडोनेशिया पहुंचे, उन्होंने बाली में मंदिरों के दर्शन किए।

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी रविवार को इंडोनेशिया पहुंचे। देवनानी ने इंडोनेशिया के बाली में मंदिरों के दर्शन किए।

देवनानी ने बाली में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सदस्यों और अधिकारियों के साथ विभिन्न पर्यटन, आध्यात्मिक और ऐतिहासिक महत्व के स्थलों का दौरा किया। देवनानी ने परिषद के सदस्यों और अधिकारियों से सनातन संस्कृति के संबंध में चर्चा की। देवनानी ने कहा कि भारत में विभिन्न आध्यात्मिक और ऐतिहासिक स्थलों को विकसित किया जा रहा हैं। देवनानी ने बताया कि राजस्थान में विधानसभा में राजनीतिक आख्यान संग्रहालय का निर्माण किया गया है। इस संग्रहालय में लोकतंत्र से संबंधित विभिन्न पक्षों को प्रदर्शित किया गया है। यह संग्रहालय विभिन्न देशों से आने वाले पर्यटकों को विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। संग्रहालय में राजस्थान से संबंधित सभी जानकारी को एक स्थान पर संकलित किया है देवनानी में प्रवासियों से कहा कि बच्चों के साथ भारत आएं।

देवनानी ने कहा कि इंडोनेशिया में लोगों का अनुशासन और अभिवादन के लिए नमस्ते करने का भाव उन्हें बहुत ही पसंद आया है।

जैन मंदिरों में धार्मिक आयोजनों की धूम मची

जयपुर। जैन धर्म के दूसरे बड़े पर्व अष्टानिका महापर्व के मौके पर शहर के दिगंबर जैन मंदिरों में आठ दिनों तक श्री सिद्ध चक्र महामंडल विधान पूजा, विश्व शांति महायज्ञ, श्री नंदीश्वर महामंडल विधान पूजा, कल्पद्रुम महामंडल विधान पूजा तथा शाम को महाआरती, भक्ति संध्या, सांस्कृतिक कार्यक्रम होंगे।

इस दौरान 13 नवंबर को अठारहवें तीर्थंकर भगवान अरहनाथ का ज्ञान कल्याणक तथा 15 नवम्बर को तीसरें तीर्थंकर भगवान संभवनाथ का जन्म कल्याणक दिवस मनाया जाएगा। दुर्गापुरा के श्री चन्द्रप्रभू दिगम्बर जैन मंदिर में मुनि पावन सागर महाराज ससंघ के सान्निध्य में अष्टानिका महापर्व मनाया जाएगा। 10 नवम्बर को दोपहर एक बजे से मुनिश्री का पिच्छिका परिवर्तन समारोह होगा। मालवीय नगर के सैक्टर 7 स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में विधानाचार्य पं. विमल कुमार जैन बनेठा के निर्देशन में अष्टानिका महापर्व के दौरान 8 से 16 नवंबर तक सिद्ध चक्र महामण्डल विधान पूजा होगी।

मानसरोवर के वरुण पथ स्थित श्री दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य शशांक सागर महाराज ससंघ के सान्निध्य में विधानाचार्य पं. प्रद्युम्न जैन शास्त्री के निर्देशन में 8 से 16 नवम्बर तक सिद्ध चक्र महामण्डल विधान पूजा का आयोजन किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि अष्टानिका महापर्व वर्ष में तीन बार कार्तिक, फाल्गुन एवं आषाढ माह में मनाया जाता है। महासती मैना सुंदरी ने अपने पति श्रीपाल के कुष्ठ रोग निवारण के लिए आठ दिनों तक सिद्ध चक्र महामण्डल विधान पूजन किया था। तीर्थंकरों के अभिषेक जल के छींटों से पति का रोग समाप्त हो गया।

"बटेंगे तो कटेंगे" पोस्टर लगाने वाले व्यापारी को धमकी मिली

विदेश से फोन करने वाले बदमाशों ने 10 दिन में गोली मारने की धमकी दी

जयपुर। बजाज नगर इलाके में "बटेंगे तो कटेंगे" का पोस्टर लगाने वाले व्यापारियों के पास धमकी आने का मामला सामने आया है। कॉल विदेशी नंबर से आए थे। कॉल कर्ता ने कहा कि 10 दिन में गोली मार देंगे। गत 8 नवंबर को 4 घंटे में एक व्यापारी के पास 48 कॉल आए हैं। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस के अनुसार बरकत नगर के व्यापारी रजत परनामी ने बताया कि 8 नवंबर की शाम 7 बजे से रात 11 बजे तक उनके नम्बर पर 48 वॉट्सऐप कॉल आए। इसमें से किसी कॉल को रिसीव नहीं किया। जिन नंबर से फोन आए, वे सभी विदेश के थे। रजत की रिपोर्ट पर पुलिस ने शिकायत दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इस तरह से धमकी देने की पहली रिपोर्ट 2 नवंबर को दर्ज हुई थी। गत 9 नवंबर को दूसरी रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। फिलहाल पुलिस जांच में जुटी है। दोनों व्यापारियों को अनजान नंबरों से आने वाले वॉट्सऐप कॉल को अटेंड नहीं करने को कहा है।

रजत परनामी और पंकज गुप्ता ने दीपावली के त्योहार पर ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए एक पोस्टर लगाया था। इसमें उन्होंने लिखवाया था कि "बटेंगे तो कटेंगे"। दीपावली की खरीदारी उनसे करें, जो आपकी खरीदारी से दीपावली मन सके। इस पोस्टर को फेसबुक, इंस्टाग्राम सहित अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर कुछ लोगों ने वायरल कर दिया। देखते ही देखते दोनों व्यापारियों को यूके, लेबनान, कजाकिस्तान और पाकिस्तान से वॉट्सऐप कॉल आने लगे। कॉल करने वाले लोग जान से मारने की और देख लेने की धमकी देने लगे। कुछ लोगों ने वॉट्सऐप पर मैसेज भेज कर 10 दिन में गोली मारने की धमकी तक दे डाली है। व्यापारी पंकज गुप्ता ने बताया कि धनतेरस के दिन पोस्टर लगाया था। यह पोस्टर केवल लोगों को आकर्षित करने के लिए लगाया गया था। किसी को भी आहत करने की कोई मंशा नहीं थी। फिलहाल मामला दर्ज कर पुलिस जांच में जुटी है।

पुलिस ने बताया कि मामला दर्ज कर साइबर सेल के सहयोग से जांच की जा रही है। फिलहाल इस मामले में कोई ठोस जानकारी सामने नहीं आई है।

- **बताया जा रहा है कि व्यापारी के पास 8 नवंबर को महज 4 घंटे में 48 फोन कॉल्स आए, पुलिस जांच में जुटी**
- **बताया जा रहा है कि वॉट्सऐप कॉल यू.के. लेबनान, कजाकिस्तान और पाकिस्तान से आ रहे हैं**

सार-समाचार

दिवाली मिलन समारोह मनाया

जयपुर। पिंक क्लब की ओर से थीम 'रॉयल लुक' पर दिवाली मिलन समारोह मनाया गया। जिसमें महिलाओं ने सज-संवर कर फ़िल्मी गीतों और गानों पर डांस किया व गेम्स खेले। वैडिंग सीजन को देखते हुए महिलाओं ने वैडिंग लुक और ज्वैलरी पर भी चर्चा की। सुषमा, डॉ. उषा, प्रमिला, शीला, सुमित्रा, अमिता, डॉ.लक्ष्मी, शशि, लता, गायत्री, दिव्या, सुधा, मधु, रीटा, पल्लवी, डॉ. रागिनी, शकुन्तला, रश्मि, प्राणिक हीलर दीप्ति व मिसेज़ इंडिया ग्लैम सुमन ब्याडवाल आदि ने भी अपने विचार रखे। अध्यक्ष सुषमा के.के.ने बताया आजकल सब तरह की ज्वैलरी सब तरह की ड्रेसेज़ के साथ पहनी जा रही है। ख़ूबसूरती आपके कैरी करने पर है। फोटो शूट के साथ सबने स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ़ लिया।

ए.टी.एम. कार्ड बदलकर पैसे निकाले

जयपुर। भांकरोटा इलाके में मदद के बहाने एक युवक का एटीएम कार्ड बदल कर बदमाशों ने उसके खाते से 40 हजार रुपए पार कर लिए। पुलिस के अनुसार रेवाड़ी हरियाणा निवासी अजयपाल ने मामला दर्ज करवाया कि वह जुलेट अस्पताल के पास एचडीएफसी बैंक एटीएम पर रुपए निकालने गया था। एटीएम मशीन से रुपए निकालने के दौरान उसमें एरर आ रहा था। इसी दौरान एक युवक आया और उसने मदद करने की बात कहीं। उसकी मदद से पीड़ित ने रुपए निकाल लिए। इसके बाद युवक घर पहुंचा तो उसके मोबाइल खाते से रुपए निकालने के चार मैसेज मिले। ठगों ने उसका एटीएम कार्ड बदलकर खाते से 40 हजार रुपए निकाल लिए। ठगी का पता चलने पर पीड़ित ने पुलिस की शरण ली। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। जांच अधिकारी एएसआई होशियार सिंह ने बताया कि इस मामले में एटीएम में लगे सीसीटीवी कैमरों के साथ आस-पास के इलाकों की सीसीटीवी फुटेज खंगाली जा रही है। फिलहाल बदमाश पकड से दूर है।

आई.आर.एस. अफसर बनकर सरकारी नौकरी वाली महिलाओं से लाखों रु. ऐंठने वाला बदमाश गिरफ्तार

उज्जैन का रहने वाला है आरोपी सर्वेश, उसके मोबाइल में पुलिस को आपत्तिजनक चैट मिली

जयपुर (कासं)। आई.आर.एस. अफसर बनकर लड़कियों को फंसाकर ठगने वाले बदमाश को विद्याधर नगर पुलिस ने दबोचा है। उसके मोबाइल की जांच में कई अश्लील चैट मिले है। पुलिस इन अश्लील चैट के आधार पर जानकारी जुटा रही है।

आरोपी सर्वेश कुमावत उज्जैन (मध्य प्रदेश) का रहने वाला है। शनिवार को जब आरोपी जयपुर में एक लड़की से मिलने अजमेर रोड स्थित होटल में पहुंचा तो पुलिस ने उसे दबोच लिया था। पुलिस ने उसका मोबाइल चेक किया तो पता चला कि उसने 25 से ज्यादा लड़कियों को फंसा रखा है। आरेपी सर्वेश सभी लड़कियों को मैसेज के जरिए खुद को आई.आर.एस. अफसर बताता था। इनमें ज्यादातार लड़कियां सरकारी कर्मचारी हैं।

पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपी ने जयपुर की भी तीन लड़कियों को फंसा रखा है। ज्यादातर लड़कियों को अलग-अलग समय पर जरूरत बताकर लाखों रुपए हड़प चुका है। पुलिस आरोपी के मोबाइल व सोशल मीडिया अकाउंट्स की डिटेल खंगाल रही है।

पुलिस के अनुसार आरोपी के मोबाइल में उज्जैन की प्राइवेट यूनिवर्सिटी से बीए की डिग्री मिली है। आरोपी के सोशल मीडिया अकाउंट्स की चैट से सामने आया कि वह अब तक 25 से ज्यादा लड़कियों को फंसाकर चैट कर रहा है। इनमें से कई महिलाओं से आपत्तिजनक चैट और कई महिलाओं से लाखों रुपए लेने की

विद्याधर नगर पुलिस ने आई.आर.एस. अफसर बनकर महिलाओं से ठगी करने वाले उज्जैन निवासी बदमाश को गिरफ्तार किया।

जानकारी मिली है। पुलिस उन महिलाओं से संपर्क करने का प्रयास कर रही है, जिनसे आरोपी लगातार चैट कर रहा था।

गौरतलब है कि एसीबी की महिला सब इंस्पेक्टर कृतिका गोयल ने विद्याधर नगर थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। रिपोर्ट में कहा कि उनके भाई व सहेली को सर्वेश द्वारा मैसेज भेजने का स्क्रीन शॉट मिला। इसमें लिखा था कि उसने नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के जयपुर ऑफिस में जोनल डायरेक्टर के पद पर तबादला हुआ है। आरोपी खुद को वर्ष 2020 बैच का आईआरएस अफसर बता रहा था। हकीकत यह है कि यहां जोनल डायरेक्टर के पद पर आईआरएस घनश्याम सोनी तैनात हैं। एसआई ने विभागीय अफसरों को सूचना दी। विभागीय जानकारी में सामने आया कि कोई व्यक्ति फर्जी आदेश भेज कर महिलाओं को फंसाने का प्रयास कर रहा है। उसके बाद उन्होंने विद्याधर नगर थाने में रिपोर्ट दी। सूचना के बाद एनसीबी टीम ने आरोपी की डिटेल खंगाली और विद्याधर नगर पुलिस के सहयोग से शनिवार को अजमेर रोड स्थित एक होटल से पकड़ लिया।

एनसीबी ने जांच की तो पता चला कि इस नाम का आईआरएस अफसर नहीं है। आरोपी ने लड़की को एक लेटर भेजा, जिसमें जयपुर एनसीबी कार्यालय की सील लगी थी और साइन किए हुए थे। उसके बाद एनसीबी सब इंस्पेक्टर ने विद्याधर नगर थाने में रिपोर्ट दी।

- **पुलिस ने आरोपी का मोबाइल चेक किया तो पता चला कि उसने 25 से ज्यादा लड़कियों को फंसा रखा है। सर्वेश ने सभी लड़कियों को मैसेज में खुद को आई.आर.एस. अफसर बता रखा था।**
- **पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपी ने जयपुर की भी तीन लड़कियों को फंसा रखा है। ज्यादातर लड़कियों से जरूरत बताकर लाखों रुपए हड़प चुका है।**

सभी 7 निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान दिवस पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम : महाजन

जयपुर। राजस्थान विधानसभा उपचुनाव-2024 के मद्देनजर सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। सभी 7 विधानसभा क्षेत्रों रामगढ़, दौसा, झुंझनूं, सलूम्बर, चौरासी, खींवसर और देवली-उनियारा में स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव के लिए कानून व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवीन महाजन ने बताया कि मतदान दिवस 13 नवम्बर को इन क्षेत्रों में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम होंगे। इन क्षेत्रों में 9 हजार से अधिक सुरक्षाकर्मी नियुक्त किए गए हैं। इनमें केंद्रीय पुलिस बलों की 43 कंपनियां मतदान के दौरान कानून-व्यवस्था की निगरानी एवं सुरक्षा करेंगी। रामगढ़ और दौसा में 9-9, खींवसर में 8, देवली उनियारा में 6, चौरासी में 5, झुंझुनूं में 4 और सलूम्बर में 2 कंपनियों को संवेदनशील मतदान केंद्रों में तैनात किया जाएगा। इसके अतिरिक्त आरएसी (राजस्थान आर्म्ड कांस्ट्यूबलरी) की कुल 17 कम्पनियां तैनात होंगी, जिनमें रामगढ़, झुंझुनू, सलूम्बर, चौरासी और देवली-उनियारा में 2-2, दौसा में 3 तथा खींवसर में 4 कंपनियां तैनात होंगी. इसके अतिरिक्त, सभी राज्य पुलिस के कुल 6,275 कार्मिक और होमगार्ड के 650 जवान तैनात किए गए हैं।

महाजन ने बताया कि मतदान दिवस पर सघन जांच एवं निगरानी के लिए प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में फ्लाइंग स्क्वॉड, एसएसटी दल तैनात रहेंगे। चुनाव खर्च के लिहाज से संवेदनशील मतदान केंद्रों में अतिरिक्त निगरानी टीमें तैनात की गई है। मतदान के दौरान 1,122 मतदान केंद्रों की लाइव वेबकास्टिंग की जाएगी। एक ही लोकेशन पर 3 मतदान केंद्रों पर एक कैमरा और तीन मतदान केंद्रों से अधिक पर दो कैमरे मतदान कक्ष के बाहर लगाए जाकर मतदाताओं की लाइन व कानून व्यवस्था का जायजा लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से किया जाएगा। साथ ही, विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र से संबंधित संपूर्ण जिले में भी कानून व्यवस्था के विशेष इंतजाम किए गए हैं। बाहरी अवांछित व्यक्तियों के प्रवेश को रोकने के उद्देश्य से सीलिंग और चेकिंग की कार्रवाई की जाएगी।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि इन 7 विधानसभा क्षेत्रों के सभी 1,915 मतदान केंद्र कुल 1,366 लोकेशन पर हैं, जिनमें से 604 मतदान लोकेशन को संवेदनशील माना गया है। इन सभी लोकेशन पर केंद्रीय सुरक्षा बल तैनात की जाएंगी। इनके अतिरिक्त 239 कानून व्यवस्था की दृष्टि से संवेदनशील लोकेशन हैं, जिन पर आरएसी की तैनाती रहेगी। इस प्रकार, कुल 843 मतदान केंद्र लोकेशन ऐसे हैं, जहां सुरक्षा बल की कड़ी निगरानी में रहेंगे। दौसा और खींवसर के सभी मतदान दल लोकेशन पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

महाजन ने बताया कि प्रत्येक 10 मतदान केंद्रों पर एक विशेष पुलिस टीम तैनात की जाएगी। साथ ही, प्रति 10-12 बूथों पर एक सेक्टर मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है। मतदान दिवस पर सघन जांच और निगरानी के लिए तीन व्यय संवेदनशील विधानसभा क्षेत्रों यथा रामगढ़, दौसा एवं खींवसर में 12-12 उड़न दस्ते (एफएस) और स्थैतिक निगरानी दल (एसएसटी) तैनात किए गए हैं, शेष 4 विधानसभा क्षेत्रों में 9-9 एफएस और एसएसटी लगाए गए हैं। इस प्रकार 72 एफएस और एसएसटी द्वारा नजर रखी जा रही है। सी-विजिल एप पर प्राप्त शिकायतों का निस्तारण भी 100 मिनट की समय सीमा के भीतर ही किया जा रहा है। रात्रि-गश्त के जरिए पुलिस रात में भी कानून एवं व्यवस्था बनाए रखे हुए है। इन 7 निर्वाचन क्षेत्रों में कुल 313 माइक्रो ऑब्जर्वर नियुक्त किए गए हैं।

- **कई कंपनियों समेत राजस्थान पुलिस और होमगार्ड के 9 हजार से अधिक सुरक्षाकर्मी तैनात रहेंगे**

ARBiT
it happens here...

World Origami Day

Many people aren't aware of the fact that a particularly special day is about to be celebrated. In fact, it's especially important one for all those paper folding fanatics out there, for all of those folks, who look at a flat sheet of paper and dream of all of the exciting objects, that could be made out of it, simply by folding. So, for those who happen to love the art of folding paper and creating beautiful creations from paper, cloth, dollar bills, napkins, or anything that'll hold a crease, *World Origami Day* is for you.

राष्ट्रदूत
MONDAY
11 November 2024
A-B

#PSYCHOLOGY

For a happy life, don't forget hedonism

The pursuit of hedonic and long-term goals needn't be in conflict with one another.

Enjoying short-term pleasurable activities that don't lead to long-term goals contributes at least as much to a happy life as self-control, according to new research.

Based on their findings, the researchers argue for a greater appreciation of hedonism in psychology.

We all set ourselves long-term goals from time to time, whether we want to start getting into shape, eating less sugar, or learning a foreign language. Researchers have devoted a lot of time to finding out how we can reach these goals more effectively.

The prevailing view is that self-control helps us prioritize long-term goals over momentary pleasure and that if you are good at self-control, this will usually result in a happier and more successful life.

"It was always thought that hedonism, as opposed to self-control, was the easier option. But really enjoying one's hedonic choice isn't actually that simple for everybody."

"It's time for a rethink," says Katharina Bernecker, a researcher in Motivational Psychology at the University of Zurich. "Of course, self-control is important, but research on self-regulation should pay just as much attention to hedonism, or short-term pleasure."

That's because Bernecker's new research shows that people's capacity to experience pleasure or enjoyment contributes at least as much to a happy and satisfied life as successful self-control.

Bernecker and her colleague, Daniela Becker of Radboud University, developed a questionnaire to measure respondents' capacity for hedonism, i.e. their ability to focus on their immediate needs and indulge in and enjoy short-term pleasures. They used the questionnaire to find out whether people differ in their capacity to pursue hedonic goals in a variety of contexts, and whether this ability is related to well-being.

They found that certain people get distracted by intrusive thoughts in moments of relaxation or enjoyment by thinking about activities or tasks that they should be doing, instead.

"For example, when lying on the couch, you might keep thinking of the sport you are not doing," says Becker. "Those thoughts about conflicting long-term goals undermine the immediate need to relax."

The pursuit of hedonic and long-term goals needn't be in conflict with one another.

On the other hand, people, who can fully enjoy themselves in those situations, tend to have a higher sense of well-being in general, not only in the short term, and are less likely to suffer from depression and anxiety, among other things.

Bernecker says, "Our research shows that both are important and can complement each other in achieving well-being and good health. It is important to find the right balance in everyday life."

Unfortunately, simply sitting on the couch more, eating more good food, and seeing friends more often won't automatically make for more happiness.

With more people working from home, the findings are especially topical, as the environment, where they normally rest, is suddenly associated with work.

"Thinking of the work, that you still need to do, can lead to more distracting thoughts at home, making you less able to rest," says Bernecker.

So, what can you do to enjoy your downtime more? More research is needed, but the researchers suspect that consciously planning and setting limits to periods of enjoyment could help to separate them more clearly from other activities, allowing pleasure to take place more undisturbed.

Dr. Goutam Sen
CTVS Surgeon
Traveller
Storyteller

It is two months since the horrendous rape and murder of a thirty one year-old lady doctor took place in Kolkata. It took place in a so-called safe place, The R. G. Kar Medical College and Hospital. This place is where men and women work together and have been doing so for more than a century. The fact that the doctor was exhausted after a thirty-six hour shift and had no place to rest is the consequence of a dismal state of infrastructure in our Medical Institutions. Further, that she was lured into an upper floor Seminar Room to rest is a matter which needs more investigation. Normally, this would be another nasty crime, and after due investigation as well as capture of the miscreants, strict punishment would be expected. BUT this did not happen!

There was a delay in informing the parents and dubious messages were conveyed. First, she is unwell! Later, a statement that she has committed suicide!! A quick post-mortem!!! A still more hasty funeral!!!! The FIR was delayed by fourteen hours. Something was certainly wrong in the affairs of the State of West Bengal. Lady Macbeth at the helm of affairs was caught on the wrong foot! It was then revealed by the student fraternity that the victim had been gathering evidence of misdeeds of criminal nature by the staff of R. G. Kar Medical College and Hospital. She was being harassed as a result. She was on the brink of informing the people and media about all this. Was she, therefore, a victim of preplanned murder in an attempt to obliterate the evidence? Only time and the CBI will tell.

A protest by the resident doctors began in an attempt to clear the air and hasten the investigation process. The matters became worse when demolition of the seminar area was done in a hurried manner by the administration. This suggested an attempt to destroy any evidence in that area. It was suggestive of collusion between the police and the college administration.

This agitated the Resident doctors and the protest became more vigorous and voluminous, when residents from other Medical Colleges joined in the protest, too. A sudden attack by miscreants (of unknown origin) on the premises of the R. G. Kar Medical College premises stunned the people of Kolkata. More than thousand rioters had turned up. The police, guarding the crime venue, had equally and suddenly disappeared. The law and order situation came under the lens of the High Court and the case was transferred to the CBI, although the State police claimed that they had already arrested one, Sanjay Roy, a medical volunteer, with access to all parts of the hospital for the crime. This was done on the basis of CCTV evidence.

The CBI, on taking over, found many factual errors and tampering with the evidence, probably, done by the Kolkata Police in an attempt to shield higher ups in the medical fraternity and the officers of the Health and Medical Education departments. There was a tinge of political misdemeanor, too. Otherwise how was it possible that Dr. Sandip Ghosh, the Principal of R. G. Kar Medical College, was dismissed only to reappear as Principal at Kolkata Medical College within four hours? It is a different matter that the students of that college did not allow him to join.

As the protest gathered more strength amongst the resident doctors of Bengal and other resident doctors of India, the people of Kolkata awakened to the misdeeds of the government and also joined in the public marches and *dharnas* at various venues. Senior doctors of the Medical College came out in good strength to condemn the government inaction. Dr. Kunal Sarkar, an eminent Cardiac Surgeon, spoke vehemently against the government. All night vigils and candle marches were conducted to draw the attention of the nation. They not only provided vocal support but also brought provision and food. No political party was allowed to taint the protest. The West Bengal Government, instead of being sympathetic, tried to disrupt the agitated doctors with strong police force using water cannons and *lathi* charge.

The matter was taken up by the Supreme Court suo moto and is still under their supervision. It has met again on 17th September to hear both sides of the case. The CJI has said that it finds the disclosure of the CBI 'really disturbing.' It was not willing to disclose details as it would hamper the ongoing investigation. The SC continues to supervise the investigation and is getting periodic reports but has not been able to enforce a quick negotiation and settlement between the protesting doctors and the West Bengal Government. On the same day, after a prolonged delay and following many futile efforts to connect with the protesting doctors, Mamata Banerjee had a meeting at last. The precondition of live broadcast of the meeting was trimmed down to recording of minutes being agreed upon. Verbal assurances have been made about removal of Commissioner of Police of Kolkata, Vineet Goyal, and several senior police officials, including Deputy Commisioner (North). Abhijit Mondal, Officer In-charge of Tala Police Station, has been arrested for allegedly misleading the investigation and altering the crime scene. Two top officials of the Health Department, Dr. Kaustav Nayak (Director, Medical Education) and Dr. Debashish Haldar (Director, Medical and Health Department) have also been removed. The doctors continue to demand the replacement of the Health Secretary. This remains to be done. The level of mistrust between two sides remains high. The Government continues to ask for withdrawl of the protest and the doctors to return to work forthwith. On the other side, the doctors say that the decision will only take place when the verbal assurances are given in writing. They will then have to approve the timeframe in which the actions need to be taken.

Public protests have been an integral part of India's democratic landscape, allowing citizens to express grievances and hold authorities accountable. Effectiveness of protests depends on clear goals and demands. Such protests with specific, achievable objectives are more likely to succeed. Widespread participation and support with large and more diverse crowds can exert greater pressure on authorities. When protests remain peaceful and non-violent, they garner public support and attention from authorities. Significant media coverage and public awareness can build further pressure on the government. On the other hand, when protests get prolonged (although, there is no indication of the current Kolkata protest mellowing) with fatigue, dwindling participation and public interest is common. Frustration, escalation and violence can lead to discrediting the protest and undermining its goals. The West Bengal Government had hoped that the protest would become feeble as the state celebrates Durga Puja. This did not happen and seven doctors went on Hunger Strike from 5th October onwards. Several are now showing exhaustion and medical problems following a seven-day period and have been admitted in the hospital. Kalyan Banerjee, a TMC member, commented in a vengeful manner that this is only 'a hunger strike till hospitalization,' they were supposed to be on hunger strike till death.' It shows the casual attitude of the TMC and its Government. To add to the force of the strike, most national bodies have come out in support. Yet, no effect has been seen. The demands remain mired in discussion with the government, now being represented by the Chief Secretary, who will, in due course, have to get all points of agreement approved by the Chief Minister. This represents the true tactic of delaying to lessen the effect of the protest!

Assurances made during protests may have short term gains. Authorities may make concessions to appease protesters, but these may not be sustainable or fully implemented. Authorities may renege on promises or delay implementation, leading to renewed protests. Repeated broken assurances can erode trust in authorities.

Assurances made during protests may have short term gains. Authorities may make concessions to appease protesters, but these may not be sustainable or fully implemented. Authorities may renege on promises or delay implementation, leading to renewed protests. Repeated broken assurances can erode trust in authorities and the protest process. In such circumstances, the protest may be reinstituted but somehow it would not pick up the momentum of the initial effort.

In the current case, the demands of the doctors, regarding the crime and removal of the people who have been amiss in their responsibilities and also tampered with the crime scene, seems to have been heard and acted upon. This is a good short term action. In the long term, silly orders like not posting women doctors on night duty need to be withdrawn. A larger security force, trained in the care of women doctors, also have been appointed but still need to be trained and then seen in action. Finally, the whole system of medical education and hospital care, which seems to be seeped in corruption, requires overhauling. If this is not done, such rapes and murders will be seen in the corridors of our hospitals again and again.

rajeshsharma1049@gmail.com

The precondition of live broadcast of the meeting was trimmed down to recording of minutes being agreed upon. Verbal assurances have been made about removal of Commissioner of Police of Kolkata, Vineet Goyal, and several senior police officials, including Deputy Commisioner (North). Abhijit Mondal, Officer In-charge of Tala Police Station, has been arrested for allegedly misleading the investigation and altering the crime scene. Two top officials of the Health Department, Dr. Kaustav Nayak (Director, Medical Education) and Dr. Debashish Haldar (Director, Medical and Health Department) have also been removed. The doctors continue to demand the replacement of the Health Secretary. This remains to be done. The level of mistrust between the two sides remains high. The Government continues to ask for withdrawl of the protest and the doctors to return to work forthwith. On the other side, the doctors say that the decision will only take place when the verbal assurances are given in writing.

Are our Women Doctors Safe?

#LIVE AND LET LIVE

Ancient Protests (500 BCE - 500 CE)

1. Athens, Greece (500 BCE): Citizens protested against aristocratic rule, leading to the establishment of democracy.
2. Roman Republic (100 BCE): Plebeians protested against patrician dominance, resulting in reforms.
3. Jewish Revolts (66-135 CE): Jews protested against Roman rule, leading to brief independence.

Medieval Protests (500-1500 CE)

1. Peasants' Revolt (1381): English peasants protested against feudalism and serfdom.
2. Hussite Reformation (1419-1436): Czech Protestants challenged Catholic Church authority.

Modern Protests (1500-2000 CE)

1. English Civil War (1642-1651): Parliamentarians protested against monarchial absolutism.
2. American Revolution (1775-1783): Colonists protested against British rule.
3. French Revolution (1789-1799): Citizens protested against monarchy and aristocracy.
4. Indian Independence Movement (1857-1947): Indians protested against British colonial rule.
5. Civil Rights Movement (1950s-1960s): Americans protested against racial segregation.

Contemporary Protests (2000 CE - present)

1. Arab Spring (2010-2012): Protests across Middle East and North Africa against authoritarian regimes.
2. Occupy Wall Street (2011): Protest against economic inequality.
3. Black Lives Matter (2013-present): Protest against systemic racism.
4. Hong Kong Protests (2019-2020): Protest against Chinese government's influence.

#CELEBRATIONS

Pushkar Camel Fair

As day turns into night, the fairgrounds light up with traditional dances, concerts, and performances that continue to captivate the audience.

The *Pushkar Camel Fair* is a colourful event held annually in the desert town of Pushkar, Rajasthan. It is a unique celebration that brings together thousands of visitors, both local and international, to witness a spectacle like no other.

The fair is known for its lively atmosphere, featuring everything from camel races and beauty contests to traditional Rajasthani music and dance performances.

Beyond its visual appeal, the fair holds deep cultural significance. It serves as a gathering point for local communities, who come to trade livestock and celebrate their heritage. Competitions such as camel races, turban tying, and even mustache contests draw enthusiastic crowds, highlighting the unique customs of the region.

As day turns into night, the fairgrounds light up with traditional dances, concerts, and performances that continue to captivate the audience. This dynamic blend of cultural exchange and celebration makes the Pushkar Camel Fair a must-visit event, that encapsulates the vibrant spirit of Rajasthan.

What to do

Visitors can explore a variety of activities, including *camel safaris*, cultural performances, and local handicraft markets, making it a rich and immersive experience for everyone.

History

The Pushkar Camel Fair, one of the most famous events in Rajasthan, dates back to the 19th century. It began as a place for local *Rajasthani* tribes to trade camels and livestock. Over time, it transformed into a major cultural festival, attracting tourists from around the world. The fair originally served as a trading hub, where farmers and herders gathered to buy and sell camels, which were crucial for farming and transport in the desert region. The fair coincides with the *Hindu* month of *Kartik* and culminates on the full moon day, known as *Kartik Purnima*. This timing gives the fair a dual significance, religious and commercial. Devotees flock to Pushkar Lake to take a holy dip, believing that it purifies their souls. The fair now features not only livestock trading but also cultural performances, camel races, and various competitions.

One of the highlights is the camel race that kicks off the event, where camels, dressed in vibrant ornaments, parade through the fairgrounds. Competitions like 'longest mustache' and 'turban tying' are crowd favourites, showcasing the rich traditions of the region. These events foster a sense of community among participants and provide visitors with a glimpse into local customs. The fair has also embraced modern elements over the years. Photography tours and hot air balloon rides offer a unique perspective on the festivities, blending tradition with modern experiences. These additions have helped attract a wider audience, making the fair not just a local gathering but a global attraction. Pushkar Camel Fair, Rajasthan 2024 starts today, Saturday, 09 November 2024, and will end on Friday, 15 November 2024.

Embrace the Camel Craze

Dive into the heart of the Pushkar Camel Fair by witnessing the lively camel races and beauty contests. Admire the beautifully decorated camels, dressed in vibrant fabrics and intricate ornaments, as they showcase their elegance and strength. Watching these majestic creatures compete is a unique experience, that's both thrilling and captivating. For a closer look, join a camel safari and explore the desert landscape surrounding the fair.

Try Your Hand at Turban Tying

Get into the spirit of Rajasthan by participating in a turban-tying competition. It's a chance to learn about this traditional art and test your skills. With a variety of colours and patterns to choose from, you'll be amazed at the creative ways a simple piece of cloth can be transformed. It's a fun, hands-on way to connect with local culture and possibly win some bragging rights.

Dance the Night Away

As the sun sets, the fairgrounds come alive with traditional music and dance performances. Join the locals in a lively *Ghoomar* dance or simply enjoy the spectacle of skilled dancers twirling in colourful costumes. The evening festivities often include concerts featuring local musicians, making it a perfect time to relax and soak in the vibrant atmosphere. Grab a cup of hot *chai* and let the music sweep you away.

Capture the Colors

Photography enthusiasts will find endless inspiration at the fair. From the vibrant attire of visitors and performers to the breath-taking desert sunsets, every corner offers a picturesque scene. Take part in the 'Frame of the Fair' competition, where capturing the essence of the event could earn you a prize. Whether you're a professional or just snapping with your phone, the fair's lively colours and unique moments make it a photographer's paradise.

Savor Local Flavors

Indulge in the delicious array of *Rajasthani* cuisine, available at the food stalls, scattered throughout the fairgrounds. Treat your taste buds to local specialties like *dal baati churma*, *kachori*, and *gatte ki sabzi*. Don't miss the sweets like *malpua* and *rabri*, which are sure to satisfy your sweet tooth. Eating your way through the fair is a delightful way to experience the region's culinary heritage.

THE WALL

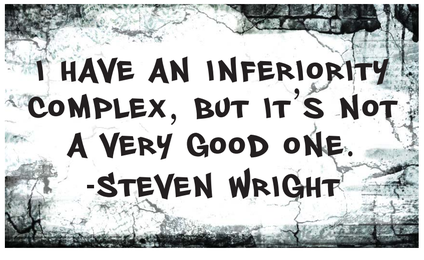

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

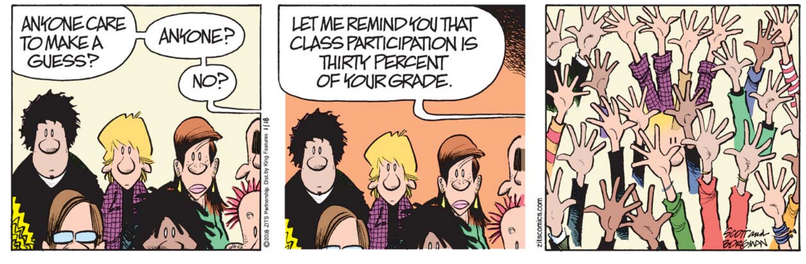

पीएम मंगलसूत्र छीनने का डर दिखाकर वोट मांग रहे है : कॉ. अमराराम

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) जिला कमेटी का 16 वां जिला सम्मेलन प्रारम्भ

डूंगरपुर, (निसं)। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) जिला कमेटी, का 16 वां जिला सम्मेलन, 10 नवंबर 2024 को कामरेड सीताराम येचुरी नगर कामरेड गोविंद आमलिया नगर के नाम से राम रोटी भवन में प्रारंभ हुआ। सम्मेलन का झंडारोहण का. कानाजी खराडी ने किया, शोक प्रस्ताव जिला सचिव का विमल भगोरा ने रखा, जिसमें माकपा महासचिव का. सीताराम येचुरी, का. बुद्धदेव भट्टाचार्य, गोविंद आमलिया, का. हीरालाल खराडी सहित अन्य हम दर्द साथियों, प्राकृतिक आपदाओं, साम्प्रदायिक हिंसा, आंतकवादी हमले में शहीद साथियों को 2 मिनट का मौन रखकर श्रृंद्धाजली अर्पित की गई। प्रतिनिधियों ने शहीद वेदी पर पुष्प अर्पित कर शहीदों को श्रृंद्धाजली अर्पित की।

भाकपा के जिला सम्मेलन को कामरेड अमराराम ने सम्बोधित किया।

पर्यवेक्षक माकपा राज्य सचिव व सीकर सांसद का. अमराराम, राज्य सचिवमंडल सदस्य का. किशन पारीक, उपस्थित रहे।सम्मेलन कॉ विमल भगोरा,कॉ बापुराम बरंडा की अध्यक्षता में शुरू हुआ। सम्मेलन का विधिवत उद्घाटन करते माकपा राज्य सचिव व सीकर सांसद का. अमराराम ने कहां कि नरेंद्र मोदी देश के पहले प्रधानमंत्री है, जो 10 वर्ष बहुमत की सरकार चलाने के बाद भी बताने के लिए मंगलसूत्र, भैंस, बेटी, माटी छीन लेने का भय दिखाकर वोट लेने चाहते है। अब तक देश में बनी सरकारे चुनाव में जाती थी तो अपनी उपलब्धियों और विकास पर वोट मांगती थी। लोकसभा चुनाव में भी बांसवाड़ा में अल्पसंख्यक समुदाय का डर दिखा रहे तो झारखंड में बेटी और माटी छीन लेने का डर दिखाकर साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की राजनीति कर रहे है। उदयपुर और राजस्थान में भी भाजपा – आर एस एस लगातार छोटे – मोटे अपराधिक घटनाओं को हिंदु – मुसलमान की लड़ाई बनाकर आगजनी, दंगे भडक़ा रही है। अब मोदी और भाजपा नेता महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, किसानों की तंगी, मजदुरों की खराब आर्थिक स्थिति पर नहीं बोलते है। भ्रष्टाचार के नाम पर ईडी भेजकर भाजपा में शामिल किये जा रहे है, कंपनियों से कारोबार अडाणी – अंबानी को दिया जा रहा है। विदेश नीति के मुद्दे पर सरकार बार – बार फेल हो रहीं है। लोकसभा चुनाव में जनता ने मोदी की नाक में नकेल डाल दी,किंतु थोडी सी कमी रह गई थी। उन्होंने कहा कि माकपा को मुद्दे आधारित वाम – धर्मनिरपेक्ष दलों और लोगों को एकजुट कर सडक़ पर लडऩा पडेगा, यह मुख्य जिम्मेदारी हमारी है। डूंगरपुर में माकपा पार्टी ने बिना किसी राजनैतिक सत्ता के भ्रस्टाचार, साम्प्रदायिक, गरीब ठेले व्यवसायी, आदिवासियों के वनाधिकार पट्टों,किसान कर्ज माफी, सडक़, बिजली, पानी,जमीन, आदिवासी दलित अत्याचार, किसान, मजदुर, महिलाओं छात्रों के मुद्दों पर पिछले कई वर्षों से लगातार सडक पर संघर्ष करती आ रही है और आगे करेगी । उन्होंने सभी को विश्वास दिलाया कि डूंगरपुर ज़िले की आम जनता की जो भी समस्या होगी उसको संसद में उठाई जायेगी। उद्घाटन सत्र को राज्य सचिव मंडल सदस्य कॉ.किशन पारीक संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा सरकार जनता को मुर्ख बनाकर कार्पोरेट की जेब भर रही है। छतीसगढ से लेकर राजस्थान तक जल, जंगल और जमीन अडाणी – अबानी को दी जा रही है। देश में औधोगिक निवेश और रोजगार के नाम पर निराशा है। केंद्र सरकार के बाद राज्यों की सरकारें देशी– विदेशी पूंजीपतियों के आगे चक्कर लगा रही है, करोडों रुपये खर्च कर औधोगिक निवेश उत्सव मनाये जा रहे है, लेकिन पुंजीपति अपनी तिजोरियों में बंद कर बैठे है। डूंगरपुर के लोगों को ढ ंग की रोडवेज बस नही मिल रहीं तो पुंजीपति बड़ी – बड़ी रियायते ले जा रहे है। सरकारें एक सपना दिखाकर, दुसरे सपने की तरफ बढ जाती है।

संविधान व लोकतंत्र पर खतरा टला है, खत्म नहीं हुआ है। लोकसभा चुनाव में भाजपा नेता 400 सीट लाकर संविधान बदलने का ख्वाब देख रहे थे, जिस इंडिया गठबंधन को समर्थन देकर जनता ने ब्रेक लगा दिया है। फिर भी भाजपा आज सता में है। जिला सचिव गौतमलाल डामोर ने जिला कमेटी की तरफ से सांगठनिक राजनैतिक रिपोर्ट पेशकर, पिछले 3 वर्षों का विवरण पेश किया। रिपोर्ट पर बहस के लिए, 2 घण्टे समय का आवंटन किया गया।

दूसरे दिन सम्मेलन कल 11 नवंबर को जारी रहेगा, जिसमें सचिव की रिपोर्ट पर बहस कर पारित की जाएगी। अंतिम सत्र में अगले 3 वर्षों के लिए जिला कमेटी, जिला सचिवमंडल, जिला सचिव व 13,14,15 दिसंबर को होने वाले माकपा राज्य सम्मेलन के प्रतिनिधियों का चुनाव किया जाएगा। सम्मेलन में कॉ. विमल भगोरा, कॉ.अमृतलाल कलाल, कॉ.बापुराम बरंडा, कॉ.लक्ष्मण हडात, कॉ.फाल्गुन भराडा, कॉ. शंकर भाई अहारी, कॉ. भगवती लाल डामोर,कॉ.बंशीलाल खराडी, कॉ. गंगाराम आमलिया, कॉ. लक्ष्मण कटारा, कॉ. मनीषा आमलिया, कॉ.प्रवीण डामोर, कॉ. मोहन डामोर, देवीलाल आदि कई साथी उपस्थित रहे।

राजस्थान में दिल्ली से जो पर्ची आती है वो काम करना पड़ता है : डोटासरा

सलूंबर उपचुनाव : प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने की जनसभा

उदयपुर, (कासं)। राजस्थान उपचुनाव -2024 के क्रम में उदयपुर देहात जिला कांग्रेस अध्यक्ष के अंतर्गत आने वाली सलूंबर विधानसभा क्षेत्र के सरसिया ग्राम पंचायत में आज प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कांग्रेस प्रत्याशी रेशमा मीणा के समर्थन में जनसभा करी।

> ■ 'राजस्थान में पिछले दस महीनों से कोई सरकार नाम की चीज ही नहीं'

उदयपुर देहात जिला कांग्रेस प्रवक्ता डॉ संजीव राजपुरोहित ने बताया कि सलूंबर विधानसभा की सराडा पंचायत के सरसिया गांव में कांग्रेस प्रत्याशी के समर्थन में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने जनसभा कर कांग्रेस के पक्ष में मत एवं समर्थन की अपील करी। जनसभा में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कहा कि राजस्थान में पिछले दस महीनों से सरकार नाम की कोई चीज ही नहीं है। दिल्ली से पर्ची आती है और वो काम करना होता है। मुख्यमंत्री का स्वयं का कोई विजन नहीं है। आज राजस्थान में युवा, किसान, महिलाएं और आम आदमी त्रस्त है। लेकिन राजस्थान सरकार को आम जनता से कोई लेना देना नहीं है। हमारी पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार ने विकास करने में कोई कसर नहीं छोडी। लेकिन भाजपा से सरकार में आते ही हमारी सारी जनउपयोगी योजनाओं को बंद करने का काम किया। किसान का बेटा, आदिवासी का बेटा अंग्रेजी पढ लिख सके इसके लिए हमने अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खोलने का काम किया लेकिन भाजपा सरकार ने आते ही उनको कम करने का काम किया।

डोटासरा ने कहा कि हमें पता है कि इन सात सीटों पर हो रहे उपचुनाव से राजस्थान की सरकार पर कोई असर नहीं पडेगा लेकिन अगर हम सलूंबर की सीट से कांग्रेस प्रत्याशी को जीताकर जयपुर भेजेंगे तो राजस्थान में विपक्ष मजबूत होगा और वो राजस्थान की पर्ची सरकार को सलूंबर का विकास करने के लिए बाध्य कर देगा। और अगर यहां से भाजपा जीतती है तो उनमें अहंकार आ जाएगा। इसीलिए हमें सलूंबर के विकास के लिए कांग्रेस को जीताना है और भाजपा का अहंकार तोडना है। हम सभी एकजुटता से लडेंगे और राजस्थान की सातों सीट पर कांग्रेस जीतेगी और भाजपा का अहंकार तोडेगी।

कांग्रेस कार्य समिति के पूर्व सदस्य एवं सलूंबर से पूर्व विधायक रहे रघुवीर मीणा ने कहा कि सलूंबर उपचुनाव में निश्चित ही कांग्रेस की जीत होगी हम सभी यहां एक होकर चुनाव लड रहे हैं और इस बार भारतीय जनता पार्टी को हराकर सलूंबर से कांग्रेस प्रत्याशी को जीताकर जयपुर भेजेंगे। रघुवीर सिंह मीणा ने यह भी कहा कि सलूंबर में कांग्रेस पार्टी एकजुट है और एकजुटता के साथ भारतीय जनता पार्टी और भारतीय आदिवासी पार्टी दोनों को हराकर उपचुनाव जीतेगी।

उदयपुर देहात जिला कांग्रेस अध्यक्ष कचरू लाल चौधरी ने कहा कि मेवाड का विकास सिर्फ कांग्रेस ही कर सकती है ।इसीलिए हमें एकजुटता के साथ इस उपचुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी को जीताकर जयपुर भेजना है।लोकसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी रहे ताराचंद मीणा ने कहा कि कांग्रेस का विजन विकास का विजन है। देश में आजादी के बाद से अब तक जितना भी विकास हुआ उनमें कांग्रेस का महत्वपूर्ण योगदान है। इसीलिए क्षेत्र के विकास की सोच कांग्रेस ही रख सकती है। पूर्व मंत्री, सीनियर आब्जर्वर एवं विधायक अशोक चांदना ने कहा कि हम पिछले कई दिनों से सलूंबर क्षेत्र में घूम रहे है और आमजन से मिल रहे है।

जनसभा में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा, पूर्व मंत्री अशोक चांदना, विधायक अर्जुन सिंह बामणिया,अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी सचिव एवं राजस्थान सह प्रभारी ऋत्विक मकवाना, उदयपुर देहात कांग्रेस अध्यक्ष कचरू लाल चौधरी, पूर्व विधायक बसंती देवी मीणा,खेरवाडा विधायक डॉ दयाराम परमार, मावली विधायक पुष्कर डांगी, प्रदेश कांग्रेस महासचिव डॉ राजेंद्र मुंड, एआईसीसी सदस्य दिनेश खोडनिया, प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष हीरा लाल दरांगी, पूर्व विधायक प्रीति शक्तावत, पूर्व विधायक राम लाल मीणा, प्रदेश कांग्रेस महासचिव लाल सिंह झाला, पूर्व विधायक नगराज मीणा, पीसीसी सचिव कल्पना भटनागर, प्रदेश कांग्रेस सदस्य परमानंद मेहता, उदयपुर शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष फतह सिंह राठौड, पीसीसी सचिव सुमित्रा जैन, भीम सिंह चुंडावत, पीसीसी सचिव ललित बोरीवाल, प्रेम कुमार पाटीदार, जयसमंद प्रधान गंगा राम मीणा, सहित कई कांग्रेस पदाधिकारी एवं कांग्रेस कार्यकर्ता उपस्थित थे।

विदेशी महिला पर फायरिंग करने वाले पुलिस गिरफ्त में

पुलिस ने चार आरोपियों को गिरफ्तार किया

उदयपुर, (कासं)। शहर के सुखेर थाना क्षेत्र में विदेशी महिला पर फायरिंग करने की वारदात का खुलासा करते हुए चार आरोपियों को गिरफ्तार किया।

प्रकरण के अनुसार सुखेर थाना क्षेत्र स्थित होटल रत्नम पैलेस के रिसेप्शनिस्ट मनादर शिवगंज सिरोही निवासी भावेश पुत्र अर्जुनदास वैष्णव ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दी । जिसमें उसने बताया कि कार में सवार चार बदमाशों ने थाईलैंड निवासी थेन्क्च्यू पर फायर करने की रिपोर्ट दी।

मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा, पुलिस उप अधीक्षक कैलाश चन्द्र खटीक के सुपरविजन में डीएसटी टीम प्रभारी धनपतसिंह, सुखेर थानाधिकारी हिमांशुसिंह राजावत मय टीम ने अनुसंधान में मिले साक्ष्यों के आधार पर स्वरूपगंज सिरोही निवासी राहुल गुर्जर, ध्रुव, अक्षय व महिम को अहमदाबाद से डिटेन कर पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया।

प्रारंभिक पूछताछ में पता चला कि घटना वाली रात में विदेशी महिला विरम पैलेस माली कॉलोनी से किसी वाहन में सवार हो सुखेर स्थित रत्नम पैलेस होटल आई। जहां राहुल, ध्रुव, अक्षय व महिम ने महिला के साथ शराब पी। इस दौरान छेड़छाड़ करने पर विदेशी महिला ने राहुल को दांतों से काट खाया तथा नाखून से उसके शरीर पर खरोच दिया था। जिससे नाराज राहुल ने अपनी सुरक्षा के लिए पास में रखी देशी पिस्टल से फायर कर दिया। जो महिला के पीठ पर जा लगा। घटना के बाद युवक उसे गाड़ी में डाल पेसिफिक हास्पीटल की इमरजेंसी के बाहर ले जाकर छोड़ भागे। उसके बाद पेसिफिक की एम्बुलेंस से घायल विदेशी युवती को एमबी चिकित्सालय में भर्ती कर उसका उपचार किया जा रहा है।

पुलिस को पूछताछ में यह भी जानकारी मिली है कि विदेशी महिला शहर में आती जाती रहती है तथा आरोपियों के अलावा उसके अन्य कई लोगों से भी वह संपर्क है। राहुल से भी उसका संपर्क था। महिला पर एस्कोर्ट सर्विस करने की संभावना है। चिकित्सक ने आपरेशन कर गोली को बाहर निकाल दी है। जिसकी हालत खतरे से बाहर है।

2 लाख 72 हजार 150 रूपए जब्त

सूरजगढ़। आदर्श आचार संहिता एवं निर्वाचन आयोग के निर्देशों की पालना में पिलोद चैक पोस्ट पर दौराने चैकिंग एक सफेद रंग की टाटा योगा लोहारू की तरफ से आई। जिसको पुलिस जाब्ता द्वारा तालाशी ली गई। तलाशी के दौरान गाडी के डेस बोर्ड में काले रंग की प्लास्टिक की थैली में दो लाख 72 हजार 150 रूपए मिले। गाड़ी चालक हरियाणा के रोहतक जिले के कलां नौर थाने के निगाना निवासी गुरमीत पुत्र रमेशलाल मेघवाल से रूपए की जानकारी चाही तो संतोषजनक जवाब नहीं दे पाया। दो लाख 72 हजार 150 रूपए जब्त कर लिए गए।

1.84 करोड़ के कार्यों का शिलान्यास

श्रीगंगानगर, (कासं)। गंगानगर विधायक जयदीप बिहाणी ने रविवार को अग्रसेन चौक और यूआईटी रोड पर आयोजित शिलान्यास कार्यक्रम में 1.84 करोड़ रूपये के कार्यों का शिलान्यास किया।

बांदनवाड़ा टोल के पास मंदसौर से जयपुर जा रही स्लीपर बस पलटी

दो जनों की मौत, कई हुए गंभीर घायल

अजमेर/बादंनवाडा, (कासं)। अजमेर जिले के बांदनवाड़ा टोल के पास रविवार सुबह मंदसौर से जयपुर जा रही स्लीपर कोच बस संतुलन बिगडने से पलट गई। हादसे में कई यात्री घायल हो गए और दो यात्रियों की मौत हो गई। हादसे में घायल यात्रियों को अजमेर के जवाहरलाल नेहरु अस्पताल लाया गया, जहां घायल यात्रियों को प्राथमिक उपचार देने के बाद रवाना किया गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

रतलाम निवासी रूकमणी ने बताया कि वह मंदसौर से स्लीपर कोच में सवार हई थीं। उसकी बहन देवी नीमच से बस में बैठी थीं। स्लीपर कोच बस मंदसौर से जयपुर जा रही थी। बांदनवाड़ा के पास अचानक बस

मंदसौर से जयपुर जा रही स्लीपर कोच बस का संतुलन बिगडने से कई यात्री घायल हो गये।

का संतुलन बिगड़ गया और बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। बस में ऊपर की सीट पर कई यात्री गहरी नींद में सो रहे थे। इस हादसे में बस में सवार मंदसौर निवासी दीपक पाटीदार, रितु मीणा, रानू पारीक, श्रैयाज मोदी, दुर्गा बागरी सहित कई यात्री घायल हो गए। इस दुर्घटना में नीमच निवासी महिला यात्री देवी की मौत हो गई। मृतका अपनी बहन रूकमणी ने बताया कि वह बहन के साथ जयपुर जा रही थी। चिकित्सकों ने बताया कि कुछ यात्रियों को मामूली चोटें आई थीं उन्हें प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई है।

नकली वकील बनकर घुमता था, घर पर कमरे में भर रखा था चोरी का सामान

झुंझुनूं। अंबेडकर नगर में तीन नवंबर को हुई 80 लाख की ज्वैलरी व नगदी की वारदात का कोतवाली पुलिस ने खुलासा किया हैं। कोतवाली पुलिस ने चोर की तलाश में 400 सीसीटीवी खंगाले। सीसीटीवी खंगाले के दौरान पुलिस को एक सफेद रंग की स्विफ्ट कार संदिग्ध नजर आई। जिसके बाद पुलिस ने स्विफ्ट कार को तलाशते हुए चिड़ावा पहुंची और आरोपी को चिड़ावा से गिरफ्तार किया।

पुलिस ने वारदात में काम में ली गई कार भी बरामद की है। कोतवाली थानाधिकारी पवन चौबे ने जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस ने आरोपी राजेन्द्र प्रसाद को गिरफ्तार किया हैं। आरोपी बिलवा खेतड़ी का रहने वाला है। जो कुछ सालों से परिवार के साथ चिड़ावा की गौशाला रोड पर स्वयं को हाईकोर्ट को वकील बताकर किराए के मकान में रह रहा था। गिरफ्तार आरोपी पर कई थानों में नकबजनी के कई मामले दर्ज हैं। आरोपी पूर्व में झुंझुनूं के अलावा चूरू, सीकर, नागौर, खेतड़ी की जेलों में भी रह चुका है। कोतवाली थानाधिकारी पवन चौबे ने बताया कि तीन नवंबर की रात पीड़ित भागीरथमल कुमावत अंबेडकर नगर स्थित घर पर ताला लगाकर परिवार के साथ अपने दूसरे मकान पर गए थे। लौटे तो मकान में सामान बिखरा पड़ा था। भागीरथमल ने रिपोर्ट दर्ज कराते हुए बताया कि चोर 80 लाख के गहने, ढाई लाख कैश और सामान ले गया। केस सुलझाने के लिए झुंझुनूं कोतवाली के कॉन्स्टेबल प्रवीण कुमार ने दिन-रात मेहनत की। करीब एक सप्ताह तक आरोपी का पीछा किया। सीसीटीवी कैमरे खंगाले। आरोपी राजेन्द्र प्रसाद की पहचान स्विफ्ट कार से हो सकी। वह चोरी करने कार से ही जाता था। पुलिस रिकॉर्ड में भी उसकी पहचान स्विफ्ट कार से थी। पुलिस रिकॉर्ड से उसका पता निकाला और पीछा करते हुए पुलिस टीम चिड़ावा आरोपी को गिरफ्तार किया हैं। कोतवाली पुलिस गिरफ्तार आरोपी से पूछताछ कर रही हैं।

महंत महाराज रोहित का सम्मान

भरतपुर (निस)। भरतपुर ठंडी सडक स्थित खाटूश्याम जी मंदिर में श्री ब्राह्मण सभा, भरतपुर के पूर्व जिलाध्यक्ष व वरिष्ठ समाजसेवी कौशलेश शर्मा के नेतृत्व में विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में विशेष योगदान देने के लिए ठंडी सडक स्थित खाटू श्याम जी मंदिर के महंत रोहित महाराज का पटका, माला, साफा पहनाकर एवं श्री बांकेबिहारी जी का प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मान किया गया।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम खाटू श्याम जी मंदिर में श्री खाटू श्याम जी का पूजन किया गया। इस अवसर पर श्री ब्राह्मण सभा के पूर्व जिलाध्यक्ष व वरिष्ठ समाजसेवी कौशलेश शर्मा ने बताया कि महन्त रोहित महाराज द्वारा धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों के प्रति अनोखी पहल देखने को मिलती है।

इस अवसर पर रोहित महाराज को श्याम जन्मोत्सव कार्यक्रम की शुभकामनाएं प्रदान करते हुए इनके दीर्घायु जीवन की कामना की। कार्यक्रम में श्री ब्राह्मण सभा के पूर्व जिलाध्यक्ष एवं वरिष्ठ समाजसेवी कौशलेश शर्मा, विप्र फाउंडेशन के पूर्व जिलाध्यक्ष नेमीचंद मुद्गल, समता आंदोलन के जिलाध्यक्ष केदारनाथ पाराशर, अन्नपूर्णा रसोई के संचालक विष्णुदत्त शर्मा, समाजसेवी सेवानिवृत अध्यापक बृज किशोर शर्मा, राज रोडवेज संघ के पूर्व संभागीय अध्यक्ष दिनेश शर्मा जघीना, सेवानिवृत्त सहायक लेखाधिकारी ईश्वरी प्रसाद शर्मा, श्री ब्राह्मण समाज, तिलक नगर के अध्यक्ष बनवारीलाल शर्मा, एलआईसी के लालचंद शर्मा, बजरंग दल के लखन शर्मा, राजेंद्र भारद्वाज, आदि ने भी महन्त रोहित महाराज का सम्मान किया।

घर में सो रहे परिवार पर लोगों ने किया हमला

> ■ दो महिलाएं सहित चार जने हुए घायल, कचरा डालने की बात को लेकर हुआ था विवाद

खेतड़ी, (निसं) पचेरीकलां थाना क्षेत्र के गूंति गांव में देर रात को गाड़ियों में सवार होकर आए लोगों ने घर में सो रहे परिवार पर जानलेवा हमला कर दिया। इस दौरान आपस में मारपीट में दो महिलाएं सहित चार जने घायल हो गए। इस संबंध में पीड़ित की ओर से थाने में 11 जनों के खिलाफ जानलेवा हमला करने का मामला दर्ज करवाया गया है।

जांच अधिकारी एएसआई नरेश कुमार ने बताया कि गूंति निवासी सोनू पुत्र भूपसिंह ने रिपोर्ट दी कि उसके पास शीशपाल के नंबर से फोन आया तथा उसे घर पर होने की जानकारी ली गई। इसके बाद उदयभान, नीरज, बिजेंद्र, जोगेंद्र, लोकेश, संदीप, सुरेश, धर्मेंद्र, विजेंद्र व रामकरण गाड़ी व बाइक पर सवार होकर उसके घर आए तथा घर में घुसकर उसके साथ बेरहमी से मारपीट करने लगे। शोर शराबा होने पर परिवार के अन्य लोग बीच-बचाव करने आए तो उन्होंने विकलांग पिता व माता के साथ मारपीट की । इस दौरान आरोपियों ने उसकी माता की लज्जा भंग करने का प्रयास किया।

मारपीट के दौरान गांव के अन्य लोग भी एकत्रित हुए तो वह गाड़ियों में बैठकर फरार हो गए। मारपीट में मोनू व उसके परिजन घायल हो गए, जिनको उपचार के लिए बुहाना के राजकीय अस्पताल में ले जाया गया। पीड़ित ने बताया कि पांच नवंबर को आरोपी नीरज का पिता शिक्षक के पद से रिटायर होने पर उन्होंने सवामणी का आयोजन किया था। जिसका कचरा मंदिर के पास डाल दिया गया। मंदिर के पास पड़े कचरे का पुजारी के कहने पर विडियो बनाकर गांव के ग्रुप में डाल दिया, जिससे वह खफा हो गए। इस बात को लेकर हुए विवाद पर उन्होंने उसके परिवार पर हमला कर दिया।

विधायक अनिता भदेल के खिलाफ गुर्जर समाज ने भरी हुंकार

आरएएस अधिकारी भरत गुर्जर के समर्थन लामबंद समाज के लोग

अजमेर, (कासं)। अजमेर दक्षिण विधायक अनिता भदेल द्वारा एडीए के उपायुक्त भरत गुर्जर के खिलाफ अभद्र भाषा वाला वीडियो वायरल होने के बाद अजमेर का गुर्जर समाज लामबद्ध हो गया। रविवार को रामगंज स्थित उबरा का देवरा मंदिर में पंच-पटेलों ने बैठक अयोजित कर विधायक भदेल और भाजपा के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए हूंकार भरी। बैठक में निर्णय लिया गया कि विधायक गुर्जर समाज से माफी मांगे। नहीं तो 13 नवंबर को होने वाले उपचुनावों में भाजपा खामियाजा भुगतने को तैयार रहे। सोमवार को गुर्जर समाज द्वारा कलेक्ट्रेट पर धरना प्रदर्शन किया जाएगा।

अजमेर के उबरा का देवरा में गुर्जर समाज के पंच पटेलों की बैठक हुई।

अजमेर के सर्किट हाउस में 8 नवंबर को नगरीय विकास मंत्री झाबर सिंह खर्रा अजमेर प्रवास पर थे, तब उन्होंने जनसुनवाई की थी। जनसुनवाई में ही अजमेर दक्षिण विधायक अनिता भदेल एक शिकायत ले कर उनके पास पहुंची। विधायक ने आरोप ल गाया कि अजमेर विकास प्राधिकारण के उपायुक्त भरत गुर्जर भ्रष्टाचारी हैं। विधायक भदेल ने तेश में आकर यहां तक कह दिया था कि यदि उपायुक्त गुर्जर उनके सामने आए जाएं तो वे उन्हें मारेंगी। विधायक भदेल का यह बयान का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। भदेल का यह बयान सामने आने के बाद गुर्जर समाज में भारी रोष उत्पन्न हो गया।

गुर्जर समाज अजमेर के प्रवक्ता भगवान सिंह ने कहा कि विधायक भदेल ने सार्वजनिक रूप से मीडिया के सामने

> ■ उबरा का देवरा मंदिर में पंच-पटेलों ने की हुई बैठक
>
> ■ कलेक्ट्रेट पर धरना प्रदर्शन आज

समाज के प्रशासनिक अधिकारी के खिल ाफ अमर्यादित भाषा का उपयोग किया है। उन्होंने कहा कि वे भरत गुर्जर को मारेंगी और जनता भी मारेगी। इस बायान में समाज में आक्रोश है। विधायक को इस तरह की भाषा का प्रयोग नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रदेश और केंद्र में भाजपा की सरकार है, वे इस आरोप की जांच करवा सकती थीं। जबकि एडीए उपायुक्त भरत गुर्जर को उपराष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया है। उन्होंने देव माल ी गांव को वर्ल्ड ट्यूरिस्ट में शामिल करवाया था। एक ईमानदार और अपने दायित्वों का निर्वाह करने वाल े अधिकारी का अपमान किया है। समाज ने सोमवार को कल ेक्ट्रेट पर विशाल धरने की चेतावनी दी है। उल्ले खनीय है कि भदेल की शिकायत पर एडीए उपायुक्त भरत गुर्जर की वर्तमान में एडीए के उपायुक्त पद से हटा दिया गया है।

उपचुनाव में बहिष्कार की धमकी :- सिंह ने बताया कि बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लि या गया है कि भदेल समाज से माफी मांग लें, नहीं तो अजमेर का गुर्जर समाज 13 नवंबर को होने वाल े उपचुनावों में बहिष्कार करेगा। उन्होंने मुख्यमंत्री और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष को इस प्रकरण में हस्तक्षेप की मांग की है। समाज के पूर्व सरपंच हरचंद हाकल ा ने कहा कि भाजपा विधायक ने समाज के अधिकारी का अपमान नहीं किया बल्कि पूरे समाज को अपमानित किया है। समाज ये बर्दश्त नहीं करेगा।

संक्षिप्त

दीपावली स्नेह मिलन समारोह

दूदू। जिला मुख्यालय पर स्थित राजस्थान पेंशनर समाज कार्यालय सभागार में दीपावली स्नेह मिलन समारोह आयोजित किया गया अध्यक्ष अशोक कुमार शर्मा के नेतृत्व में समारोह का आयोजन किया गया इस दौरान सरक्षक हाजी मदार बक्ष प्रमोदनागरवाल सहित सहित सभी पेंशन प्राप्त कर रहे कर्मचारी मौजूद रहे।

राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता में चयन

निवाई। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुरिया के 2 खिलाडियों का राष्ट्रीय स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता में चयन हुआ है। शारीरिक शिक्षक मुकेश बोहरा ने बताया कि विद्यालय के खिलाडी मुकेश चौधरी व आशीष चौधरी का 17 वर्ष कबड्डी प्रतियोगिता में राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर के उपरांत राष्ट्रीय स्तरीय टीम में चयन हुआ है। उन्होंने बताया कि दोनों खिलाडी मध्य प्रदेश में आयोजित राष्ट्रीय स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता में राजस्थान का नेतृत्व करेंगे।

पुलिस हिरासत में आरोपी

दूदू। जिले के अधीन मोजमाबाद थाने की पुलिस ने दौरान गश्त राष्ट्रीय राजमार्ग 48 पर नासनोता के पास एक व्यक्ति को हाथ में चाकू लेकर इधर-उधर लहराते हुए घूमने के दौरान राहगीरों को जान से मारने की धमकियां देने के दौरान गिरफ्तार कर चाकू बरामद कर लिया थाना प्रभारी संजय मीणा के अनुसार गैस के दौरान अभियुक्त द्वारा लोगों को जान से मारने की धमकियां दी जा रही थी पुलिस ने अभियुक्त जितेंद्र कुमार गुर्जर उम्र 37 वर्ष निवासी नासनोता को आर्म्स एक्ट में मुकदमा दर्ज कर अनुसंधान शुरू कर दिया गया

मोरिया वाले बालाजी मंदिर में हुआ अन्नकूट

निवाई। मोरिया वाले बालाजी मंदिर में बालाजी मंडल के तत्वावधान में रविवार को अन्नकूट प्रसादी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बालाजी का विशेष श्रृंगार किया गया। मंदिर प्रांगण में श्रद्धालुओं ने दिनभर सत्संग व भजन कीर्तन किया। कीर्तन के बाद रामभाजा, पूडी, माल पुआ, खीर एवं मेवे का बालाजी महाराज के भोग लगाया गया। इसके बाद आरती की गई। अन्नकूट महोत्सव को लेकर रंग बिरंगी लाइटिंग से मंदिर को सजाया गया। इस अवसर पर मंदिर मंहत सौरभ दास, पुजारी बजरंग स्वामी, ओमप्रकाश शर्मा, राधेश्याम शर्मा, सीताराम अग्रवाल, मदनलाल सैनी, अशोक पारीक, गणेशलाल सैनी, हरिनारायण शर्मा, इंदिरा देवी, कमला देवी एवं रामदयाल स्वामी सहित कई श्रद्धालु मौजूद थे।

करंट की चपेट से भैंस की मौत

निवाई। गांव मूंडिया की खारडा की ढाणी में करंट की चपेट में आने से एक भैंस की मौत हो गई। मूंडिया की खारडा की ढाणी निवासी दानाराम मीणा पुत्र बिसनाराम मीणा की भैंसे गांव के पास स्थित तालाब में पानी पीने के लिए गई थी। तालाब में एक विद्युत पोल है। जिसमें करंट प्रभावित हो रहा था। पानी पीने के दौरान एक भैंस पोल के समीप पहुंची इस दौरान भैंस करंट की चपेट में आ गई। जिससे भैंस की मौत हो गई। पीड़ित दानाराम मीणा ने सदर पुलिस थाने में मामला दर्ज करवाया व पशु चिकित्सक की टीम द्वारा पोस्ट मार्टम किया गया।

काव्य सग्रंह ''मैं कहूँ नहीं'' का विमोचन

टोंक। जनसरोकार मंच टोंक द्वारा आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में युवा लेखक सिद्धांत शर्मा की पहली पुस्तक, काव्य-संग्रह ''मैं कहूँ नहीं'' का विमोचन 10 नवंबर को सुबह 12 बजे सिटी पैलेस, अजीम प्रेमजी फाउंडेशन में किया गया। इस कार्यक्रम में साहित्य, शिक्षा, कला, और समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े शिक्षक, शिक्षिकाएं, युवा, और साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे, जिन्होंने इस नई कृति का स्वागत किया।सिद्धांत राजस्थान के टोंक जिले के निवासी हैं, उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा मोडियाला, पीपलू, और टोंक से पूरी की है। डॉ. हरीसिंह पीएचडी कर रहे हैं। हिंदी और अंग्रेजी साहित्य के साथ दर्शन में गहरी रुचि रखने वाले सिद्धांत अपने अध्ययन और लेखन के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र में योगदान दे रहे हैं।

सुन्दरकाण्ड व भजन संध्या के साथ सम्पन्न हुआ शताब्दी वर्ष समारोह

कोटपूतली। कस्बावासियों की आस्था के केन्द्र श्रीराम भवन संस्था के 100 वर्ष पूरे होने पर रविवार को बड़े ही धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये। समारोह के तीसरे दिन रविवार को प्रात भगवान श्रीराम की भव्य शोभा यात्रा व सैकड़ों महिलाओं द्वारा विशाल कलश यात्रा निकाली गई। जिसका शुभारम्भ श्रीराम भवन परिसर स्थित राम मंदिर से किया गया। मंदिर के पूजारी पं. योगेश शर्मा द्वारा कलश पूजन करवाकर यात्रा का शुभारम्भ किया गया। यात्रा में भगवान श्रीराम व सीता माता की भव्य झांकी के साथ सैकड़ों महिलायें विभिन्न परिधानों में सिर पर कलश लेकर व पुरूष एवं बच्चे हाथों में ध्वज पताका लेकर भगवान श्रीराम का गुणगान करते हुये चल रहे थे। भगवान श्रीराम व सीता माता की भव्य झांकी व कलश यात्रा कस्बे के विभिन्न प्रमुख मार्गो से निकाली गई।

यात्रा श्रीराम भवन से नगर पालिका तिराहा, मुख्य मार्ग से मैन चौराहा, कृष्णा टॉकीज रोड़ से दलीप सिंह राठौड़ पार्क के सामने से मुख्य बाजार आजाद चौक होती हुई श्रीराम भवन मंदिर पहुंची। जहां भगवान श्रीराम की भव्य आरती का आयोजन किया गया। यात्रा का श्रद्धालूओं द्वारा जगह-जगह तोरण द्वार लगाकर व पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। इस दौरान अध्यक्ष राकेश खजांची, उपाध्यक्ष राजेश बंसल, महामंत्री राजेश गुप्ता, कोषाध्यक्ष घनश्याम बंसल, मंत्री अशोक बंसल, सदस्य विष्णु स्वरूप चौधरी, सियाराम शरण बंसल, एड. मधुसुदन अग्रवाल, सुनील खजांची, पं.आनन्द शर्मा, कुलदीप बंसल, अनिल शरण बंसल, दीपक गुप्ता, रमेश किताबवाला, किशन शरण बंसल, बजरंग शरण बंसल, अनूप बंसल, भारत बंसल, दलिप शरण, देवेन्द्र शरण, संतोष किताबवाला, जगदीश बंसल, सौरभ बंसल, डॉ. महेश अग्रवाल, छाजूराम अग्रवाल, ओमप्रकाश बंसल, दीपक चौधरी, सीताराम बंसल, संदीप बंसल, दीपक बंसल, संतोष बंसल (बंटी), मोनू बंसल, प्रबंधक महेश पारीक समेत बड़ी संख्या में महिला पुरूष श्रदालू मौजूद रहे।

भगवान श्रीराम की निकली भव्य शोभा यात्रा व कलश यात्रा।

- भामाशाह एवं पूर्व पदाधिकारियों का किया सम्मान

भामाशाह एवं पूर्व पदाधिकारी सम्मान समारोह आयोजित - श्रीराम सभा (राम भवन) के शताब्दी वर्ष समारोह के तहत दोपहर को भामाशाह एवं पूर्व पदाधिकारियों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष गोपाल शरण गर्ग व अध्यक्षता समिति अध्यक्ष राकेश खजांची ने की। इस मौके पर भामाशाहों एवं पूर्व पदाधिकारियों का सम्मान किया गया। गर्ग ने सनातन धर्म को आगे बढ़ाने और पाश्चयात संस्कृति से दूर रहने की बात कही। पूर्व महामंत्री अनिल शरण ने संस्था के 100 वर्ष के इतिहास पर संक्षिप प्रकाश डाला। अंत में अध्यक्ष ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

इस मौके पर डॉ. मुकेश सैनी, सुनिल, दीपक बंसल, नरेश शेखावत, मुकेश शर्मा, पत्रकार अनिल शरण बंसल, बालकृष्ण शुक्ला, व्याख्याता सुमेश सैनी, व्यापारी कुलदीप सैनी, शिक्षक कमलेश सैनी व दिनेश सैनी, नरसी सैनी, प्राचार्य पूरणचंद कसाना, राजेश सैनी, बीएड कॉलेज के सचिव सत्यनारायण कौशिक, अमरसिंह कुमावत, रामसिंह पायला, राजपाल कसाना, पार्षद मनोज गौड़, दीपक बंसल, सौरभ शरण, सरपंच विक्रम रावत, सुमित शर्मा समेत श्रीराम सभा समिति कार्यकारिणी व बड़ी सख्या में श्रद्धालू उपस्थित रहे।

तीन दिवसीय विशेष शिविर शुरू

कोटा, (निसं)। मिनिस्ट्री ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी भारत सरकार के अंतर्गत संचालित कॉमन सर्विस सेंटर सीएससी केंद्रों पर विशेष शिविरों का आयोजन किया गया। सीएससी जिला प्रबंधक लोकेश भट्ट व विकाश तूरावा ने बताया कि इन शिविरों में नि:शुल्क ई-श्रम कार्ड, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना, प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना, पेंशनर का जीवन सत्यापन, जन धन खाते, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, आधार सम्बंधित सेवाएं, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री मानधन योजना, टेली लॉ नि:शुल्क कानूनी सलाह एवं टेलीमेडिसिन तथा गैर सरकारी योजनाओं पेन कार्ड, बैंकिंग लेनदेन, लोन, रिचार्ज, ग्रामीण ई स्टोर, ई कॉमर्स, कृषि सेवाओं आदि सेवाओं में आमजन के नामांकन किए गए। इन सभी योजनाओं के नामांकन करने से आमजन को लाभ मिलेगा। इस दौरान सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी जाएगी जिससे की आमजन को इसका लाभ मिल सकें। यह शिविर हर सीएससी केंद्र पर दो दिन ओर लगेंगे।

विप्र फाउंडेशन अधिकारी कर्मचारी संघ का दीपावली स्नेह मिलन समारोह संपन्न

कोटा, (निसं)। विप्र फाउंडेशन अधिकारी कर्मचारी संघ प्रदेश का दीपावली स्नेह मिलन समारोह मंगलेश्वरी गार्डन कोटा में पर आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि विप्र फाउंडेशन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भुवनेश्वर शर्मा, प्रदेश महामंत्री हरीसूदन शर्मा रहे।

प्रदेश प्रवक्ता रमेश चंद्र गौतम ने बताया कि समारोह के प्रारंभ में सभी आगंतुक नियुक्त पदाधिकारियों का संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भुवनेश्वर शर्मा, प्रदेश महामंत्री हरीसूदन शर्मा, अधिकारी कर्मचारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष रमेश शर्मा ने दुपट्टा पहनकर स्वागत किया गया।

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भुवनेश्वर शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि आज समाज को मनभेद मिटाकर एक होने की आवश्यकता है, एक रहेंगे तभी हमारी संस्कृति और अस्तित्व को बचा पाएंगे, उन्होंने संस्कारों पर बोलते हुए कहा कि जनेऊ और तिलक ब्राह्मण की पहचान है आज हालत यह हो गई हे कि परीक्षाओं में हमारे बच्चों से वह भी उतरवा ली जाती है विप्र समाज इसका कड़ा प्रतिरोध करता हैं।

- समारोह के प्रारंभ में नियुक्त पदाधिकारियों का संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भुवनेश्वर शर्मा, प्रदेश महामंत्री हरीसूदन शर्मा, अधिकारी कर्मचारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष रमेश शर्मा ने दुपट्टा पहनकर स्वागत किया गया

प्रदेश महामंत्री हरसूदन शर्मा ने समाज में फेल रही कुरीति प्री-वेडिंग शूट और शादी समारोह में अन्न की बर्बादी को हतोत्साहित करने का सभी को संकल्प दिलाया। प्रदेश अध्यक्ष रमेश शर्मा ने विप्र समाज के सभी अधिकारी कर्मचारियों से समाज के लोगों को राजकीय कार्यों में सहयोग करने तथा किसी अधिकारी कर्मचारी के साथ दुर्भावना, पीड़ित करने की जानकारी होने पर उसकी सहायता और कड़ा प्रतिरोध जताने का आह्वान किया और आगामी 22 दिसंबर को विप्र फाउंडेशन के द्वारा आयोजित अन्नकूट और परिचय सम्मेलन में विशाल संख्या में शामिल होकर ब्राह्मण एकता का परिचये को कहा।

इस अवसर पर पदाधिकारी रघुनंदन गौतम, जिला अध्यक्ष नरेंद्र नंदवाना, नित्यानंद शर्मा, नमो नारायण शर्मा, रवि गौतम, डॉ. निरंजन गौतम, जिला अध्यक्ष जगदीश शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए।

मिलन समारोह में घनश्याम शर्मा, रौनक मिश्रा, के.के. गौतम, सुनील शर्मा, संजय शर्मा, अपेक्षित शर्मा चंद्र शेखर शर्मा, शैलेश गौतम, अनिल शर्मा रमेश चंद्र शर्मा चंद्र शेखर कटारा, के.के. शर्मा, अरुण शर्मा, नरेश शर्मा, पुरुषोत्तम गौतम, रजनीश शर्मा आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे।

अंत में बैठक जलपान के साथ संपन्न हुई, प्रदेशाध्यक्ष द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया।

कार्यशाला का आयोजन

रामगंजमण्डी (निसं)। मोडक मंगलम सीमेंट लिमिटेड क्लब हाउस में रविवार को खान सुरक्षा निदेशालय अजमेर द्वारा हैंडलिंग ऑफ एक्सप्लोसिव इन माइंस कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें अजमेर से आये खान सुरक्षा निदेशक सुरजीत कटेवा ने रामगंजमंडी झालावाड़ क्षेत्र की सभी खदानों में ब्लास्टिंग से संबंधित टेक्निकल व नॉन टेक्निकल कर्मचारियों की मीटिंग का आयोजन किया। कार्यशाला में क्षेत्र की खदानों के माइंस मैनेजर फोरमेन मेट ब्लास्टर व ब्लास्टिंग से जुड़े श्रमिक वर्कशॉप में शामिल हुए। जहां खान सुरक्षा निदेशक सुरजीत कटेवा ने सभी को खदानों में एक्सप्लोसिव को हैंडलिंग व सुरक्षित ब्लास्टिंग करने के बारे में समझाया।

जिससे खदानों में ब्लास्टिंग से होने वाली दुर्घटनाओं से बचा जा सके। सुरक्षित तरीके से ब्लास्टिंग करने के बारे में विस्तार से समझाया गया। एस एम मीणा ने सभी को एक्सप्लोसिव हैंडलिंग ट्रांसपोर्ट व उपयोग एवं सुरक्षित ब्लास्टिंग करने के तरीकों को रेगुलेशन के अनुसार सुरक्षित तरीके से करने के बारे में समझाया।

इन्द्रनन्दी महाराज एवं मुनि उत्कृष्ट नन्दी का हुआ मंगल प्रवेश

निवाई। सकल दिगम्बर जैन समाज निवाई एवं डिग्गी के तत्वावधान में आचार्य इन्द्र नन्दी महाराज एवं मुनि उत्कृष्ट नन्दी महाराज संघ का गांव बरोनी में मंगल प्रवेश हुआ। जैन समाज के प्रवक्ता विमल जौला ने बताया कि आचार्य पदमनन्दी महाराज के शिष्य आचार्य इन्द्र नन्दी महाराज संघ सहित डिग्गी चातुर्मास कर सोहेला होते हुए बरोनी पहुंचे जहां महावीर प्रसाद पराणा, हुकमचंद जैन, प्रेमचंद जैन, विमल सोगानी, प्रकाशचंद जैन, विष्णु बोहरा, प्रकाश पराणा, महेन्द्र जैन व धनश्याम जैन सहित कई श्रद्धालुओं ने श्रीफल चढाकर पूजा अर्चना की। सुनील भाणजा ने बताया कि आचार्य संघ गांव बरोनी से मंगल विहार कर पराणा व नटवाड़ा होते हुए शिवाड़ पहुंचेंगे। उन्होंने बताया कि संघ में संघस्थ जैन मुनि उत्कृष्ट नन्दी महाराज डिग्गी में दीक्षा ली उसके पश्चात जैन मुनि मोक्ष मार्ग प्रशस्त कर अपने दीक्षा गुरु के साथ प्रथम बार विहार करते हुए गांव बरोनी पहुंचे। जहां श्रद्धालुओं ने श्रीफल भेंट कर अगुवानी की।

निवाई-गांव बरोनी में आचार्य इन्द्रनन्दी महाराज एवं मुनि उत्कृष्ट नन्दी को श्रीफल भेंट कर अगुवानी करते हुए श्रद्धालु।

प्रशिक्षण के उपरान्त रवाना होंगे मतदान दल

अलवर। जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. आर्तिका शुक्ला ने बताया कि विधानसभा उप चुनाव 2024 हेतु भारत निर्वाचन आयोग एवं निर्वाचन विभाग राजस्थान के निर्धारित कार्यक्रमानुसार विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र रामगढ के लिए 13 नवम्बर 2024 को मतदान होगा।

इस हेतु नियोजित मतदान दल 12 नवम्बर को मतदान दल रवानगी स्थल बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय अलवर से अंतिम/तृतीय प्रशिक्षण उपरान्त अपने निर्धारित मतदान केंद्रों के लिए रवाना होंगे। विधानसभा क्षेत्र के लिये नियुक्त सैक्टर मस्ट्रेट्स भी मतदान दलों के साथ ही प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी निर्वाचन सामग्री प्राप्त कर निर्धारित मतदान केंद्रों/सैक्टर के लिए रवाना होंगे जिला निर्वाचन अधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया है कि मतदान केंद्रों पर टेंट, मंच, कुर्सियां, रोशनी, पेयजल, चिकित्सा व्यवस्था, माइक आदि की सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित कर लेवे। उन्होंने बताया कि मतदान दल सर्वप्रथम सामग्री प्राप्त करेंगे तथा सामग्री प्राप्ति के उपरान्त निर्धारित वाहन से मतदान केंद्र के लिए प्रस्थान करेंगे। प्रभारी अधिकारी मतदान दल गठन प्रकोष्ठ, वाहन व्यवस्था प्रकोष्ठ एवं रिटर्निंग अधिकारी तथा सैक्टर मजिस्ट्रेट यह सुनिश्चित करेंगे कि मतदान दल अपने निर्धारित समय पर गन्तव्य मतदान केंद्रों के लिए प्रस्थान कर जावे। प्रभारी अधिकारी मतदान दल गठन प्रकोष्ठ द्वारा प्रशिक्षण स्थल पर मतदान दलों में नियुक्त कार्मिकों को जानकारी उपलब्ध कराने हेतु प्रशिक्षण स्थल के पास ही प्रभारी अधिकारी रवानगी-संग्रहण व्यवस्था प्रकोष्ठ से सम्पर्क एवं समन्वय स्थापित कर हेल्प डेस्क की स्थापना की जाकर कार्मिकों को आने वाली समस्याओं का तुरन्त निस्तारण कराएंगे।

पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के लिए विशाल वृक्ष कथा का आयोजन

पावटा। आंवला नवमी के पावन पर्व पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक की प्रेरणा से एक पेड देश के नाम अभियान के तहत पावटा कस्बा स्थित खोस्या मंदिर मे दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक विशाल वृक्ष कथा का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत पर्यावरण संयोजक अशोक कुमार ने बहुत ही रोचक व प्रकृति के लिए आवश्यक पेड पौधों के औषधि गुण के बारे मे विशाल वृक्ष कथा के माध्यम से बहुत ही सुंदर चित्रण किया। और मनुष्य के लिए वृक्षों के महत्व व गुण के बारे मे संगीत में व्यायान करते हुए विस्तार से बताया। इस कथा के अंत मे वृक्ष भगवान की संगीतमय आरती की गई। इस दौरान पौधों से होने वाले फायदो की जानकारी देकर पौधे लगाने व उनका पालन पोषण कर पेड की सुरक्षा का संकल्प सभी को दिलवाया गया। इस कथा मे कार्यक्रम की व्यवस्था जिला जल आयाम प्रमुख विष्णु कुमार टांक द्वारा एवं कार्यक्रम की रूपरेखा डॉ. महेश कुमार सैनी जिला पेड आयाम प्रमुख एवं पावटा खंड पर्यावरण संयोजक के द्वारा बनाई गई कार्यक्रम का शुभारभ उमेश कुमार टांक द्वारा किया गया। संगीत वादक निरंजन लाल सैनी ढोलक वादक, हारमोनियम पर जनार्दन एवं उनके सहयोगी ने निस्वार्थ भाव से कार्यक्रम में भाग लेकर स्वर लहरी बनाए रखी।

इस अवसर पर विभाग शारीरिक प्रमुख मदनलाल सैनी, विभाग सेवा प्रमुख पुरुषोत्तम कुमार मिश्रा, कोटपूतली जिला पर्यावरण संयोजक राम सिंह चौधरी, खंडकाव्य रघु मिश्रा एवं विविध संगठनों के सदस्य मौजूद रहे।

कथा वाचन करते।

- आरएसएस के एक पेड देश के नाम अभियान के तहत कस्बे वासियों को बताया पेडों का महत्व

स्वदेशी स्वावलंबन दिवस के रूप में जयंती मनाई

छबड़ा (निसं)। स्वदेशी जागरण मंच द्वारा रविवार को आदर्श विद्या मंदिर में ऋषि दत्तोपंत ठेंगड़ी की जन्म जयंती स्वदेशी स्वालंबन दिवस के रूप में मनाई गई। कार्यक्रम का शुभारंभ दामोदर सेन द्वारा किया गया। इस अवसर पर दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय कार्यक्रम का लाइव प्रसारण किया गया। दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम को मुख्य अतिथि रविशंकर संस्थापक आर्ट ऑफ़ लिविंग फाउंडेशन, मुख्यवक्ता मावी भागैय्या अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य आरएसएस, अध्यक्षता डॉक्टर चिन्मय पंडया उप कुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा संबोधित किया। वक्ताओं ने स्वदेशी अपनाने और अपने राष्ट्र को स्वावलंबी भारत बनाने पर जोर दिया। भाषा, भूषा, भेषज, भ्रमण सभी स्वदेशी होना चाहिए। हमे भारत की गौरवशाली संस्कृति और परम्पराओ को आग्रहपूर्वक अपनाना चाहिए।

सार-समाचार

2 ट्रैक्टर ट्रॉलियां जब्त

निवाई। सदर थाना पुलिस ने दो अलग-अलग स्थानों से अवैध बजरी से भरे हुए 2 ट्रैक्टर ट्रॉलियों को जब्त किया है। थानाधिकारी जयमलसिंह ने बताया कि पुलिस गश्त के दौरान गांव सजिया के तालाब के समीप से एक ट्रैक्टर ट्राली व गांव कनेसर के समीप से दूसरे ट्रैक्टर ट्रॉली को मय बजरी के जब्त किया है। दोनों ट्रैक्टर ट्राली को सुरक्षार्थ पुलिस थाना परिसर में खड़ा करवा दिया गया है।

पुलिस थाने में जब्त ट्रैक्टर ट्रॉली।

कृषि विभाग ने दी किसानों को सलाह

कोटपूतली। कृषि विभाग ने फसलों में डीएपी के विकल्प के रुप में सिंगल सुपर फॉस्फेट (एसएसपी) अथवा एनपीके उर्वरकों का उपयोग कर जिले के किसानों को कम लागत में गुणवत्ता युक्त अच्छी उपज प्राप्त करने की सलाह दी है। संयुक्त निदेशक कृषि एम.के. जैन ने किसानों को सलाह दी है कि वे रबी फसलों जैसे-सरसों, गेहूं, चना आदि सभी फसलों में डीएपी के स्थान पर सिंगल सुपर फॉस्फेट (एसएसपी) अथवा एनपीके उर्वरक की विभिन्न ग्रेडस में से किसी भी ग्रेड का उपयोग करें। उन्होंने बताया कि डीएपी के स्थान पर 03 बैग एसएसपी, 01 बैग यूरिया का उपयोग करने पर 23 किलोग्राम नाईट्रोजन, 24 किलोग्राम फॉस्फोरस व 16.5 किलोग्राम सल्फर मिलती है, जबकि 01 बैग डीएपी से केवल 09 किलोग्राम नाईट्रोजन व 23 किलोग्राम फॉस्फोरस ही फसलों को मिलती है। साथ ही एनपीके की कई ग्रेडस में भी सल्फर मिलता है। जैन ने बताया कि एसएसपी व एनपीके की कई ग्रेडस से सल्फर भी अतिरिक्त मिलती है, जिससे सरसों में तेल की मात्रा बढ़ती है व उपज भी अधिक मिलती है। साथ ही सल्फर से फसल में प्रोटीन, विटामिन भी ज्यादा मिलते है जो चना फसल के लिये आवश्यक है। किसानों द्वारा डीएपी के स्थान पर एसएसपी अथवा एनपीके उर्वरक का प्रयोग करने से लागत में भी कमी आती है, क्योंकि एसएसपी प्रयोग करने से सल्फर पर अलग से किसानों को खर्चा नहीं करना पड़ता है। साथ ही एसएसपी उर्वरक का उत्पादन राज्य में ही होने से आसानी से बाजार में उपलब्ध है। राज्य में एसएसपी व एनपीके उर्वरक आसानी से बाजार में उपलब्ध है। किसानों को सलाह दी जाती है कि वें उर्वरक ध्बीज ध्दवाई अधिकृत विक्रेता से ही लेवें व पक्का बिल अवश्य लेवें। विभाग द्वारा जिला स्तर पर नियंत्रण कक्ष भी स्थापित किया गया है। जिस पर किसान खेती व उर्वरकों के संबध में अपनी किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते है व उर्वरकों के संबध में शिकायत भी कर सकते है। नियंत्रण कक्ष का मोबाईल नम्बर 9414207457 है।

घर में घुसकर महिला के साथ मारपीट का आरोप, मामला दर्ज

खैरथल। ततारपुर थाना क्षेत्र के गांव में एक महिला के साथ मारपीट और छेड़खानी कर प्राइवेट पार्ट में मिर्ची डालने का मामला सामने आया है। इस हास्य का मामला पुलिस थाने में दर्ज कराया गया है। महिला को हालत गंभीर होने पर अलवर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है । ततारपुर थानाधिकारी अंकेश कुमार ने बताया मंगलवार को कुछ लोगो के खिलाफ घायल महिला के पति ने अपनी पत्नी के साथ मारपीट और छेड़खानी करने का मामला नामजद दर्ज करवाया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पीड़ित महिला के पति ने बताया कि उनकी पत्नी मिड डे मील के तहत स्कूल में खाना बनाने का काम करती है । शनिवार शाम को स्कूल की छुट्टी के बाद अपने घर आई । घर पर मेरी पत्नी अपने बच्चों के साथ घर पर अकेली थी । तभी उनके चाचा ताऊ के लड़के एक राय होकर घर में घुस गए और घुसकर बच्चों सहित मेरी पत्नी के साथ लाठी और सरिए से मारपीट की गई और उसके बाद वहां लालू ठाकुर दास स्वामी श्याम सुंदर और सपना सहित मिलकर मेरी पत्नी के कपडे उतार दिए और उसकी प्राइवेट पार्ट्स में लाल मिर्च डाल दी जिसकी वजह से वह गम्भीर घायल हो गई । महिला को उपचार के लिए ततारपुर के में उपचार के लिए भर्ती करवाया गया था लेकिन महिला की हालत गंभीर होने पर देर रात अलवर जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया। अभी महिला का उपचार जिला अस्पताल में जारी है । महिला के पति ने थाने में पहुँचकर सभी लोगों के खिलाफ नाम सहित मुकदमा दर्ज करवाया गया है ।

दिव्यांगजनों के लिये कृत्रिम अंग तथा उपकरण वितरण के कैम्प होंगे आयोजित

कोटपूतली। राज्य सरकार वित्तीय वर्ष 2024-25 की बजट घोषणा संख्या 92 (1) उपमुख्यमंत्री द्वारा विशेष योग्यजनों को सम्बल प्रदान करने की दृष्टि से मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार 15 दिसम्बर को राजस्थान में जिला मुख्यालयों पर 10 हजार विशेष योग्यजनों को कृत्रिम अंगध्उपकरण वितरित किये जाने है। सहायक निदेशक रमेश दहमीवाल ने बताया कि जिले के सभी ब्लॉकों में शिविरों के माध्यम से बजट घोषणा के क्रियान्वयन के साथ ही निदेशालय विशेष योग्यजन द्वारा संचालित सुखद दाम्पत्य जीवन विवाह योजना, मुख्यमंत्री विशेष योग्यजन स्वरोजगार ऋण योजना, विशेष योग्यजन छात्रवृति योजना, विशेष योग्यजन पेंशन योजना, यू.डी.आई.डी (चिन्हीकरण) योजना आदि योजनाओं में भी आवेदन करवाकर लाभ दिलवाया जाना प्रस्तावित है। जिले में शिविरों का आयोजन पंचायत समिति परिसर में होगा। 12 नवम्बर को पंचायत समिति नीमराना, 13 नवम्बर को पंचायत समिति बहरोड़, 14 नवम्बर को पंचायत समिति पावटा, 19 नवम्बर को पंचायत समिति बानसूर, 20 नवम्बर को पंचायत समिति कोटपूतली व 21 नवम्बर को पंचायत समिति विराटनगर में कैम्प आयोजित होंगे।

40 वर्षों का ऐतिहासिक जश्न व शिक्षा का अनोखा कारवां

टोंक। सैंट सोल्जर शिक्षा समिति के स्थापना के 40 वर्ष पूरे होन के उपलक्ष्य में टोंक की सड़कों पर एक ऐसा दृश्य उभरा, जो शहरवासियों को रोमांचित और गर्वित कर गया। इस आयोजन की शुरुआत एक साधारण रैली से कहीं अधिक, एक शैक्षणिक आंदोलन के रूप में हुई, जिसने न केवल शिक्षा बल्कि सामाजिक चेतना के अनोखे संदेशों से शहर को गुंजायमान कर दिया। समिति के प्रांगण में सुबह की हल्की धूप में ध्वजारोहण करते हुए संस्था निदेशक बाबूलाल शर्मा ने जब ध्वज फहराया, तो चारों ओर एक अद्भुत ऊर्जा का संचार हो उठा। निदेशक बाबूलाल शर्मा ने विशेष रूप से 1984 के प्रथम बैच के छात्रों को आमंत्रित कर उनका सम्मान किया। इस अवसर पर पुराने छात्र जैसे महेश सोनी, दीपा यादव, नवीन सोनी, पिंकी सोनी, हेमलता जैन, मीनाक्षी सोनी, अजय शर्मा और अनवर खान उपस्थित रहे।

कार्यक्रम को ऐतिहासिक बनाने में हितेश शर्मा, शिप्रा शर्मा, मंजू माथुर, और मदन मोहन शर्मा सहित स्कूल के वर्तमान छात्रों और स्टाफ की अहम भूमिका रही। सभी ने मिलकर एक विशाल रैली का आयोजन किया, जिसमें पुराने और वर्तमान छात्र शिक्षा और समर्पण की एकता का संदेश देते हुए शामिल हुए। इस रैली में करीब पाँच हजार छात्र शामिल हुए थे, लेकिन सबसे चौंकाने वाला नजारा तब देखने को मिला, जब पहले बैच के प्रवेशित छात्रों का माल्यार्पण किया गया और उन्हें साफा पहनाया गया। उनकी आँखों में गर्व और चेहरे पर मुस्कान थी, मानो 40 वर्षों की सफलता की गाथा खुद ब खुद बयां कर रही हो। मगर असली मोड़ तब आया, जब सैंट सोल्जर महिला महाविद्यालय की छात्राओं ने ''सड़क सुरक्षा, जीवन की रक्षा'' पर अपनी झांकी प्रस्तुत की। उनकी इस प्रस्तुति को देखकर लोगों में जैसे खलबली मच गई और हर कोई चौकन्ना होकर संदेश को समझने लगा। इसके बाद, पंडित जे. पी. उपाध्याय टी.टी. कॉलेज के छात्रों ने श्नर सेवा नारायण सेवा, रक्तदान महादानश पर ऐसी दिल छू लेने वाली झांकी प्रस्तुत की कि कई दर्शकों की आँखों में आंसू आ गये। रैली के दौरान शहर के अलग-अलग हिस्सों में बाबूलाल शर्मा का भव्य स्वागत किया गया। लोग उनकी गाड़ी के साथ-साथ चलते रहे, जगह-जगह बैनर और पुष्पवर्षा के साथ उनका स्वागत किया।

संक्षिप्त

7.70 लाख रूपये राशि की नकदी को किया सीज

अलवर। जिला आबकारी अधिकारी अर्चना जैमन ने बताया कि जिला निर्वाचन अधिकारी के निर्देशन में रामगढ विधानसभा उप चुनाव के मध्यनजर शराब के अवैध पारगमन को रोकने हेतु विशेष जांच अभियान में दिल्ली-मुम्बई एक्सप्रेस-वे के शीतल स्थित कट पर स्थित आबकारी विभाग की चौकी पर वाहनों की जांच के दौरान आज एक मारूती कार में बैग में 7.70 लाख रूपये कैश पाए गए जिसके बारे में पूछने पर कार चालक एवं अन्य सवारियों ने प्याज व्यापारी के द्वारा अलवर में भुगतान हेतु बताया। उन्होंने बताया कि निर्वाचन आयोग की गाईडलाइन के अनुसार राशि को एसएसटी टीम को मौके पर बुलाकर सुपुर्द किया गया तथा सम्पूर्ण प्रकरण की वीडियोग्राफी कराई गई। इस दौरान आबकारी विभाग से सुमनपाल, सत्यनारायण, शाहबुद्दीन मौजूद रहे।

ट्रेन की चपेट में आने से अज्ञात व्यक्ति की मौत

फुलेरा। फुलेरा जीआरपी थाना क्षेत्र के अंतर्गत गुढ़ा साल्ट रेलवे स्टेशन के समीप ट्रेन की चपेट में आने से एक अज्ञात व्यक्ति की मौत हो गई। उपरोक्त जानकारी देते हुए पुलिस ने बताया कि घटना की सूचना पर स्टेशन मास्टर रेल्वे स्टेशन से रवाना होकर घटना स्थल के पास पहुंचे जहां पर करीब 50 वर्षीय एक अज्ञात व्यक्ति ट्रेन की चपेट में आने से मौत होना पाया गया। वहीं पुलिस ने आगे बताया कि उक्त मृतक व्यक्ति का रंग सावला है, लम्बाई 5.8 फिट तथा शरीर पतला सिर व दाढी के बाल बड़े हुए है। इसके साथ ही उसने सफ़ेद कलर की शर्ट और मेहन्दी कलर का लॉवर पहना हुआ है।

आरएसएस के सेवा सप्ताह का हुआ शुभारम्भ

मालपुरा। राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के सेवा सप्ताह का रविवार को शुभारम्भ हुआ। प्रथम दिन पुरानी तहसील बारादरी बालाजी मंदिर मे स्वंय सेवको ने परिसर मे साफ-सफाई का कार्य किया। इस दौरान युवराज गुर्जर,जगमोहन टेलर,राधे जांगिड,अमित सेन,कुणाल सोनी,मोहित,विष्णु शर्मा,जीतराम भाटी सहित स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद रहै। केशव शाखा सेवा प्रमुख युवराज गुर्जर ने बताया कि सात दिन तक चलने वाले सेवा सप्ताह मे मालपुरा खण्ड ही सभी शाखाओं पर सेवा सप्ताह मनाया जाना है।

महिलाओं ने लिया भगवान विष्णु का आर्शीवाद

मालपुरा। रविवार को आंवला नवमी के पावन अवसर पर महिलाओं ने आंवले के पेड की विधि विधान से पूजा अर्चना की। पंचायत समिति परिसर मे आंवले के पेड के निचे पंडित रामकृपालू पारीक ने आंवला नवमी की कथा सुनाते हुये आंवले की पूजा का महत्व बताया। सुत्त से आंवले को सुत्र बांध परिक्रमा लगाते हुये अखण्ड सौभाग्य व परिवार मे खुशहाली की कामना की। लाम्बाहरिसिंह हरिसागर कुण्ड स्थित गोविन्द देव मंदिर मे की गई विशेष पूजा अर्चना।

अवैध चैचा पत्थर परिवहन करते चालक गिरफ्तार

टोंक। लाम्बाहरिसिंह थाना क्षेत्र में अवेध खनन के खिलाफ विशेष अभियान के तहत कार्यवाही करते हुए लाम्बाहरिसिंह के थानाधिकारी मनीष कुमार टेलर द्वारा गठित टीम ने गश्त के दौरान एक ट्रेक्टर-ट्रोली को अवैध चैचा पत्थर से भरे हुए को जप्त किया तथा ट्रेक्टर चालक सरफराज अहमद को गिरफ्तार किया गया। जिसके खिलाफ एमएमडीआर एक्ट में मामला दर्ज कर अनुसंधान जारी है।

दो से अधिक विप्र प्रतिभाओं का होगा सम्मान

मालपुरा। विप्र फाउण्डेशन मालपुरा तहसील शाखा के बैनर तले 17 नवम्बर को मालपुरा मे आयोजित विप्र प्रतिभा सम्मान समारोह को लेकर कार्यकर्ताओ को बांटी गई जिम्मेदारियां। संगठन के तहसील अध्यक्ष कन्हैयालाल शर्मा ने बताया कि सम्मान समारोह मे शामिल होने के लिये प्रतिभाओं द्वारा 11 नवम्बर आवेदन की अन्तिम तिथि रहेगी।

सचिन पायलट ने कांग्रेस प्रत्याशी कस्तूरचंद मीणा के समर्थन में आम सभा को संबोधित किया

टोंक/उनियारा। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट ने बीजेपी समेत देवली उनियारा से निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा के खिलाफ मंच से की गई अमर्यादित भाषा को लेकर कांग्रेसियों को भी मर्यादित भाषा बोलने की नसीहत दी। पायलट ने उनियारा में कांग्रेस प्रत्याशी केसी मीणा के समर्थन में आयोजित सभा और पत्रकारों से बातचीत में भी कहा कि बीजेपी ही नहीं राजनीत में रहने वाले लोग संयमित और मर्यादित भाषा बोले। आपकी भाषा लोग सुनते है।

पायलट ने उनियारा में कांग्रेस प्रत्याशी केसी मीणा के समर्थन में सभा आयोजित की।

- कांग्रेस एवं इंडिया गठबंधन झारखंड और महाराष्ट्र के आम चुनाव एवं राजस्थान में उपचुनाव जीतेगी : सचिन पायलट

राजनीति में रहने वाले लोग अमर्यादित भाषा नहीं बोले। दरअसल आज हुई सभा में पायलट के सामने सांसद हरीश चंद्र मीणा और छबड़ा के पूर्व विधायक करण सिंह राठौड़ ने निर्दलीय प्रत्याशी नरेश मीणा के खिलाफ जमकर अमर्यादित भाषा बोली। सांसद हरीश चंद्र मीणा ने उसे अपराधी तक कहा तो करण सिंह ने साफ कहा कि पायलट साहब आपका नाम लेकर गत विधान सभा में भी मुझे हरा दिया। अब यहाँ भी लोगों ने उसे वोट दे दिए तो कस्तूर चंद्र मीणा हार जाएंगे। ऐसे लोगों को पार्टी से दूर रखे । करण सिंह हे ही नहीं रुके उन्होंने कहा कि पायलट साहब चाहे तो अब मेरा टिकट काट देना लेकिन जो पार्टी के खिलाफ काम करते है, उन्हे पार्टी में नहीं ले। बीजेपी वाले समेत कोई भी राजनीति व्यक्ति हो उसे भाषा संयमित रखनी चाहिए। कांग्रेस जीतेगी। लेकिन थोड़ा यहां चुनाव मैनेजमेंट कमजोर है। इसे सही करे। अभी दो तीन दिन बाकी है। उनियारा बस स्टैंड के पास जैन नसियां में सचिन पायलट ने कहा कि भाजपा की 11 महीने की सरकार में जनता का मोह भंग हो गया है एवं कोई भाजपा ने कोई भी विकास कार्य नहीं करवाया है। इस सरकार से 11 महीने में कर्मचारी, उद्योगपति, किसान पेंशनधारी सहित कई लोग ऊब गए हैं। किसान खाद के लिए परेशान हो रहा है एवं खाद महंगे दामों में मिल रहा है, वहीं विधवा, दिव्यांगों की पेंशन नहीं आ रही है। आज के समय में भाजपा के मंत्री एवं सांसद उपचुनाव में दर-दर भटक रहे हैं, यदि सरकार ने विकास करवाया होता तो ऐसी नौबत नहीं आती। इस विधानसभा क्षेत्र में कई मंत्री एवं कई विधायकों ने डेरा डाल रखा है।

यह चुनाव विकास का है, यह चुनाव कोई दो जाती या धर्म का नहीं है उन्होंने कहा कि कई लोग चुनाव में जातिवाद, धर्मवाद के नाम पर लोग बहक जाते हैं, इससे वह लोग अपना नुकसान कर रहे हैं एवं किसी को फायदा होने वाला नहीं है। सांसद मीणा ने निर्दलीय प्रत्याशी का नाम लिए बिना कहा पहले करण सिंह को हरा दिया है। अब कांग्रेस को हराने यहां आ गया। एक हजार वाहन लेकर घूम रहा है। ये कहाँ से आ रहे है। वह अपराधी है।

इस अवसर पर विधानसभा चुनाव प्रभारी एवं बूंदी विधायक हरिमोहन शर्मा, राष्ट्रीय सचिव दानिश अबरार, आमेर विधायक प्रशांत शर्मा,किशनगढ़ विधायक विकास चौधरी, राकेश पारीक, जोधपुर से आए कर्ण सिंह, पूर्व मंत्री अशोक बैरवा, कांग्रेस जिलाध्यक्ष राखी गौतम, महेंद्र खेड़ी,छाबड़ा के पूर्व विधायक करण सिंह आदि ने संबोधित किया। इस अवसर पर कांग्रेस जिलाध्यक्ष हरिराम बैरवा,उनियारा देवली प्रभारी धर्मेंद्र सालोदिया, हनुमान प्रसाद मीणा, रामकेश मीणा, लोकेश मीणा, कांग्रेस के पुर्व सचिव कुलदीप राजावत, पार्षद कमरुद्दीन, पार्षद धर्मप्रकाश शर्मा सहित विधानसभा क्षेत्र से आए कांग्रेस पदाधिकारी एवं बाहर से आए कई विधायक मौजूद थे।

रंगरेज समाज का सम्मेलन हुआ

मनोहरपुर। जयपुर में रंगरेज समाज का सम्मेलन हुआ सम्मेलन जिसमे 41 जने एक दूजे के हम सफर बनेरंगरेज समाज यह सम्मेलन सिर्फ एक रुपए मे कर रहा है 1 दुल्हा पक्ष और 1 दुल्हन पक्ष की तरफ से लिया गया है 10 काजियो ने निकाह पढ़ाई बाकी सभी खर्च समाज के कुछ लोगों ने किया है जो अपना नाम सामने लाने से मना किया है सम्मेलन में 41 जोड़ों की शादी हुई और सम्मेलन शांतिपूर्ण तरीके से समपन हुआ सम्मेलन में पूर्व मंत्री कांग्रेस सरकार प्रताप सिंह खाचरियावास, किशनपोल विधायक अमीन कागजी, कांग्रेस विधायक प्रत्याशी हवामहल आर आर तिवारी, जयपुर हेरिटेज मेयर कुसुम यादव ने शिरकत की। अतिथियों ने कहा कि ऐसे सम्मेलन होते रहना चाहिए।

डीवाईएसपी ने ग्राम टोरडा में सुनी ग्रामीणों की समस्याएं, निस्तारण का दिया आश्वासन

पावटा। ग्रामीण इलाकों में लॉ एंड ऑर्डर को मजबूत करने तथा ग्रामीणों व पुलिस के बीच तालमेल बेहतर बनाने के लिए शनिवार को विराटनगर वृत्ताधिकारी वृत्त शिप्रा राजावत ने ग्राम टोरडा मे ग्रामीणों से कानून व्यवस्था को लेकर उनकी शिकायत व समस्याए सुनी।

शिप्रा राजावत ने कानून व्यवस्था को लेकर उनकी समस्याए सुनी।

डीवाईएसपी शिप्रा राजवात ने ग्रामीणों से अपील करते हुए कहा कि गांव में किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधि या अपराध की सूचना मिलते ही तुरंत पुलिस को सूचित करें जिससे समय पर अपराध पर काबू पाया जा सके। वही उन्होंने ग्रमीणों को नशे के खिलाफ जागरूक करते हुए कहा कि आज का युवा नशे व अपराधों की तरफ ज्यादा अग्रसर है। ऐसे में अपने बच्चों को नशे से बचाएं तथा तथा सामाजिक कार्यो में सहयोग करने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने ग्रामीणों से दुपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट व कार चलाते समय सीट बेल्ट लगाने की अपील की। डीवाईएसपी शिप्रा राजावत ने राखी कहा कि गांव में कोई भी नशा बेचता है या कोई अन्य किस्म का अपराध करता है, उसकी सूचना तुरंत पुलिस को दें।

पुलिस व पब्लिक के बीच बेहतर सामंजस्य से ही अपराध पर पूरी तरह से अंकुश लगाया जा सकता है। जिला पुलिस द्वारा जनता के साथ और बेहतर संबंध स्थापित करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं। गांवों में भ्रमण के दौरान ग्रामीणों को जागरूक किया है कि अपराध होने पर तुरंत पुलिस को सूचित करे।

बाल विवाह की रोकथाम और जागरुकता को लेकर कार्यक्रम हुआ

सांभरझील। देवउठनी एकादशी व अबूझ सावों पर होने वाले बाल विवाह की रोकथाम और जागरुकता को लेकर पीएम श्री राजकीय दरबार उच्च माध्यमिक विद्यालय पर जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान एवं अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (जिला एवं सैशन न्यायाधीश) अजीत कुमार हिंगर के दिशा निर्देश पर अध्यक्ष तालुका विधिक सेवा समिति (अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश क्र.स. 1) अरविन्द कुमार जांगिड़, सांभर के निर्देशन में बाल विवाह निषेध अभियान की थीम अभी नहीं (पहले सपने साकार हो, फिर शादी पर विचार हो) ,पर आयोजित कार्यक्रम में सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट, जयश्री लमोरिया ने बाल विवाह रोकने हेतु प्रभावी कदम उठाने हेतु प्रेरित किया।

- बाल विवाह के दुष्परिणामों से शारीरिक व मानसिक दुष्परिणामों के प्रति विधार्थियो को जागरूक किया तथा बाल विवाह नहीं करने की शपथ दिलाई

बाल विवाह रोकथाम अभियान के लिए न्यायाधीश ने हरी झंडी दिखाई।

बाल विवाह के दुष्परिणामों से शारीरिक व मानसिक दुष्परिणामों के प्रति विधार्थियो को जागरूक किया तथा बाल विवाह नहीं करने की शपथ दिलाई। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय सांभर में बाल विवाह निषेध हेतु वाद विवाद / चित्रकला व निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यक्रम में विधालय के प्रधानाचार्य टीकमचन्द मालाकार, उप प्रधानाचार्य रामेश्वर लाल मीणा, विनोद दुलारिया, रचना मोदी, लिगल एड असिस्टेंट चान्दमल सांभरिया विधालय स्टाफ आदि उपस्थित रहे।

अचरोल में दलालो ने जेडीए भूमि पर किया अवैध रूप से निर्माण

अचरोल। अचरोल खटीको के मोहल्ले के पास भारत गैस एजेंसी के पीछे स्थित जेडीए (जयपुर विकास प्राधिकरण) की भूमि पर हो रहे अवैध कब्जों का मामला तेजी से बढ़ रहा है।

दलाल इस सरकारी भूमि पर अवैध रूप से पक्का निर्माण करवा रहे हैं और फिर इन निर्माणों को लाखों रुपयों में बेचकर मोटा मुनाफा कमा रहे हैं। इस प्रकार के निर्माण न केवल कानून के विरुद्ध हैं, बल्कि प्रशासन के नियमों की भी खुलेआम अवहेलना कर रहे हैं। इस क्षेत्र में हो रहे अनाधिकृत निर्माण कार्य ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं।

दलाल स्थानीय लोगों को बहकाकर या उन्हें दबाव में डालकर भूमि पर कब्जा कर लेते हैं, और फिर इसे बेचने के लिए अवैध तरीके से पक्की संरचनाओं का निर्माण करवा देते हैं। यह प्रथा प्रशासन के नियमों और कायदों का मखौल उड़ाती है यह सरकारी भूमि आम जनता की भलाई के लिए निर्धारित की गई है, लेकिन दलालों की इस हरकत के चलते इसका गलत इस्तेमाल हो रहा है।

प्रशासनिक अधिकारियों और जेडीए के कर्मचारियों पर भी कई बार इन अवैध कब्जों को नजरअंदाज करने का आरोप लगता है। कुछ अधिकारियों की मिलीभगत या लापरवाही की वजह से दलाल आसानी से अवैध निर्माण कार्य करवा रहे हैं हालांकि, प्रशासन का यह दायित्व है कि वह अपनी संपत्तियों की सुरक्षा और रखरखाव सुनिश्चित करे, लेकिन ऐसी घटनाओं से यह स्पष्ट हो रहा है कि कुछ स्थानों पर प्रशासन की पकड़ कमजोर हो रही है।

इस समस्या का समाधान करने के लिए प्रशासन को सख्त कदम उठाने की आवश्यकता है। ताकि ऐसी किसी भी प्रकार की गतिविधि को समय रहते रोका जा सके। इसके अलावा, अवैध निर्माण में शामिल दलालों और उनके समर्थकों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए। जो लोग ऐसे अवैध कब्जों का समर्थन करते हैं, उनके खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई से अन्य लोगों को भी चेतावनी मिलेगी और इस प्रकार की घटनाओं पर अंकुश लग सकेगा।

उन्हें समझाया जाना चाहिए कि सरकारी भूमि पर अवैध कब्जा न केवल गैरकानूनी है, बल्कि इससे उनके आसपास के पर्यावरण और आधारभूत संरचनाओं पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। अचरोल और अन्य क्षेत्रों में हो रहे अवैध निर्माण पर सख्त नियंत्रण की आवश्यकता है। यदि प्रशासन समय रहते ठोस कदम उठाता है, तो इस प्रकार के अवैध कार्यों को रोका जा सकता है।

श्री कृष्ण गोशाला का 80वाँ गोपाष्टमी महोत्सव आयोजित

शाहपुरा। श्री कृष्ण गोशाला अजीतगढ़ के तत्वावधान में शनिवार को 80 वाँ गोपाष्टमी महोत्सव 2024 का आयोजन त्रिवेणी धाम संत राम रिछपालदास महाराज के सानिध्य में किया गया। महोत्सव में शोभायात्रा व एक शाम गौ माता के नाम भजन संध्या आयोजन किया जिसमें रविवार तड़के 4 बजे तक श्रोता डटे रहे।

गोशाला प्रबंधन ने गोशाला के सहयोगी, भामाशाहों का सम्मान किया तथा वार्षिक आय व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया। जानकारी मुताबिक आजादी से पूर्व स्थापित श्री कृष्ण गोशाला अजीतगढ़ ने शनिवार को 80 वाँ गोपाष्टमी महोत्सव पर अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए। जिसमें सुबह 9.15 बजे गोशाला में गौ पूजन के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। गोशाला परिसर में मेला लगाया जिसमें नन्हें बच्चों ने झूलों का आनंद लिया। दोपहर 1 बजे गोशाला मुख्य द्वार से संस्कार चिल्ड्रन एकेडमी तथा सखी परिवार की झांकियों के साथ शोभायात्रा शुरू की, जिसमें शहर के विभिन्न मार्गों से होकर गुजरने पर श्रद्धालुओं ने स्वागत किया। शाम 4 बजे विभिन्न गौभक्तों के सहयोग से गोशाला परिसर में प्रसादी का वितरण कार्यक्रम किया गया। शाम 6 बजे गोशाला परिसर में प्रबंधन कार्यकारिणी, गोशाला सदस्यों, श्रद्धालुओं ने गौ आरती की। शाम 8.15 बजे शहर के मुख्य चौपड़ बाजार में एक शाम गौ माता के नाम विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें गायक कलाकार बीरबल सिंह शेखावत, प्रकाश गुर्जर, मुकेश मुक्कड़, झाबर छैला, रईस सैनी, रामप्रकाश भड़ाना, कैलाश छैला ने गौ माता के भजनों की प्रस्तुति दी तथा कन्या भ्रूण हत्या, गौ वध समेत अनेक सामाजिक कार्यकर्ताओं कुरीतियों के उन्मूलन के लिए पांडाल में मौजूद लोगों को शपथ दिलाई। कार्यक्रम में गोशाला के सहयोगी सोलर पैनल के लिए 5 लाख रुपए की आर्थिक सहयोग के लिए 94 वर्षीय रिटायर्ड शिक्षक सूरजमल शिखवाल, गोशाला को ट्रेक्टर देने पर मोहन लाल बड़सीवाल, ई रिक्शा देने पर एयू बैंक, गोवड़ी, हल, ट्राली आदि देने कर दिनेश नरेड़ी समेत 30 सहयोगियों का तथा भजन संध्या के कलाकारों का गोशाला प्रबंधन ने व्यवस्थापक महेश दीवान, अध्यक्ष चैतन्य मीणा के नेतृत्व में सम्मान किया गया।

एक शाम गौ माता के नाम भजन संध्या आयोजन किया।

- शोभायात्रा और एक शाम गौ माता के नाम भजन संध्या में जुटे लोग
- गोशाला सहयोगी, भामाशाहों का किया सम्मान, अनेक भामाशाहों ने गोशाला को चारा आदि के सहयोग की घोषणा की

सर्विस रोड़ों की मरम्मत का कार्य निरंतर जारी

कोटपूतली। आमजन को सुगम तथा सुरक्षित परिवहन उपलब्ध करवाने के लिए क्षतिग्रस्त सर्विस रोड के मरम्मत के काम को एनएचएआई ने अपने क्षेत्र में मरम्मत का कार्य प्राथमिकता से प्रारंभ कर दिया है।

इसी क्रम में अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने निरीक्षण में पाया कि बहरोड़ बीएचएस सर्विस रोड पर बारिश के कारण काफी क्षतिग्रस्त हो गई थी तथा दुरुस्तीकरण का कार्य धीमी गति से चल रहा था जिसके चलते न केवल ट्रैफिक जाम की समस्या का सामना करना पड़ रहा था बल्कि आम जन को अन्य समस्याओं का सामना भी करना पड़ रहा था एडीएम ने मौका स्थल से ही एनएचएआई के अधिकारियों से दूरभाष पर बात कर सर्विस रोड के दुरुस्तीकरण के काम में तेजी लाने के लिए निर्देश दिए जिसकी पालना में एनएचएआई कार्य में गति को बढ़ाते हुए शीघ्र ही सर्विस रोड को दुरुस्त करने के लिए कार्रवाई प्रारंभ कर कार्य शुरू कर दिया है तथा शीघ्र ही रोड के दुरुस्तीकरण कार्य पूर्ण कर लिया जाएगा।

सार-समाचार

वॉलीबॉल प्रतियोगिता का उद्घाटन

बहरोड़/ नीमराना। 10/11/2024 वॉलीबॉल क्लब जखराना की ओर से द्वितीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें भारतीय जनता पार्टी की महिला प्रदेश प्रवक्ता डॉ शानू यादव ने फीता काटकर उद्घाटन करते खेल प्रतियोगिताओं को सामाजिक सौहार्द को बढ़ाने वाला बताया। वहीं बताया कि इस प्रतियोगिता में लगभग 50 टीमें हिस्सा ले रही हैं। कार्यक्रम में सुरेश थानेदार, सुभाष शर्मा, जेपी साहब, राधेश्याम तिवारी, शेरसिंह, दयानन्द, नरेश गुरूजी, महेंद्र सौदागर, सुरेंदर प्रिंसिपल, रिपुदमन, हैप्पी कप्तान, सत्यव्रत, प्रदीप व बड़ी संख्या में विभिन्न गांव से आए हुए टीमों के खिलाड़ी व नवयुवक मंडल के सदस्य उपस्थित रहे।

'नशा करने वाला व्यक्ति समाज व परिवार के लिए श्राप'

निवाई। मां भद्रकाली मंदिर आश्रम कांटोली में संत श्रीराम महाराज के सानिध्य में गोपाष्टमी महोत्सव पर नशा मुक्ति अभियान का विशेष आयोजन हुआ। जिसमें सैकडों लोगों को नशा से छुटकारा दिलवाया। आश्रम के पीठाधीश्वर श्रीराम महाराज अघोरी ने कहा कि नशा करने वाला व्यक्ति समाज व परिवार के लिए श्राप होता है व नशा करने वाले व्यक्ति समाज के लिए कुंठक होते है। उन्होंने कहा कि नशा करने से हजारों परिवार बर्बाद हो गए। उनके बच्चों का भविष्य अंधकार में चला गया। उन्होंने आ ान करते हुए कहा कि जीवन में किसी भी प्रकार का नशा नहीं करें। उन्होंने बताया कि माँ भद्रकाली के आशीर्वाद से भक्तों के अटके कार्य सिद्ध होते हैं। इसी वजह से अष्टमी के दिन सैकडों लोग माँ भद्रकाली की शरण में पहुँचते हैं। गोपाष्टमी महोत्सव पर सुबह 8 से शाम 5 बजे तक शत्रु शांति के लिए दुर्गापाठ, बगलामुखी पाठ व कालरात्रि भैरव पाठ सहित कई प्रकार के हवन व अनुष्ठानों का आयोजन किया गया। इसी प्रकार गृह क्लेश व तंत्र मंत्र से परेशान भक्तों के लिए सर्वभृंगराज, प्रत्यंगिरा व माँ भगवती दुर्गा के विशेष सम्पुट पाठ का आयोजन किया गया। दोपहर 12 बजे माँ भद्रकाली की विशेष पूजा अर्चना करके महाआरती की गई। उन्होंने बताया कि नशा मुक्ति अभियान में नशा करने वाले युवकों का देशी जडी बूटियों से शराब, गांजा, भांग, धतूराए अफीम व चरस जैसे नशे से छुटकारा दिलाया। इस दौरान रामसहाय मीणा किवाडा, मदन मीणा रामनगर, सुरजीत सिंह पंजाब, मोना मीणा सवाई माधोपुर, सुनील जाट नोहटा, विजेंद्र सिंह दिल्ली, भगवतीप्रसाद हरियाणा, प्रेम सागर महाराष्ट्र, कुलदीप सिंह भीलवाडा, मेघराज सिंह कोटा, धर्मेन्द्र गंगापुर, अनिल मीणा, विकास मीणा व अशोक कौंटोली सहित दिल्ली, बंबई, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, हिमाचल, हैदराबाद, पंजाब व हरियाणा सहित कई राज्यों से आए श्रद्धालुओं ने माँ भद्रकाली का आशीर्वाद लिया।

870 मरीजों की आंखों की जांच

पावटा। निकटवर्ती ग्राम पंचायत भैंसलाना स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में रविवार को द्वारिकपुरा के पूर्व सरपंच स्व. सूरजमल यादव की पुण्य स्मृति में समाजसेवी कृष्ण सांपला द्वारा आंखों के षष्ठम विशाल नि:शुल्क चिकित्सा एवं लैंस प्रत्यारोपण शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अतिथि के तौर पर पहुंचे पूर्व मंत्री राजस्थान सरकार राजेंद्र सिंह यादव ने भी मरीजों के हाल चाल जानते हुए आयोजकों का उत्साहवर्धन किया। अतिथि के तौर पर जीएल यादव, तारा पुतली, विरेंद्र घोघड़, सरपंच गीता देवी, उपसरपंच शिवसहाय मौर्य, करणसिंह नेतराम सरपंच, महेश यादव हरिराम चोरिया, सुरेश, अजय शुक्ल, हेमराज गुरुजी, ओमप्रकाश, धर्म सिंह ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का शुभारम्भ पूर्व सरपंच स्व. सूरजमल यादव के चित्र के समक्ष द्वीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। इस दौरान राजस्थान के सुप्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. विरेन्द्र सिंह यादव, बहरोड़ व उनकी टीम ने आंखों के कुल 870 मरीजों की जांच करते हुए उपचार प्रदान किया। साथ ही 207 मरीजों को ऑपरेशन के लिए चिन्हित किया। उक्त मरीजों का ऑपरेशन बहरोड़ स्थित मिश्री देवी आई हॉस्पिटल में नि:शुल्क किया जायेगा। मरीजों को लाने व ले जाने व भोजन आदि की व्यवस्था भी नि:शुल्क ही रहेगी। इस दौरान आयोजन समिति के कृष्ण सांपला, रोहिताश यादव, संदीप यादव, भारत यादव, सतीश यादव, विक्रम फौजी, रमेश, रतिराम, मदन, शिंभू, रणजीत, देवेंद्र, लोकेश, राकेश कसाना सहित ग्रामीण मौजूद रहे।

चाचा-भतीजे की नदी में डूबने से मौत

बौंली-बामनवास। क्षेत्र के मलारना डूंगर थाना अंतर्गत मलारना स्टेशन निवासी चाचा भतीजे शनिवार को मछलियां पकड़ने बिलोली के पास बह रही बनास नदी में गए थे जहां दोनों की डूबने से मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार सलीम खान उम्र 47 वर्ष व उसका भतीजा अयान खान उम्र 13 वर्ष दोनों निवासी मलारना स्टेशन शनिवार को बिलोली के पास बह रही बनास नदी में मछलियां पकड़ने गए थे इस दौरान किसी कारणवस वह बनास नदी में डूब गए जब वह शाम तक घर नहीं लौटे तो परिजनों ने उनको तलाश किया। फिर रविवार को परिजन तलाश करते हुए बिलोली के पास बनास नदी पर पहुंचे तो देखा की साइकिल व दोनों के कपड़े पड़े मिले इसकी जानकारी ग्रामीणों ने पुलिस को दी। सूचना पाकर ग्रामीण पुलिस उपाधीक्षक उदय सिंह मीणा मलारना डूंगर पुलिस के साथ मौके पर पहुंचे एवं स्थानीय गोताखोरों की मदद से दो घंटे के अंदर तलाशी अभियान चलाकर दोनों के शव बाहर निकले गए एवं मलारना स्टेशन चिकित्सालय की मो मोर्चरी में पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों के सुपुर्द कर दिए गए।

दीपावली स्नेह मिलन समारोह

झालावाड़ (निसं)। झालावाड़ सेंट टेरेसा सीसै स्कूल झालावाड में मुशायरे और कवि सम्मेलन के जरिये दीपावली स्नेह मिलन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें टोंक से आए हुए पीरे तरीकत सूफी इफ्तिखार उद्दीन और झालरापाटन मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी प्रकाश चंद सोनी "यौवन रहें। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ शायर सईद शफीकी ने की। कार्यक्रम का संचालन राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय उर्दू विभागाध्यक्ष प्रोफेसर फहीम खान ने किया। विशिष्ट अतिथि अखिल भारतीय साहित्य परिषद के अध्यक्ष सुरेश चंद्र निगम रहें। कवियित्री जिया नामा के अश्आर से प्रोग्राम का आगाज हुआ। "हम जहां आंख उठाते है वहाँ होता है हर तरफ आपके होने का गुमां होता है" शायर रईस कादरी ने जिंदगी के पेचों खम पर शायरी पेश करते हुए कहा 'घर हमारा है मगर है घर में है वेटर की तरह-अब गुटरगूँ कर रहें है हम कबूतर की तरह', प्रकाश चंद्र सोनी यौवन अपनी कविताएं पेश की जिसमें "किसी एक को कैसे पूंजूँ-देवों की भरमार बहुत है" मुराद खान मुराद अपनी में कहा कि "आपका दिया। कार्यक्रम में प्रतिमा पुलक, जगदीशचन्द सोनी, दानिश व बी.एस. वर्मा एवं अनेक रचनाकारों ने अपनी रचनाऐं प्रस्तुत की। अंत में कार्यक्रम के आयोजक जाकिर खान जाकिर ने सभी का शुक्रिया अदा किया।

विशाल भजन संध्या कल

निवाई। इन्दिरा कालोनी में स्थित श्याम मन्दिर में देव उठनी एकादशी पर बाबा श्याम का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। मन्दिर कमेटी के अध्यक्ष रवि अग्रवाल ने बताया कि जन्मोत्सव पर बाबा श्याम का पंचामृत से अभिषेक कर बाबा का विशेष श्रृंगार किया जाएगा। इस दौरान मन्दिर प्रांगण में एकादशी की कथा का भी आयोजन होगा। उन्होंने बताया कि बाबा श्याम जन्मोत्सव पर मन्दिर प्रांगण में दिनभर कई कार्यक्रम आयोजित होंगे। रात्रि में भजन संध्या का आयोजन होगा। जिसमें लक्ष्मीकांत खंडेलवाल जयपुर व सोमेश जैन जयपुर सहित स्थानीय गायक भजनों की प्रस्तुति देंगें। इस दौरान छप्पन भोग की झांकी सजाई जाएगी।

वैष्णव का सम्मान किया

छबड़ा (निसं)। वैष्णव बैरागी समाज के समाज बंधुओ ने वेंकट कुमार वैष्णव एडवोकेट को नोटरी बनने पर उनका सम्मान किया एवं धार्मिक पुस्तक भेंटकर देश के लिए व समाज के लिए सेवा करने को कहा एवं भारत सरकार का धन्यवाद ज्ञापित किया। स्वागत करने वालों में महन्त रमेश दास वैष्णव, कडैयानोहर सत्यनारायण वैष्णव दोहनी, सुरेशचंद्र वैष्णव मुंशी, सत्यनारायण वैष्णव खांकरा, छीतरलाल मुंडला, राजू दोहनी, गिरिराज पटना सहित समाज के कई सम्मानित समाजबंधु उपस्थित रहे।

मेरे नाम का मतलब भी विटनेस ही है, तो इससे बेहतर मुझे इस किताब का नाम कोई समझ में नहीं आया। मुझे विटनेस नाम काफी अच्छा लगा और इसकी वजह से इसका नाम ये रखा गया।
- साक्षी मलिक

भारतीय पहलवान, अपनी किताब के नाम को लेकर बोलते हुए।

आज का खिलाड़ी

महेन्द्र सिंह धोनी

क्रिकेट से जुड़ा दुनिया का हर शख्स इस समय आईपीएल 2025 के मेगा ऑक्शन का बेसब्री से इंतजार कर रहा है, जो 24 और 25 नवंबर को सऊदी अरब के जद्दा शहर में होने वाली है। इस सब से दूर भारत के पूर्व कप्तान एमएस धोनी अपने परिवार के साथ छुट्टियां मना रहे हैं, एमएस धोनी अपने परिवार के साथ थाईलैंड के बीचों का लुत्फ उठा रहे हैं, जिसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रही हैं।महेंद्र सिंह धोनी इन दिनों क्रिकेट के शोर-शराबे से दूर थाईलैंड के फुकेट में अपने परिवार के साथ छुट्टियां मना रहे हैं।

क्या आप जानते हैं ?... भारत के बी एस चन्द्रशेखर विश्व के एकमात्र ऐसे खिलाड़ी है जिन्होंने अपने टेस्ट कैरियर में बनाए गए रनों से अधिक विकेट प्राप्त किये। उन्होंने टेस्ट मैचों में 166 रन बनाए और 242 विकेट लिये।

भारत ने दक्षिण अफ्रीका को 125 रनों का लक्ष्य दिया

कबेखा (दक्षिण अफ्रीका) 10 नवंबर। हार्दिक पंड्या (नाबाद 39), अक्षर पटेल (27) और तिलक वर्मा (20) रनों की पारियों के दम पर भारत ने रविवार को दूसरे टी-20 मैच में दक्षिण अफ्रीका को जीत के लिए 125 रनों का लक्ष्य दिया है। आज यहां सेंट जॉर्ज्स पार्क कबेखा में दक्षिण अफ्रीका के कप्तान एडन मारक्रम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने 15 के स्कोर पर अपने तीन विकेट गवां दिये। संजू सैमसन (शून्य), अभिषेक शर्मा (चार) और सूर्यकुमार यादव (चार) रन बनाकर आउट हुये। इसके बाद आखिरी तक रन बनाने के लिए तिलक वर्मा और अक्षर पटेल ने पारी को संभालने का प्रयास किया। तिलक वर्मा ने 20 गेंदों में एक चौका और एक छक्का लगाते हुए (20) रन बनाये। अक्षर पटेल ने 21 गेंदों में चार चौके लगाते हुये (27) रनों की पारी खेली। रिंकू सिंह (9) रन बनाकर आउट हुये। हार्दिक पंड्या ने चार चौके और एक छक्का लगाते हुए (नाबाद 39) रन बनाये। अर्शदीप सिंह सात रन बनाकर नाबाद रहे। भारत ने निर्धारित 20 ओवर में छह विकेट पर 124 रन का स्कोर खड़ा किया।

चोटिल कपूर कोनोली पाक के खिलाफ टी-20 सीरीज से हुए बाहर

पर्थ, 10 नवंबर। ऑस्ट्रेलियाई ऑलराउंडर कूपर कोनोली बायें हाथ में फ्रैक्चर होने के कारण पाकिस्तान के खिलाफ होने वाली टी-20 सीरीज से बाहर हो गए हैं। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया (सीए) के प्रवक्ता ने कोनोली के बायें हाथ में फ्रैक्चर की पुष्टि की। वह सोमवार को पर्थ में एक स्पेशलिस्ट से मिलेंगे। टी-20 सीरीज में उनकी जगह अभी तक किसी भी खिलाड़ी के नाम की घोषणा नहीं की गई है। कोनोली के हाथ में यह चोट पर्थ एकदिवसीय मैच के 17वें ओवर में मोहम्मद हसनैन की गेंद पर लगी। जिसके बाद अधिक दर्द होने के कारण उन्हें मैदान छोड़ना पड़ा था। स्कैन में उनकी चोट के बारे में पता चला था। 15 दिसंबर से शुरू हो रहे बीबीएल को देखते हुए पर्थ स्कॉचर्स की भी कोनोली के ठीक होने पर नजर रहेगी। वह बायें हाथ से स्पिन गेंदबाज भी हैं। कोनोली ने सितंबर में इंग्लैंड के दौरे पर पदार्पण किया था।

कराटे बेल्ट प्रतियोगिता में सिरमौर के छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन

नाहन, 10 नवंबर। हिमाचल प्रदेश के जिला सोलन स्थित वाइट टाइगर मार्शियल आर्ट्स अकादमी में शनिवार को कराटे छात्रों की बेल्ट परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें दर्जनों छात्रों ने भाग लिया। इस परीक्षा में सिरमौर जिले के माउंटेन मार्शियल आर्ट्स डोजो नाहन के तीन छात्रों ने भी हिस्सा लिया और तीनों ने शानदार प्रदर्शन करते हुए येलो बेल्ट हासिल की। छात्र-छात्राओं की कला को देखकर मुख्य परीक्षक इकबाल मलिक ने उनकी सराहना की और उन्हें येलो बेल्ट प्रदान की। इस दौरान शिफा, फर्ज और दिव्यांश शर्मा ने अपनी कला का बेहतरीन प्रदर्शन किया।

पाक 22 साल बाद ऑस्ट्रेलिया में वनडे सीरीज 2-1 से जीता

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। पाकिस्तान ने तीसरे वनडे में ऑस्ट्रेलिया को 8 विकेट से हरा दिया। टीम इसी के साथ 3 मैचों की सीरीज 2-1 से जीती। 22 साल के बाद पाकिस्तान ने ऑस्ट्रेलिया को वनडे सीरीज में उसी के घर में हराया है। इससे पहले साल 2002 में हराया था। रविवार को पर्थ में पाकिस्तान ने टॉस जीतकर पहले बॉलिंग का फैसला किया। ऑस्ट्रेलिया की टीम 31.5 में 140 रन पर सिमट गई। पाकिस्तान ने 141 रन के टारगेट को 26.5 ओवर में 2 विकेट खोकर हासिल कर लिया। वहीं, पाकिस्तान के लिए हारिस रऊफ ने 7 ओवर में सिर्फ 24 रन देकर 2 विकेट लिए। रऊफ को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। उन्हें प्लेयर ऑफ द सीरीज का भी अवॉर्ड मिला। उन्होंने सीरीज में 10 विकेट झटके। पाकिस्तान के दोनों ओपनर सईम अयूब और अब्दुल्लाह शफीक ने 84 रन की मजबूत शुरुआत दी। सईम ने 42 और शफीक ने 37 रन की पारी खेली। कप्तान मोहम्मद रिजवान ने नाबाद 30 और बाबर आजम ने 28 रन बनाए। दोनों के बीच नाबाद 58 रन की साझेदारी हुई।

ऑस्ट्रेलिया की ओर से दोनों विकेट लांस मॉरिस ने लिए। पर्थ की बाउंसी पिच पर मेजबान टीम की बल्लेबाजी फ्लॉप रही और 31.5 ओवर में 140 रन ही बना सकी। टीम के टॉप-5 बल्लेबाज 25 रन से ज्यादा का स्कोर नहीं कर सके। ओपनर मैथ्यू शॉर्ट ने 22 रन और शॉन एबट ने सबसे ज्यादा 30 बनाए। पर्थ में पाकिस्तान ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करने का फैसला किया, जिसे तेज गेंदबाजों ने सही साबित कर दिया। शाहीन शाह अफरीदी और नसीम शाह ने 3-3 विकेट झटके। हारिस रऊफ ने 2 विकेट लिए। एक विकेट मोहम्मद हसनैन को मिला। जबकि एक बल्लेबाज रिटायर्ड हर्ट हुआ।

हरिद्वार को मिली अंतर्राष्ट्रीय स्तर क्रिकेट स्टेडियम की सौगात

हरिद्वार, 10 नवंबर। उत्तराखंड की तीर्थ नगरी हरिद्वार को अब अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम की सौगात मिलने जा रही है। दरअसल हरिद्वार में अंतरराष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम बनकर तैयार हो गया है। इसका लोकार्पण मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी करेंगे। इस स्टेडियम में जहां राष्ट्रीय स्तर की क्रिकेट प्रतियोगिताएं आयोजित की जा सकेंगी वहीं यहां पर डे एंड नाइट क्रिकेट मैच की भी सुविधा उपलब्ध होगी। जिसके लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम के मानकों के अनुसार फ्लड लाइटें लगाई गई हैं।

हरिद्वार रुड़की विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष अंशुल कुमार सिंह का कहना है कि इस क्रिकेट स्टेडियम को बनाने के लिए काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उसके बावजूद हरिद्वार के युवाओं के भविष्य को देखते हुए इस अंतरराष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट स्टेडियम का निर्माण किया गया है जिसमें वह सभी सुविधाएं उपलब्ध है जो अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में होती हैं। उन्होंने कहा कि भविष्य में इसमें और सुधार करके इसका उच्चीकरण भी किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि अब हरिद्वार के प्रतिभावान क्रिकेट खिलाड़ियों को कोचिंग के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा उन्हें हरिद्वार में ही अंतरराष्ट्रीय स्तर की कोचिंग मिलेगी जिससे यहां के खिलाड़ी भी राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकेंगे । हरिद्वार क्रिकेट एसोसिएशन के महासचिव एवं उत्तराखंड टी-20 के अध्यक्ष इंद्र मोहन बड़थ्वाल का कहना है कि हरिद्वार में एक अंतरराष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट स्टेडियम की काफी कमी महसूस की जा रही थी जिसे हरिद्वार रुड़की विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष अंशुल कुमार सिंह के प्रयासों से मूर्त रूप दिया गया है इसे बीसीसीआई खेलों के लिए उपयोग में लाएगी। उन्होंने कहा कि यहां स्टेडियम बनने से उदयीमान खिलाड़ियों को यहां अभ्यास करके आगे बढ्ढ्प्ने का मौका मिलेगा। उन्होंने बताया कि बीसीसीआई की टीम भी यहां आकर दौरा कर चुकी है और उत्तराखंड क्रिकेट एसोसिएशन के सदस्य भी आकर इस स्टेडियम की तारीफ कर चुके हैं। उन्होंने इस स्टेडियम को हरिद्वार व आसपास के जनपदों के खिलाड़ियों के भविष्य के लिए एक नायब तोहफा बताया है।

मध्य प्रदेश की बॉडी बिल्डर वंदना ठाकुर ने मालदीव्स में जीता कांस्य

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। भारतीय बॉडी बिल्डर्स फेडरेशन द्वारा मालदीव्स के कैनारेफ रिज़ॉर्ट में 5 नवंबर से लेकर 15 नवंबर, 2024 तक आयोजित 15वें वर्ल्ड बॉडी बिल्डिंग और फिजीक स्पोर्ट्स चैंपियनशिप 2024 में मध्य प्रदेश की बॉडी बिल्डर वंदना ठाकुर ने ब्रॉन्ज़ मैडल जीता है। यह मैडल वंदना ने महिला बॉडी बिल्डिंग के अंतर्गत 55 किलोग्राम से अधिक की श्रेणी में जीता है। प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में दुनिया भर से टॉप बॉडीबिल्डर्स ने हिस्सा लिया, जिसमें प्रदेश की मशहूर बॉडी बिल्डर ने इकलौती बिल्डर के रूप में गर्व से भारत का प्रतिनिधित्व किया।

वंदना ठाकुर की यह सफलता भारतीय बॉडीबिल्डिंग के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने अपने अद्वितीय प्रदर्शन से न सिर्फ अपने देश का नाम रोशन किया, बल्कि महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत भी बन गई हैं। इस प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता का आयोजन बॉडीबिल्डिंग एसोसिएशन ऑफ मालदीव्स (बीबीएएम) द्वारा किया गया, जो वर्ल्ड बॉडीबिल्डिंग और फिजीक स्पोर्ट्स फेडरेशन द्वारा समर्थित है। इस प्रतियोगिता में भारत की उत्कृष्ट बॉडीबिल्डर ने अपनी ताकत, बेहतरीन फिटनेस, अनुशासन और कठिन मेहनत का प्रदर्शन किया, और बड़ी ही कुशलता से 55 किलोग्राम से अधिक का वेट उठाया।

यह भारतीय बॉडीबिल्डिंग के लिए गर्व का क्षण है, जिससे इसके अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान दिलाई है। वंदना ठाकुर ने अपनी जीत के बाद कहा, ''मैं अपने देश के लिए कुछ कर पाई, यह मेरे लिए गर्व का क्षण है। देश को गर्व महसूस कराना ही मेरा लक्ष्य है। यह जीत मेरे कोच, मेरे परिवार और मेरे सभी समर्थकों की मेहनत और विश्वास का परिणाम है। इसलिए मैं उन सभी को दिल से धन्यवाद् देती हूँ, जिन्होंने इस यात्रा में मेरा साथ दिया। यह जीत सिर्फ मेरी नहीं है, बल्कि यह विजय घोष हमारे देश का है। जब मैं मंच पर खड़ी थी और कांस्य पदक ले रही थी, उस समय मैंने अपनी यात्रा के हर उस पल को महसूस किया, जिसे मैंने न सिर्फ शारीरिक, बल्कि मानसिक रूप से भी बहुत कठिनाइयों से जूझते हुए पार किया।

आज मैं खुशी से कह सकती हूँ कि मुझे मेरी मेहनत का फल मिल गया है और मेरा समर्पण एवं परिश्रम रंग लाया है। अब मुझे देश के लिए गोल्ड लाने के लिए कड़ी मेहनत करना है, यही मेरा एकमात्र लक्ष्य है।'' गौरतलब है कि इस साल की वर्ल्ड बॉडीबिल्डिंग और फिजीक स्पोर्ट्स चैंपियनशिप में दुनिया भर से कुल 30 देशों के लगभग 250 से अधिक बॉडीबिल्डर्स ने हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता का आयोजन खूबसूरत मालदीव्स के कैनारेफ रिज़ॉर्ट में किया गया था।

श्रीलंकाई गेंदबाजों ने न्यूज़ीलैंड को 108 रन के स्कोर पर किया ढेर

दांबुला, 10 नवंबर। वानिंदु हसरंगा (चार विकेट) और मतीशा पतिराना (तीन विकेट) की शानदार गेंदबाजी के दम पर श्रीलंका ने दूसरे टी-20 मुकाबले में रविवार को न्यूजीलैंड को 108 के स्कोर पर ढ़ेर कर दिया है। आज यहां श्रीलंका ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने छह रन के स्कोर पर अपने दो विकेट गवां दिये। टिम रॉबिंसन (शून्य) और मार्क चैपमैन (दो) रन बनाकर आउट हुये। इसके बाद ग्लेन फिलिप्स (चार), माइकल ब्रेसवेल (शून्य) और मिचेल हे (शून्य) को वानिंदु हसरंगा ने अपना शिकार बनाया। विल यंग ने टीम के सर्वाधिक (30) रनों की पारी खेली। मिचेल सैंटनर (19) और जॉश क्लार्कसन (24), जैकरी फॉक्स(6) रन बनाकर आउट हुये। इन तीनों बल्लेबाजों को मतीश पतिराणा ने आउट किया।

पारूल चौधरी प्री-क्वार्टर फाइनल में, नेहल सिसोदिया व अन्वी राठौड़ के धमाके

गर्वित और देशना मिश्रित युगल के क्वार्टर फाइनल में

जयपुर, 10 नवम्बर। राजस्थान की शीर्ष वरियता प्राप्त पारूल चौधरी ने संघर्षपूर्ण जीत दर्ज कर यहां चल रही अंडर-15 एवं अंडर-17 नेषनल रैंकिंग बैडमिंटन प्रतियोगिता के प्री-क्वार्टर फाइनल में प्रवेष कर लिया। अन्य मुकाबलों में राजस्थान की नेहल सिसोदिया ने चौथी वरियता को और अन्वी राठौड़ ने पांचवी वरियता लुढका कर प्री-क्वार्टर फाइनल में स्थान बनाया। लड़कियों के अंडर-17 मुकाबले में पारूल चौधरी ने तमिलनाडु की हरिनी राजा को 19-21, 21-17, 21-6 से पराजित किया जबकि नेहल सिसोदिया ने लड़कियों के अंडर-15 मुकाबले में गुजरात की चौथी वरियता प्राप्त सिओना गाला को 21-5, 21-18 से षिकस्त दी। इसी आयु वर्ग के अन्य मैचों में अन्वी राठौड ने तेलंगाना की अवनी रेड्डी को 21-12, 21-19 से तथा आराध्या टेलर ने महाराष्ट्र की शरवारी को 21-12, 21-18 से पराजित किया।

लड़को के अंडर-15 आयु वर्ग में राजस्थान के जयवर्धन सिंह ने दिल्ली के वियान बिष्ट को 21-12, 21-13 से षिकस्त दी। अंडर-15 आयु वर्ग के मिश्रित युगल मुकाबले में राजस्थान की गरवित बरवार और देषना की जोड़ी ने आन्ध्रप्रदेष की वी. धोन्ती एवं वेंकेटेष यंगना श्रीधोन्ती की आठवीं वरियता प्राप्त जोड़ी पर 21-12, 21-10 से जीत दर्ज कर क्वार्टर फाइनल में प्रवेष कर लिया।

अंडर-17 लड़को के एकल में उत्तरखण्ड के पांचवी वरियता प्राप्त निष्चल चंद ने तमिलनाडु के तरंग राज को 21-13, 21-11 से तथा इसी आयु वर्ग की लड़कियों के एकल में तीसरी वरियता प्राप्त कनार्टक की लक्ष्या राजेष तेलंगाना की सुर्यानी पर 21-17, 19-21, 21-16 से संघर्षपूर्ण जीत दर्ज की। सोमवार की सुबह सभी आयु वर्गों के क्वार्टर फाइनल व तथा शाम को सेमीफाइनल मुकाबले खेले जाएंगे।

अनाहत सिंह ने जीता एनएसडब्ल्यू ओपन महिला एकल स्क्वैश खिताब

सिडनी, 10 नवंबर। भारत की अनाहत सिंह ने रविवार को एनएसडब्ल्यू ओपन 2024 स्क्वैश टूर्नामेंट में महिला एकल स्पर्धा जीतकर वर्ष का अपना सातवां पीएसए चैलेंजर खिताब अपने नाम किया। ऑस्ट्रेलिया के सिडनी में खेले गये टूर्नामेंट में दूसरी वरीयता प्राप्त भारतीय स्क्वैश खिलाड़ी अनाहत ने फाइनल में हांगकांग चीन की गैर-वरीयता प्राप्त 15 वर्षीय हेलेन टैंग को 3-1 (8-11, 11-6, 11-3, 11-4) से हराया। इससे पहले सेमीफाइनल में अनाहत ने हांगकांग चीन की आठवीं वरीयता प्राप्त वोंग पो यूई क्रिस्टी को 3-1 (11-7, 8-11, 11-9, 11-8) से हराया था। भारतीय खिलाड़ी ने क्वार्टफाइनल में जापान की सातवीं वरीयता प्राप्त अकारी मिडोरिकावा को 3-1 (9-11, 11-4, 11-7, 11-7) से शिकस्त दी थी। अनाहत सिंह को स्क्वैश टूर्नामेंट में उनकी उच्च वरीयता के कारण पहले राउंड में बाई मिली थी और दूसरे राउंड में उन्होंने जापान की वाइल्डकार्ड खिलाड़ी कुरुमी ताकाहाशी को शिकस्त दी थी।

भारत के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम घोषित

नाथन मैकस्वीनी और जोश इंग्लिस को मौका, स्कॉट बोलैंड बैकअप तेज गेंदबाज

नई दिल्ली, 10 नवम्बर। भारत के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम का ऐलान हो गया है। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने शनिवार देर रात 13 मेंबर्स की टीम जारी की। 22 नवंबर से पर्थ में शुरू होने जा रहे इस मुकाबले के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम में नाथन मैकस्वीनी, जोश इंग्लिश और स्कॉट बोलैंड को चुना गया है।

मैकस्वीनी उस्मान ख्वाजा के साथ पारी की शुरुआत कर सकते हैं, जबकि बोलैंड को बैकअप तेज गेंदबाज के तौर पर शामिल किया गया है। जोश इंग्लिश का नाम थोड़ा हैरान करने वाला है। हाल ही में सिलेक्टर्स ने उन्हें वनडे और टी-20 का कप्तान बनाया था। पहले टेस्ट मुकाबले में कप्तान पैट कमिंस, मिचेल स्टार्क और जोश हेजलवुड तेज गेंदबाजी आक्रमण की कमान संभालेंगे।

चीफ सिलेक्टर जॉर्ज बेली ने कहा कि टीम संतुलित है और एंड्रयू तथा पैट को एक विकल्प प्रदान करती है। टीम इंडिया 3 साल बाद ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज खेलने जा रही है। 22 नवंबर से पर्थ में पहला मैच और 6 दिसंबर से एडिलेड में दूसरा मैच खेला जाएगा। टीम इंडिया ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 2014 के बाद से कोई भी टेस्ट सीरीज नहीं हारी है। टीम ने इस दौरान विराट कोहली की कप्तानी में 2 सीरीज जीतीं।

राजस्थान-मेघालय अंडर-23 सीके नायडू ट्रॉफी मैच

मैच में राजस्थान के सुमित गोदारा, मोहित चांगरा, रौनक गौर, अशोक शर्मा, दीपेन्द्र सिंह चमके

जयपुर, 10 नवम्बर। राजस्थान क्रिकेट संघ की मेजबानी में जयपुर में के एल सैनी स्टेडियम में खेले जा रहे राजस्थान-मेघालय मैच को आज तीसरे दिन ही राजस्थान ने अपने गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन की सहायता से पारीव 29 रनो से हारते हुए मैच में बड़ी व शानदार जीत दर्ज की।

राजस्थान के गेंदबाज मोहित चांगरा 37/5, अशोक शर्मा 11/2, राहुल गर्ग 4/1, चेतन शर्मा 19/1 विकेट प्राप्त करते हुए राजस्थान को पहली पारी में 209 रनो की बड़ी बढ़त दिलाई व मेघालय को फॉलोऑन खेलने पर मजबूर किया। आज मैच के तीसरे दिन राजस्थान के तेज गेदबाजोव स्पिनर ने मेघालय पर लगातार दबाव बनाये रखा व नियमित अंतराल में विकेट प्राप्त करते हुए मेघालयको दूसरी पारी में मात्र 180 रनो के स्कोर पर आल आउट करते हुए राजस्थान को मैच में पारी व 29 रनो से विशाल जीत दिलाई। जहाँ स्पिनर रौनक गौर वमोहित चांगराने मेघालय को शुरूआती झटके दिए साथ ही अशोक शर्मा व दीपेंद्र सिंह ने दिन के अंतिम सत्र में शानदार गेंदबाजी करते हुए मेघालय की पूरी टीम को पवेलियन लौटा दिया।

कोको गॉफ ने जीता डब्ल्यूटीए फाइनल्स एकल का खिताब

रियाद, 10 नवंबर। विश्व की नंबर तीन अमेरिकी टेनिस खिलाड़ी कोको गॉफ ने चीन की झेंग किनवेन को महिला एकल स्पर्धा में हराकर डब्ल्यूटीए फाइनल्स का खिताब जीता। शनिवार को सऊदी अरब के रियाद में खेले गये मुकाबले में कोको गॉफ ने ओलंपिक चैंपियन झेंग किनवेन को 3-6, 6-4, 7-6 से हराकर अपना पहला डब्ल्यूटीए फाइनल्स खिताब अपने नाम किया।

अंडर-15 महिला वनडे ट्रॉफी के लिए राजस्थान महिला टीम घोषित

जयपुर, 10 नवम्बर। दीक्षा चौधरी, गौरवी खंगारोत, रोशेल यादव, अनन्या अठावाल, पलक विश्नोई, सरिता कसाना, धृति माथुर, माहिरा खान, कनिष्का चौधरी, सरतिया सहारन, अनुष्का सोलंकी, भूमिका जांगिड़, अंशिका भंडारी, काव्या बिश्नोई, सायशा आहूजा, कविता भील, दानिया ग्रोवर, शोनाया सोनी, ईशा गजराज, प्रीति कसामा। अंडर-15 महिला नेशनल चैंपियनशिप के मैच होंगे। 21 तारीख से पुणे में खेला जाएगा। राज्य स्तरीय 14 क्रिकेट प्रतियोगिता आगामी 19 नवंबर से जयपुर में खेले जाएंगे व दूसरे जोन के सभी मैच 21 नवंबर से खेले जाएंगे।

कांग्रेस के महासचिव एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पायलट ने दौसा विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी दीनदयाल बैरवा के समर्थन में आयोजित जनसभा में पेपर लीक और पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना के मुद्दे पर भाजपा सरकार पर जमकर हमला बोला।

महाविकास अघाड़ी ने चुनाव घोषणा पत्र जारी किया

घोषणा पत्र जारी करते हुए खड़गे ने परिवारों, किसानों व महिलाओं के लिये 5 गारंटी का वचन दिया

मुंबई, 10 नवंबर। महा विकास अघाड़ी ने रविवार को महाराष्ट्र चुनाव के लिए अपना घोषणा पत्र जारी किया। महा विकास अघाड़ी ने इसे "महाराष्ट्रनामा" नाम दिया है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि महाराष्ट्र के विकास के लिए हमारे 5 स्तंभ हैं। महाराष्ट्र का विकास और प्रगति, खेती, ग्रामीण विकास, उद्योग और रोजगार, शहरी विकास, पर्यावरण और जन कल्याण पर आधारित होगा।

खड़गे ने कहा, हम 5 गारंटी दे रहे हैं और यह पूरे महाराष्ट्र के कल्याण के लिए होंगी। हम हर परिवार को सालाना 3 लाख रुपए की मदद करेंगे। महालक्ष्मी स्कीम महिलाओं को 3 हजार रुपए महीना देगी।

महिलाओं के लिए बस सर्विस फ्री

■ खड़गे ने कहा, राहुल गांधी ने संविधान की जैसी लाल किताब दिखाई थी, वैसी ही नरेन्द्र मोदी ने तत्कालीन राष्ट्रपति को 2017 में दी थी।

रहेगी। हम उन किसानों को 50 हजार रुपए देंगे, जिन्होंने अपना कर्ज़ वक्त पर चुकाया है।

चुनाव घोषणा पत्र जारी करने के बाद खड़गे ने मीडिया के सवालों के जवाब में कहा कि राहुल गांधी समेत तमाम कांग्रेस नेताओं ने लाल किताब का इस्तेमाल केवल संदर्भ के लिए किया है। यह संपूर्ण संविधान नहीं है। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, मोदी ने 26 जुलाई, 2017 को तत्कालीन राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद को भी ऐसी ही एक प्रति दी थी। उन्होंने दोनों नेताओं की तस्वीर दिखाई।

खड़गे ने लाल किताब दिखाते हुए कहा कि जैसा मोदी और भाजपा बता रही है, यह कोरी नहीं है। पीएम मोदी को फिर से प्राइमरी स्कूल में दाखिला दिलाना जरूरी है। पीएम खुद ही लाल रंग का संविधान राष्ट्रपति को देते हैं और हमें अर्बन-नक्सल बोलते हैं।

कांग्रेस अध्यक्ष ने एक बार फिर महाराष्ट्र की मौजूदा महायुति सरकार पर निशाना साधा। खड़गे बोले- डबल इंजन सरकार पटरी से उतर गई है। महाराष्ट्र के लिए यह जरूरी है कि वह महायुति सरकार को हराए और सुशासन के लिए महा विकास अघाड़ी को सपोर्ट करें।

कैनडा में खालिस्तानी आतंकी हिरासत में

ओटावा, 10 नवंबर। कैनडा में खालिस्तानी आतंकी अर्शदीप डल्ला को हिरासत में लिया गया है। सुरक्षा एजेंसियों के सूत्रों के अनुसार, 27 - 28 अक्टूबर को कैनडा में एक शूटआउट को लेकर अर्शदीप डल्ला को हिरासत में लिया गया है। जनवरी

■ आतंकी अर्शदीप डल्ला को 27-28 अक्टूबर के शूट आउट के मामले में गिरफ्तार किया गया।

2023 में गृह मंत्रालय ने अर्शदीप डल्ला को आतंकवादी की सूची में डाला था।

भारत की सुरक्षा एजेंसियों को भी यह जानकारी मिली थी की 27-28 अक्टूबर को कैनडा में एक शूटआउट हुआ था, जिसमें अर्शदीप डल्ला भी मौजूद था। अर्शदीप डल्ला को अर्श के नाम से भी जाना जाता है।

सरकार ई.आर.सी.पी. का एम.ओ.यू. अखबार में क्यों नहीं छपवाती- पायलट

चुनाव सभा में सचिन पायलट ने कहा, कांग्रेस दौसा की सीट राज्य में सर्वाधिक वोटों से जीतेगी

दौसा, 10 नवम्बर। कांग्रेस के महासचिव एवं विधायक सचिन पायलट ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के बयान पर पलटवार करते हुये कहा कि ई.आर.सी.पी. का एम.ओ.यू. होने की बात सरकार करती है, लेकिन एम.ओ.यू. को किसी अखबार में क्यों नहीं छपवा रही। सरकार को खुला चेलेंज है एम.ओ.यू. छपवा कर दिखाएं।

कांग्रेस महासचिव एवं विधायक सचिन पायलट रविवार को कांग्रेस प्रत्याशी डी.डी. बैरवा के समर्थन में आयोजित जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होने कहा कि भाजपा सरकार ने 11 महीने के कार्यकाल के दौरान एक भी काम जनहित का नहीं किया। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार के कार्यकाल में अफसर शाही हावी हो गई है। ब्लैकमेल करने वाले लोगों की चल रही है। सरकार

■ पायलट ने कहा, भाजपा सरकार में अफसरशाही हावी हो गयी है। सरकार कुछ, तो अफसर कुछ बोल रहे हैं।

कुछ तो अफसर कुछ बोल रहे हैं। पूरे देश में भाजपा के खिलाफ माहौल है। कांग्रेस मुद्दों को लेकर चुनाव लड़ रही है। उन्होने कहा कि लोकसभा चुनाव में 400 पार का नारा संविधान में बदलाव करने के लिए ही दिया गया था। अब 400 सीट नहीं आने पर सफाई दे रहे हैं कि वह संविधान में बदलाव नहीं कर रहे। जबकि 400 सीट आ जाती तो ये संविधान को जरूर बदलते, मनमर्जी करते।

पायलट ने कहा, मुख्यमंत्री बड़ी मछली, मगरमच्छ पकड़ने की बात करते हैं, लेकिन यह तो बताएं कि कौन सा मगरमच्छ पकड़ा। उन्होने कहा कि यह चुनाव दो पार्टी लड़ रही हैं, विचारधारा का चुनाव है। दौसा में मुख्यमंत्री, बड़े मंत्री आ रहे हैं, बडी घोषणाएं कर रहे हैं। ग्यारह माह से उन्हें कौन रोक रहा था विकास के लिए, यह अभी याद आया है। कांग्रेस ने गरीब को टिकट दिया है। सरकार ने पूरे घोड़े खोले रखे हैं। पैसे के दम पर जीतना चाहते हैं। पायलट ने कहा कि कांग्रेस प्रत्याशी का एक रुपया तो भाजपा के हजार रुपए खर्च होंगे। उप चुनाव जीतने के लिए सत्ता का दबाव डालने वालों को कड़ा जवाब देना है। उनके पैसे खूब खर्च कराओ लेकिन डी.सी. बैरवा को वोट देकर चार साल बाद का राज एडवांस बुक करा दो।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस राजस्थान में सर्वाधिक वोटों से दौसा की सीट जीतेगी। सबसे बडा अंतर दौसा में रहेगा। उनसे अपने काम और ट्रांसफर आदि करा लो, लेकिन वोट सजग रहकर, मन कहे उसे ही देना। उन्होने कहा कि समाज, जाति, धर्म की बात छोड़कर वोट उसे देना है, जिस पार्टी के नेताओं ने दौसा को पहचान दिलाई है, दौसा का सम्मान बढ़ाया है। आपके पास संसाधन नहीं उसकी चिंता नहीं, जनता साथ है तो जीत निश्चित है।

जनसभा को सांसद मुरारी लाल मीणा, पूर्व मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास, पूर्व मंत्री ममता भूपेश, पूर्व विधायक ओमप्रकाश हुडला, पूर्व महेंद्र मीणा, कांग्रेस के जिला अध्यक्ष रामजीलाल ओड, बस्सी विधायक लक्ष्मण मीणा सहित अनेक नेताओ ने संबोधित किया।

कश्मीर में बारिश व बर्फबारी होगी

श्रीनगर, 10 नवंबर। कश्मीर घाटी के ऊंचे इलाकों में अगले 24 घंटों के दौरान बारिश और बर्फबारी होने के आसार हैं।

अधिकारियों ने कहा कि मौसम विज्ञान केंद्र श्रीनगर ने रविवार को अगले 24 घंटों के दौरान कश्मीर घाटी के ऊंचे इलाकों में हल्की बारिश और बर्फबारी का अनुमान जताया है।

मौसम कार्यालय ने कहा कि

■ मौसम विभाग ने अगले 24 घंटों में कश्मीर घाटी के ऊंचाई वाले इलाकों में हल्की बारिश व बर्फ गिरने का अनुमान बताया है।

रविवार को आमतौर पर बादल छाए रहेंगे और अगले 24 घंटों के दौरान ऊंचाई वाले इलाकों और उत्तर में तथा मध्य कश्मीर के कुछ स्थानों पर हल्की बारिश और बर्फबारी का अनुमान है।

मौसम विभाग द्वारा जारी रिपोर्ट के अनुसार 12 से 14 नवंबर तक मौसम आमतौर पर शुष्क रहेगा। कश्मीर घाटी के ऊंचे इलाकों और छिटपुट स्थानों पर 15 से 16 नवंबर तक हल्की बारिश होने का अनुमान है।

अमित शाह ने महाराष्ट्र में भाजपा का संकल्प पत्र जारी किया

इसमें कर्ज माफी, महिलाओं को पैसे, 25 लाख को रोजगार के वादे किये गये

मुंबई, 10 नवंबर। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव से पहले रविवार को भाजपा का संकल्प पत्र जारी किया। इस दौरान महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष चंद्रशेखर बावनकुले, मुंबई भाजपा अध्यक्ष आशीष शेलार और केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल समेत पार्टी के अन्य नेता मौजूद थे। भाजपा एकनाथ शिंदे की अगुआई वाली शिवसेना और अजीत पवार की अगुआई वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) के साथ मिलकर महायुति गठबंधन के रूप में चुनाव लड़ रही है।

घोषणा पत्र जारी करते हुए शाह ने कहा, "महायुति सरकार ने किसानों के सम्मान, गरीबों की मदद और महिलाओं के आत्मसम्मान को बनाए रखने के लिए काम किया है। आज यहां जारी किया गया संकल्प पत्र महाराष्ट्र के लोगों की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब है।" उन्होंने

■ इस अवसर पर अमित शाह के साथ फड़नवीस, प्रदेश अध्यक्ष बावनकुले, मुम्बई भाजपा अध्यक्ष शेलार तथा केन्द्रीय मंत्री पीयूष गोयल मौजूद थे।

कहा, "एक तरह से महाराष्ट्र कई युगों से हर क्षेत्र में देश का नेतृत्व करता आ रहा है। एक समय जब जरूरत पड़ी तो भक्ति आंदोलन भी महाराष्ट्र से शुरू हुआ, गुलामी से मुक्ति का आंदोलन भी शिवाजी महाराज ने यहीं से शुरू किया, सामाजिक क्रांति भी यहीं से शुरू हुई और महाराष्ट्र के लोगों की आकांक्षाओं की झलक हमारे संकल्प पत्र में दिखती है।"

महाराष्ट्र चुनाव को लेकर भाजपा के संकल्प पत्र में, किसानों के कर्ज माफी का वादा, महिलाओं को हर महीने 2,100 रुपए देने का वादा, वृद्धा पेंशन योजना के अंतर्गत 1,500 के बजाय 2,100 रुपए देने का वादा, महाराष्ट्र में 25 लाख लोगों को रोजगार देने का वादा किया गया है। इसके अलावा पार्टी ने 2028 तक महाराष्ट्र की अर्थव्यवस्था को एक ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा है।

गृह मंत्री ने 2027 तक भारत को तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने के भाजपा के वादे को भी दोहराया। शाह ने कहा, "भारत पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की स्थिति में पहुंच गया है और मैं वादा करता हूं कि 2027 तक हम तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहे हैं, हम तेज गति से आगे बढ़ रहे हैं, 7 करोड़ शौचालय, घर, बिजली, पीने का पानी, अनाज, मुफ्त स्वास्थ्य सेवा, यह सब हमने लोगों को देने के लिए किया है।"

प्रसिद्ध पोलो ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सिंह मस्टी शेखों, नवतेज सिंह, गोविन्द सिंह, के.वी.एस. जमवाल, भीम सुहाग, भवानी सिंह, किशन सिंह चौहान ब्रिगेडियर गोविन्द सिंह, कर्नल नरेन्द्र सिंह आदि अपना कौशल दिखाया करते थे। बिली सोढी की, घुड़सवारी के कारण ही जनरल पी.पी. कुमारमंगलम की बेटी रोशन से मित्रता हुई।

रोशन को घुड़सवारी का शौक जब लगा तो बिली ने ही उन्हें घुड़सवारी की बारीकियाँ सिखाईं और दोनों के बीच प्रेम विवाह हुआ। दोनों की बेटियाँ रूखसाना और अनीषा भी उनकी ही तरह घुड़सवार थीं और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर घुड़सवारी करती थीं।

बिली ने 61वीं कैवेलरी में जवानों को घुड़सवारी के लिए प्रेरित किया और दफेदार खान मोहम्मद खां और दफेदार रघुवीर सिंह दोनों ही ने भारत का प्रतिनिधित्व किया और अर्जुन पुरस्कार से नवाजे गए।

61वीं कैवेलरी को जब बन्द कर इसे टैक रेजिमेन्ट में परिवर्तित करने की बात आई, तो बिली ने इसका जमकर विरोध किया और कोविड के प्रकोप के दौरान तत्कालीन चीफ ऑफ डिफैन्स स्टाफ (सी.डी.एस.) जनरल विपिन रावत से मिलकर कैवेलरी के टैक रेजिमेन्ट के रूप में परिवर्तन को रूकवाया।

लोकसभा अध्यक्ष पर आश्वासन पूरा नहीं करने का आरोप

नई दिल्ली, 10 नवंबर। वक्फ संशोधन विधेयक को लेकर काम रही संसदीय समिति में शामिल विपक्षी सांसदों ने दावा किया कि लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने मुलाकात के बाद उन्हें जो आश्वासन दिया था, उसे पूरा नहीं किया। विपक्षी सांसदों ने समिति अध्यक्ष जगदंबिका पाल पर आरोप लगाया कि वह बैठकों का कोरम पूरा नहीं होने के बावजूद भी राज्यों का दौरा कर रहे हैं।

समिति में शामिल विपक्षी सांसदों ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद पाल सरकार के इशारे पर काम कर रहे हैं। सांसदों ने कहा कि उन्होंने पांच नवंबर को लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के साथ बैठक की थी। उन्हें उम्मीद थी कि इसके बाद संसदीय समिति के पांच राज्यों के दौरे को टाला जा सकता है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

■ वक्फ संशोधन की संसदीय समिति के विपक्षी सदस्यों न कहा कि समिति अध्यक्ष सरकार के इशारे पर काम कर रहे हैं

सांसदों ने कहा कि गुवाहाटी में समिति की बैठक में केवल पांच सदस्यों ने हिस्सा लिया था, जो कि कोरम से भी बहुत कम है। विपक्षी सांसदों ने कहा कि उनसे मुलाकात के बाद लगा था कि समिति की बैठकें अब हफ्ते में एक दिन या पखवाड़े में लगातार दो दिन होंगी। ताकि उन्हें बैठकों में दिए जाने वाले सुझावों को तैयार करने और उन पर विचार करने का मौका मिल सके। मगर ऐसा कुछ नहीं हुआ।

संसदीय समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल ने आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि संसदीय समितियों के दौरे अनौपचारिक हैं। इनमें कोरम पर अमल जैसी औपचारिकताओं को पूरा करने की बाध्यता नहीं होती। उन्होंने कहा कि वह 25 नवंबर से शुरू हो रहे संसद के शीतकालीन सत्र के पहले हफ्ते के आखिरी दिन तक समिति की रिपोर्ट सौंपने को लेकर आश्वस्त हैं। उन्होंने 200-250 पन्नों की रिपोर्ट पहले ही तैयार कर ली है।

भजनलाल ने दौसा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में शरण लेते थे, लेकिन भाजपा सरकार ने एंटी गैंगस्टर फोर्स का गठन किया और अपराधियों पर लगाम लगाई। आज राजस्थान में कांग्रेस शासित राज्यों की तुलना में अपराध का ग्राफ बहुत कम है। राजस्थान में कांग्रेस सरकार के राज में अपराध का जो ग्राफ 70-80 प्रतिशत था, उसे भाजपा सरकार ने 11 माह में 26 प्रतिशत पर ला दिया। राजस्थान में अब कानून का राज चल रहा है। राजस्थान में अब रोगजार की दिशा में भाजपा सरकार राइज़िंग राजस्थान के तहत देश-दुनिया में जाकर एम.ओ.यू. कर रही है। रामगढ़ और दौसा क्षेत्र से गुजर रहे दिल्ली-मुंबई कॉरिडोर से इन क्षेत्रों में उद्योग स्थापित होंगे और बड़ी संख्या में रोजगार बढ़ेंगे।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि प्रदेश की सभी सातों विधानसभा सीटों पर जनता के उत्साह और अपार स्नेह को देखने से यह स्पष्ट हो गया है कि सभी सीटों पर भाजपा प्रत्याशी भारी बहुमत के साथ विजयश्री को प्राप्त कर रहे हैं। राठौड़ ने रामगढ़ की जनता से कहा कि मतदाताओं को किसी पार्टी की छाप या ठप्पा नहीं लगने देना चाहिए। अगर किसी भी वर्ग या समुदाय के मतदाता पर राजनीतिक पार्टी की छाप लग जाती है तो वो पार्टी उस समुदाय की चिंता नहीं करेगी, और दूसरी राजनीतिक पार्टी भी आपकी छाप की वजह से चिंता नहीं करेगी।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि कांग्रेस ने हमेशा भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया है। इनके नेताओं ने जनता के पैसे से घोटाले और भ्रष्टाचार किए। मुख्यमंत्री शर्मा जनसेवक बनकर जनता के लिए विकास की योजनाएं तैयार कर रहे है। राइजिंग राजस्थान से प्रदेश के हर जिले में उद्योग स्थापित किए जाएंगे और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

उपचुनाव : भाजपा फायदे में रहेगी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अंतिम दौर में दम लगाया है और अब देखना है कि, 2023 विधानसभा चुनाव में जो वोट कांग्रेस के हिस्से में आए थे,क्या कांग्रेस की रतन चौधरी उनसे ज्यादा वोट ले पाएंगी।

रामगढ़ में कांग्रेस के आर्यन ज़ुबेर खान और भाजपा के सुखवंत सिंह के बीच में सीधा मुकाबला है, लेकिन मेव मतदाताओं के साथ जाटव मतदाताओं के आने से कड़े मुकाबले में कांग्रेस थोड़ी आगे नजर आ रही है। भरतपुर की सांसद संजना जाटव की मेहनत कांग्रेस के लिए फायदे का सौदा हो सकती है।

भंवर जितेंद्र सिंह और टीकाराम जूली ने भी यहीं डेरा डालकर चुनाव को प्रतिष्ठा का सवाल बना लिया है।

आदिवासी बाहुल्य सलूंबर और चौरासी विधानसभा सीटों पर कांग्रेस के लिए बहुत ज्यादा उम्मीद नहीं है, लेकिन चुनाव प्रबंधन देख रहे अशोक चांदना ने सलूंबर में प्रचार समाप्त होने से पहले रघुवीर मीणा को मना कर कांग्रेस के लिए राहत प्राप्त की है। हालांकि, यह राहत चुनाव परिणामों को प्रभावित करेगी, इसकी संभावना ज्यादा नहीं है, क्योंकि बाप जितना वोट तोड़ेगी, वह कांग्रेस के लिए नुकसान का सौदा होगा।

बाप की परंपरागत और मजबूत चौरासी विधानसभा सीट पर बाप अभी भी मजबूत है,जबकि उसका एक बागी भी वहां है, लेकिन फिर भी मुख्य मुकाबले में बाप और भाजपा है और कांग्रेस के युवा चेहरे महेश रोत इस प्रयास में है कि वह सम्मानजनक स्थिति में रहे। कुल मिलाकर इन सात विधानसभा सीटों के उपचुनाव में भाजपा के पास खोने के लिए कुछ ज्यादा नहीं है, लेकिन भाजपा फायदे में रहने वाली है और एक से तीन पर पहुंच सकती है। वहीं, कांग्रेस चार से घटकर एक या दो पर ठहर सकती है।

दिल्ली के पूर्व मंत्री बल्ली भाजपा में शामिल

नई दिल्ली, 10 नवंबर। दिल्ली विधानसभा चुनाव में अब जबकि कुछ महीने ही बाकी रह गए हैं, सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी को बड़ा झटका लगा है। पार्टी के सीनियर नेता और दिल्ली के पूर्व मंत्री सरदार हरशरण सिंह बल्ली अपने बेटे, सरदार गुरमीत सिंह रिंकू बल्ली के साथ आज भाजपा में शामिल हो गए। बल्ली और उनके बेटे द्वारा भाजपा की

■ सरदार हरशरण सिंह बल्ली हरिनगर सीट से चार बार विधायक रहे हैं। वे 2020 में आम आदमी पार्टी में शामिल हुए थे। उनके पुत्र भी भाजपा में शामिल हुए हैं।

सदस्यता ग्रहण करते समय दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा, बल्ली के पुराने सहयोगी सुभाष आर्य और सुभाष सचदेवा भी मौजूद थे। ज्ञातव्य है कि सरदार हरशरण सिंह बल्ली दिल्ली की हरि नगर सीट से चार बार विधायक रह चुके हैं। वे पहली बार 1993 में विधायक बने, उसके बाद 2013 में आखिरी बार विधायक निर्वाचित हुए थे। बल्ली मदनलाल खुराना की सरकार में मंत्री भी रहे थे। उन्होंने इंडस्ट्री, श्रम, जेल, भाषा और गुरुद्वारा प्रशासन सहित कई विभागों की जिम्मेदारी संभाली। 2013 के विधानसभा चुनाव में हरशरण सिंह बल्ली को भाजपा का टिकट नहीं मिला तो नाराज होकर उन्होंने कांग्रेस को जॉइन कर लिया था और कांग्रेस की टिकट पर विधानसभा चुनाव लड़ा, लेकिन आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार से उन्हें हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद फिर से वो वापस भाजपा में शामिल हो गए। लेकिन 2020 में उन्होंने आम आदमी पार्टी का दामन थाम लिया था। आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने उन्हें पार्टी में शामिल कराया था।

रुस के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के वर्तमान क्षेत्रों पर विषयगत सत्र शामिल होंगे। इसका आयोजन बिजनेस काउन्सिल फॉर कोऑपरेशन विद इंडिया और फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) द्वारा किया जाता है।

रूसी राजदूतावास के अनुसार 12 नवंबर को नयी दिल्ली में मंतुरोव विदेश मंत्री डॉ. सुब्रमण्यम जयशंकर के साथ व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग पर रूसी-भारतीय अंतर सरकारी आयोग के 25वें सत्र की संयुक्त रूप से अध्यक्षता करेंगे। रूस के प्रथम उप प्रधानमंत्री की कई द्विपक्षीय बैठकों की भी योजना है।

सिद्दीकी हत्याकांड का शूटर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

प्रकाश त्रिपाठी, आकाश श्रीवास्तव व अखिलेशेंद्र प्रताप सिंह को भी गिरफ्तार किया गया है।

बाबा सिद्धकी हत्या मामले में अब तक 19 लोगो को गिरफ्तार किया गया है। इस मामले के तीनों मुख्य शूटर, धर्मराज, गुरमेल और शिव कुमार गौतम को क्राइम ब्रांच ने गिरफ्तार कर लिया है।

शिव कुमार ने पूछताछ में खुलासा किया कि वह लॉरेंस गैंग के लिए स्क्रैप डीलर शुभम लोनकर के जरिए काम करता था। हत्या के लिए उसे 10 लाख रुपए देने का वादा किया गया था। हत्या के बाद शिव कुमार मुंबई से फरार होकर झांसी, लखनऊ होते हुए बहराइच पहुंचा और नेपाल भागने की प्लानिंग बना रहा था।

शिव कुमार ने पूछताछ में बताया, "मैं और धर्मराज कश्यप एक ही गांव के रहने वाले हैं। पूना में स्क्रैप का काम करता था। मेरी और शुभम लोनकर की दुकान अगल-बगल थी। शुभम लोनकर लॉरेंस विश्नोई के लिए काम करता है। उसने मेरी बात स्नैप चैट के जरिए लॉरेंस के भाई अनमोल विश्नोई से कई बार कराई है। अनमोल ने बाबा सिद्दीकी की हत्या के बदले मुझसे कहा था कि 10 लाख रुपए मिलेंगे।

पूर्व महाराणा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बजे से दोपहर 11 बजे तक उनके पार्थिव शरीर को समोर बाग पैलेस में अंतिम दर्शन के लिए रखा जाएगा। महाराणा मेवाड़ के पुत्र विश्वराज सिंह मेवाड़ नाथद्वारा से विधायक है वहीं पुत्रवधु महिमा कुमारी मेवाड़ राजसमंद सीट से सांसद हैं। महाराणा महेन्द्र सिंह स्वयं भी चित्तौड़गढ़ लोकसभा सीट से सांसद रह चुके हैं।

महाराणा महेन्द्र सिंह मेवाड़ के निधन का समाचार सुनकर राजपरिवार से जुड़े लोग, राजनीतिज्ञ व जनप्रतिनिधि उनके समोर बाग स्थित आवास पर शोक जताने के लिए पहुंच रहे हैं।

उदयपुर शहर विधायक ताराचंद जैन ने मेवाड़ राजघराने के पूर्व सदस्य और पूर्व सांसद महाराणा महेंद्र सिंह मेवाड़ के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

छत्तीसगढ़ में धान खरीद नहीं हुई तो कांग्रेस आंदोलन करेगी

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा, 13000 कर्मचारी हड़ताल पर हैं तो धान खरीद कैसे होगी

रायपुर, 10 नवंबर। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने कहा कि यदि राज्य में धान खरीदी नहीं हुई और किसानों से अन्याय हुआ तो कांग्रेस किसानों के समर्थन में समुचित आंदोलन करेगी। बघेल ने यहां कांग्रेस भवन में पत्रकारों से चर्चा करते हुये कहा कि छत्तीसगढ़ में तीन दिन बाद, यानी 14 नवंबर से धान ख़रीदी शुरु होनी है। लेकिन धान ख़रीदी करने वाली 2,058 समितियों के लगभग 13000 कर्मचारी चार नवंबर से ही हड़ताल पर हैं।

उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सहकारी समिति कर्मचारी संघ ने तीन सूत्री मांगें रखी हैं। पहला यह कि मध्यप्रदेश सरकार की तर्ज पर छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा भी प्रत्येक समिति को तीन-तीन लाख का अनुदान दिया जाए, दूसरा पुनरीक्षित वेतनमान और तीसरा यह कि सुखत का प्रावधान करते हुए प्रति क्विंटल 500 ग्राम की क्षतिपूर्ति का प्रावधान किया जाए, तथा प्रधानमंत्री फसल बीमा के कमीशन की राशि समितियों को दी जाए। इन तीन मांगों में से दो मांगें वही हैं जो कर्मचारी संघ ने 2021 में उठाई थीं। उस समय हमारी सरकार थी और मैं मुख्यमंत्री था। वर्तमान मुख्यमंत्री विष्णु देव साय, तब भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष

■ भूपेश बघेल ने कहा, कर्मचारी संघ की तीन मांगों में से दो 2021 में उठी थीं। वर्तमान मुख्यमंत्री तब भाजपा अध्यक्ष थे और उन्होंने इन मांगों के समर्थन का पत्र लिखा था।

थे। उस समय साय ने मुझे संबोधित करते हुए एक पत्र लिखा था जिसमें उन्होंने कर्मचारियों की मांगों का समर्थन किया था।

बघेल ने कहा कि धान उपार्जन की हमारी सरकार की नीति को भाजपा सरकार ने बदल दिया है।

नई नीति के अनुसार 72 घंटे में बफ़र स्टॉक के उठाव की नीति को बदल दिया है। पहले इस प्रावधान के होने से समितियों के पास ये अधिकार होता था कि वे समय सीमा में उठाव न होने पर चुनौती दे सकें। अब जो बदलाव हुआ है उसके बाद बफ़र स्टॉक के उठाव की कोई सीमा ही नहीं है। पहले मार्कफ़ेड द्वारा समस्त धान का निपटान 28 फ़रवरी तक कर देने की बाध्यता रखी गई थी। अब इसे बढ़ाकर 31 मार्च कर दिया गया है।

धान खरीदी बंद होगी 31 जनवरी को। यानी समितियों/संग्रहण केंद्रों में धान अब दो महीने तक रखा रह रहेगा।

उन्होंने कहा, धान मिलिंग के लिए हमारी सरकार ने प्रति क्विंटल 120 रुपए देने का निर्णय लिया था जिसका परिणाम यह हुआ था कि प्रदेश भर में 700 नई राइस मिलें खुली थीं। अब सरकार ने मिलर के लिए 120 रुपए को घटाकर 60 रुपए कर दिया है। हमारी सरकार में उपार्जित धान को मिलर सीधे खरीदी केंद्र से उठाते थे, नई नीति में ऐसा होना संभव नहीं दिखता।

कुकी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मारे गए हैं, घर और व्यवसाय जल गए हैं और कई लोग बेघर हो गए हैं।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908